वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा

एम.जे.एम.सी. 2
फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन
(Feature Writing & Magazine Editing)

फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन-3

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन 3

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

एम. जे. एम. सी. - 2

फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

पत्रकारिता की बहुआयामिता - 3

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

- **डॉ. राधावल्लभ व्यास**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय
  कोटा
  (अध्यक्ष समिति)
- **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व-अध्यक्ष
  पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी
- **डॉ. ए. डबल्यू. खान**
  कुलपति
  इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  नई दिल्ली
- **प्रो. जे.एस. यादव**
  निदेशक
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली
- **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व-महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)
- **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिंदुस्तान
  जयपुर
- **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  महानिदेशक, महानिदेशालय आकाशवाणी
  नई दिल्ली
- **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ
सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष
सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो.(डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो.(डॉ.)एम.के. घड़ोलिया**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक(अकादमिक)	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन - अप्रैल 2012

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। कुलसचिव व.म.खु.वि. कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित ।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

एम. जे. एम. सी. -2

फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन

पाठ्यक्रम - द्वितीय	
खण्ड (3)	

3

इकाई 12	
पत्रकारिता के विविध आयाम	9–20
इकाई 13	
सामाजिक पत्रकारिता	21–29
इकाई 14	
फिल्म पत्रकारिता	30–38
इकाई 15	
बाल पत्रकारिता	39–60
इकाई 16	
विशेष विषय-पत्रिकाएँ	61–76

पाठ लेखक

1. डॉ.विजय कुलश्रेष्ठ
सहआचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

2. डॉ. कैलाश पपने
विशेष संवाददाता
दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

3. श्याम माथुर
उप संपादक
राजस्थान पत्रिका
जयपुर

4. सुभाष सेतिया
संपादक 'आजकल'
प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
पटियाला हाउस, नई दिल्ली

5. डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार
जयपुर

6. डॉ.लक्ष्मीकांत दाधीच
प्राध्यापक, वनस्पति शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय कोटा

7. रामकुमार
पत्रकार, लेखक
कोटा

8. दीनानाथ दुबे
पत्रकार, लेखक
कोटा

9. हमीदुल्ला
हिन्दी नाटककार
जयपुर

10. राधेश्याम तिवारी
जनसंचारकर्मी एवं लेखक
जयपुर

11. डॉ. रीतारानी पालीवाल
रीडर, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

12. श्रीमती सुषमा जगमोहन
संध्या टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

13. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
अध्यक्ष-हिन्दी विभाग
क्रिश्चियन डिग्री कॉलेज, लखनऊ(उ.प्र.)

14. सत सोनी
संपादक- संध्या टाइम्स
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

15. डॉ. राधामोहन श्रीवास्तव
अध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र विभाग
बड़हलगंज, गोरखपुर(उत्तर प्रदेश)

16. डॉ. रमेश जैन
अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

खण्ड परिचय

फीचर लेखन एवं पत्रिका सम्पादन तृतीय खण्ड में पत्रकारिता की बहु आयामिता की सामग्री उपलब्ध करायी गई है । अभी तक आप लोग फिचर और विविध क्षेत्रों के लिए लेखन के विविध पक्षो का अध्ययन कर चुके है। अन्यत्र यह भी पढ़ चुके है कि विभिन्न क्षेत्रों में लेखन का महत्व क्या है और लेखन को व्यवसाय के रूप में अपनाये जाने पर तत्समबंधी विशेषताओं की अनुपालना करना भी अपरिहार्य है।

पश्चिम में मुद्रण यंत्रों के आविष्कारक के साथ अपने प्रारम्भ में पत्रकारिता मूलतः मुद्रित माध्यम के रूप में ही सीमित थी केकिन वैज्ञानिक आविष्काकों के साथ-साथ पत्रकारिता ने भी नये आयाम प्राप्त केये है, क्योंकि समाचारपत्र के लिए समाचार ही मूल था केकिन समाचारपत्र की आवश्यकता पूर्ति उतने से ही नही हो जाती है । अब तो इलाक्ट्रोन माध्यम के विकास के साथ -साथ पत्रों के लिए भी बहु ज्ञता प्राप्ति के व्यापक अवसर है। पत्रकारिता में निश्चित ही एक प्रकार का समर्पित लेखकीय व्यक्तित्व ग्रहण करना अपेक्षित कहा जा सकता है । अतः पत्रकारों और संवाददाताओं को इसके विविध आयामो तक पहुंचाने के लिए लेखन को नये आयाम तक फ्रुंचाना भी केखकी दायित्व आता है । अब इलाक्ट्रोन माध्यम के लिए विविध विषयों पर विशिष्ट लेखन निश्चित ही पत्रकारिता को नये आयाम देता है ।

इस खंड में पत्र के विविध आयामों - सामाजिकम, फिल्म, बाल, विशेष विषय पत्रकारिता पत्रकारिता का व्याकपक पररिचय मिलेगा ।

इकाई परिचय

इस खंड में कुल छः इकाइयां है । इससे पूर्व आप 1 से 11 इकाइयों का आध्ययन कर चुके है।

इकाई संख्या 12 में 'पत्रकारिता के विविध आयाम' पर सविस्तार विवेचन प्रस्तुत कीय गया है। इसमें पत्रकारिता को समाज का द्रपर्ण तथा विचारभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ उसकी भूमिका के विषय में जान सकेंगे । नवीन मूल्यों की संस्थापना और समस्या का समाधान के लिए पत्रकारिता अपनी मत्वपूर्ण भूमिका रखिती है । अब यह पत्रकारिता सूचनापरक, खोजपूर्ण, सामाचार कथापरक होती जा रही है। मुद्रित माध्यम की पत्रकारिता सूचनापरक, खोजपूर्ण, सामाचार कथापरक होती जा रही है। मुद्रित माध्यम की पत्रकारिता के साथ इलाक्ट्रोन माध्यम टेहु सांचर पत्रकारिता भी आज महत्वपूर्ण हो गई है ।

इकाई संख्या 13 में 'सामाजिक पत्रकारिता' के विषय में आज जान सकेंगे । इसमें सामाजिक पत्रकारिता के स्वरूप' उदभव एवं विकास से लेकर क्षेत्र - विशेष, उपलब्धियों एवं समस्याओ का विवेचन किया गया है। इसके साथ ही सामाजिक पत्रकारिता का महत्व भी प्रस्तुत किया गया है।

इकाई संख्या 14 'फिल्म पत्रकारिता ' से संबंधित है । इसके अंतर्गत फिल्म पत्रकारिता का प्रारम्भ, फिल्म पत्रकारिओं का परिचय, नया सिनेमा आंदोंलन और नये फिल्म समीक्षक संबंधी अध्ययन किया जा सकेगा । गंभीर सेनेमा लेखन के विवेचन के साथ सेनेमा पर सर्वोतम लेखन विषयक राष्ट्रीय पुरस्कारों का परिचय भी प्राप्त होगा । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में फिल्म पत्रकारिता का ज्ञान भी होगा।

इकाई संख्या 15 'बाल पपत्रकारिता' से संवन्धित है। इसके बाल पत्रकारिता के परिचय के साथ उसकी स्थिति, उदद्भव एवं विकास, बाल पत्रिकाओं के सम्पादन में ध्याम रखने योग्य बातें क विवेचन किया गाय है तथा इस संबंध में कुछ सुझाव दिये गए है । इस इकाई की सामकालीन प्रमुख बाल हस्तलिखित बाल पत्रिकाओं की सूची भी दी गई है।

इकाई संख्या 16 'विशेष विषय' पत्रिकाएं विषयक है जो जनसंचार पाठ्यक्रम के छात्रों के लिए बहु त उपयोगी है। इस इकाई के द्वारा आप विविध विषयों की वीविधि पत्रिकाओं के बारे में जान पाएंगे। साथ ही इस प्रकार की पत्रिका की तैयारी और प्रस्तुति से भी भली-भांति परिचत हो जानेगे ।

इकाई 12 पत्रकारिता के विविध आयाम

इकाई का रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 पत्रकारिता का अर्थ एवं स्वरूप

12.2.1 पत्रकारिता का अर्थ

12.2.2 पत्रकारिता: समाज का दर्पण

12.3 पत्रकारिता: विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

12.3.1 पत्रकारिता और जनमत

12.3.2 विचारभिव्यक्ति की स्वतंत्रता यानी पत्रकारिता

12.3.3 पत्रकारिता की भूमिका

12.3.3.1 नवीन मूल्य संस्थापना

12.3.3.2 समस्या का समाधान

12.4 पत्रकारिता में लेखन

12.4.1 सूचनापरक लेखन

12.4.2 खोजी लेखन

12.4.3 समाचार-कथा

12.5 पत्रकार : एक समर्पित लेखकीय व्यक्तित्व

12.5.1 अभिव्यक्ति का कॉपीराइट

12.5.2 मार्ग निर्धारक पत्रकार

12.5.3 मान-सम्मान का चिन्तन

12.6 परिवर्तनशील पत्रकारिता

12.6.1 पत्रकारिता: विशिष्ट जनसंचार

12.6.2 मुद्रित शब्द और मुद्रित माध्यम

12.6.3 मुद्रित माध्यम की विश्वसनीयता

12.6.4 इलाक्ट्राय माध्यम की पत्रकारिता

12.6.5 पत्रकारिता सम्मत लेखन की विविधता

12.7 सारांश

12.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.9 निबन्धात्मक प्रश्न

12.0 उद्देश्य

पत्रकारिता का फलक बहुत व्यापक है । पत्रकारिता लोकतंत्र की चौथी सत्ता या चौथा पाया है । पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार माना गया है, जबकि भारतीय परिवेश में इसे अब ' प्रथम पाया'

माना फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादनजाने लगा है । इस पाठ्यक्रम में पत्रकारिता विषयक जानकारी के विषय में आप अध्ययन करेंगे! इस इकाई में आप जान पाएगे कि : -

- पत्रकारिता क्या है और उसका स्वरूप क्या है?
- पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति क्या है?
- प्रेस की स्वतंत्रता और पत्रकारिता के विविध रूपों से आप परिचित होंगे ।
- पत्रकारिता के विविध आयामों के विषय में भी कुछ जान पायेंगे ।

12.1 प्रस्तावना

पत्रकारिता का उद्देश्य समाचार संकलन, संपादन और पाक तक पहुँचाकर, पाठक या आम जनता को सूचना देना, शिक्षित करना और उन्हें मनोरंजन प्रदान करना है । इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता लोक शिक्षण एवं लोक जागरण की ऐसी महत्वपूर्ण शक्ति है जो सामाजिक विकृतियों को दूर करके समस्त लोक में रचनात्मक मूल्य प्रतिष्ठित कराने में सर्वाधिक उपयोगी है ।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनसंचार माध्यम के रूप में लोकमत या जनमत निर्माण के क्षेत्र में पत्रकारिता का स्थान अपनी महत्ता रखता है । वास्तव में पत्रकारिता राष्ट्र, समाज और पाठकों के मध्य एक रचनात्मक संवाद स्थापित करती है तथा अपने विविध रूपों से मानव जीवन को स्पर्श ही नहीं करती, प्रभावित भी करती है । यही नहीं, पत्रकारिता विश्व नागरिकता एव बन्धुत्व का पाठ भी पढ़ाती है तथा मानव मात्र की रुचियों को परिष्कृत करती है और विचारों को भी परिपक्व बनाती

12.2 पत्रकारिता - अर्थ एवं स्वरूप

12.2.1 पत्रकारिता का अर्थ

कार्ल जी. मूलर के अनुसार पत्रकारिता का अर्थ है - 'तात्कालिक घटनाओं के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित ज्ञान कार्य है जिसमें आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करके उनकी महत्ता के अनुसार ही उसे तैयार करने या उत्पन्न स्थिति के अनुसार तात्कालिक घटनाओं को बुद्धिमत्ता से जनजीवन के सम्मुख रखा जाता है । ' अमेरिकन एनसाइक्लोपीडिया में पत्रकारिता का अर्थ किया गया है- 'पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका होती है । इसमें घटनाओं, तथ्यों, व्यवस्थापरकता के साथ राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भ की प्रस्तुति होती हैं । प्रेमनाथ चतुर्वेदी का मत है - 'पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितिगत तथ्यों का अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के संदर्भ और आलोक उपस्थित करती है । एक अन्य परिभाषा के अनुसार 'पत्रकारिता चतुर्दिशाओं की सूचनाएं एकत्र करके जनता या पाठकों के सामने रखने का माध्यम है ।

> वास्तव में यह पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है जिसके छोटे से छोटे कार्य से लेकर बड़े से बड़े कार्य के संबंध में सभी प्रकार की जानकारी देकर अपने पाठक का ज्ञानवर्द्धन कराता है तथा समाज और व्यक्ति को एक दूसरे से एक महत्वपूर्ण इकाई है ।

12.2.2 पत्रकारिता : समाज का दर्पण

पत्रकारिता सामाजिक गतिविधियों का दर्पण है क्योंकि मानव समाज का अंग है और समाज से अलग रह नहीं सकता है । अत: उस समाज के विषय में तथा समाज की प्रत्येक गतिविधि के विषय में मनुष्य की चिर जिज्ञासा उसे निरन्तर जानने और अधिक जानने की रहती है कि कब, कहां क्या, कैसे और क्यों हो रहा है? इस जिज्ञासा की पूर्ति का एकमात्र साधन पत्रकारिता है । अत: यह कहना अधिक सार्थक प्रतीत होता है की पत्रकारिता एक ऐसा दर्पण है जिसके माध्यम से मानव अपने आस-पास के समाज में हो रही प्रत्येक गतिविधि यानी सामाजिक जीवन के सत्य-तथ्य, अदृष्ट, अशुभ के साथ दृष्ट और तुम को भी यथारूप में देख पाता है।

यह कहना अन्यथा नहीं होगा कि समाचार माध्यम जनसंचार के अन्य माध्यमों से अधिक स्थायी और सहज सुलभ है जो समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों, रुढ़ियों, विविध लोमहर्षक घटनाओं, समाज को श्रेयस दिलाने वाले कार्यों के अतिरिक्त देश, धर्म, राजनीतिक, साहित्य, संस्कृति, उद्योग एवं अर्थतंत्र विषयक विविध पक्षों का यथार्थ और विश्लेषित स्वरूप समाज के सामने रखता है तथा समय-समय पर सामाजिक मूल्यों एवं परिवर्तित मूल्यों के संरक्षण को भी महत्व देता है । अत : यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों की नियामिका, संरक्षिका और पोषिका भी है ।

> इसमें संदेह नहीं है कि पत्रकारिता जहां सामाजिक जीवन का दर्पण है , वहीं वह वर्तमान जीवन का आधार और भावी जीवन की मार्गदर्शिका भी है । वह सभी समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं, आग्रहों पर दृष्टिविशेष रखते हुए मानवीय संदर्भों की कसौटी पर सभी कुछ मूल्यांकित-- कर पाठकों को वस्तुस्थिति से अवगत कराती है तथा जनप्रतिक्रिया को फीड़ बैंक सत्ता और प्रशासन तक पहुँचाती है ।

जैफर्सन ने पत्रकारिता की महत्ता का संकेत करते हुए कहा कि'यदि उनको एक समाचार विहीन शासन व्यवस्था और शासनविहीन समाचार वाले समाज में से चुनने को कहा जाए तो वे निस्संदेह समाचारपत्र वाली व्यवस्था को अंगीकार करेंगे । ' इसी प्रकार वर्क ने उसे 'चौथी सत्ता' जिसकी शक्ति लोकमत पर आश्रित है - स्वीकार किया था तो आस्कर वाइल्ड ने उसे राज्य का ' चौथा स्तम्भ' कहा था ।

12.3 पत्रकारिता : विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

12.3.1 पत्रकारिता और जनमत

पत्रकारिता को सत्ता का चौथा अंग या स्तम्भ कहा है । उसका स्पष्ट आशय है कि किसी भी राष्ट्र की सुचारू व्यवस्था के लिये चार प्रमुखताएं स्वीकार की जाती है : -

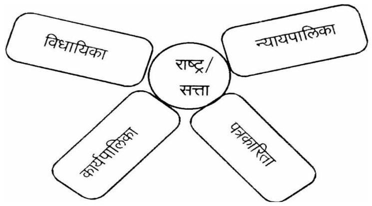

पत्रकारिता या समाचारपत्र ऐसा चतुर्थ स्तम्भ है जो राष्ट्र का सजग प्रहरी है । यह प्रहरी भर ही नहीं, अपितु जनमत निर्धारण की विशेष भूमिका का निर्वाह भी करता है । वह जनमत निर्धारक और जनमत को जागरूक बनाने का साधन भी है । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सफलता तथा उसके लिए सुदृढ़ जनमत निर्धारण में पत्रकारिता की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई है । आज भी यदि लोकतंत्र को सही दिशा-दर्शक के रूप में समाचार-पत्र या पत्रकारिता की भूमिका अस्वीकार नहीं की जा सकती । यही कारण है कि स्वस्थ जनमत निधारण और सत्ता के विरुद्ध जन आन्दोलन की परिपक्व और सघन योजना संचालन में पत्रकारिता आज भी पीछे नहीं है ।

12.3.2 विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता यानी पत्रकारिता

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में विचारों की अभिव्यक्ति की जिस स्वतंत्रता का प्रयोग संवैधानिक अधिकार के रूप में पत्रकारिता करती है, वैसी स्वतंत्रता अन्य राष्ट्रों के दूसरे तंत्रों में नहीं है । यद्यपि विदेशों में पत्रकारिता की स्वतंत्रता अन्य रूपों में उपलब्ध है । जहां पत्रकारिता को ' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' संवैधानिक देन है, वहीं उसका दायित्व और अधिक व्यापक हो जाता है क्योंकि पत्रकारिता जनता और सत्ता के बीच अपनी विश्वसनीयता की स्थापना इसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से ग्रहण करती है । इसीलिये पत्रकारिता के इस दायित्व के प्रति उदासीनता की वृत्ति देखकर ही जवाहरलाल नेहरू ने कहा था- 'समाचारपत्र यदि गैर-जिम्मेदार बन जाए, समाज की मान्यताओं और स्थापनाओं को तोड़ने या सरकार को लोकतंत्र विरोधी तरीकों से उलटने वाले तत्व गैर-जिम्मेदारी से काम करते हैं तो समाज और राष्ट्र के व्यापक हितों और लोकतंत्री संविधान की रक्षा के लिए शपथबद्ध जनप्रतिनिधि सरकार का दायित्व हो जाता है कि उन्हें संयत करें ।

इसमें संदेह नहीं कि भारतीय संविधान ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है तो साथ ही नेहरू के शब्दों में पत्रकारिता की उस स्वतंत्रता का एक मूलभूत सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया गया है कि समाचारपत्रों की स्वतंत्रता के साथ लोकतंत्री दायित्व भी उन पर है कि सरकार चाहे वह किसी भी पक्ष की क्यों न हो, बातें जनता के समक्ष सही रूप में रखे और जनता को समझाने एवं जगाने का प्रयास करे । इसका एक स्पष्ट भाव यह है कि पत्रकारिता लोकतंत्रीय व्यवस्था पर एक अलिखित आचार संहिता अपनाये जाने की व्यवस्था के प्रति सतर्कता बनाये रखती है । यह अनेक उदाहरणों से विदित हो जाता है कि भारतीय लोकतंत्र और संविधान की व्यवस्थाओं ने न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और कार्यपालिका को दिये गये दायित्वों के साथ इन सभी के दायित्वों पर सतर्क दृष्टि और दिशा-निर्देश के लिए एक महान दायित्व का यह चौथा स्तम्भ पत्रकारिता स्वीकार किया है ।

12.3.3 पत्रकारिता की भूमिका

पत्रकारिता की भूमिका स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी ने कभी कहा था कि- ' समाचारपत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उद्देश्य

जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है । तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है । ' आज यह कहा जा सकता है कि भारत में पत्रकारिता ने अधिकांश क्षेत्रों में सभ्यता, संस्कृति, शक्ति के प्रतीक के साथ जन आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व किया है । इसी दृष्टि से पत्रकारिता ने अपनी भूमिका दो रूपों में निर्वाह की हे -

1. नवीन मूल्य संस्थापना
2. समस्या का समाधान

12.3.3.1 नवीन मूल्य संस्थापना

लोकतंत्र प्रणाली में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जहां सभी को संवैधानिक स्तर पर मिली है, वही पत्रकारिता या समाचारपत्रों को भी यह स्वतंत्रता मिली हुई है जिसके अन्तर्गत समाचारपत्र तटस्थ और निरपेक्ष रूप में शासन की आलोचना करते हैं तो प्रजातांत्रिक शक्तियों को सशक्त करते हैं । समाचारपत्रों की स्वतंत्रता बनाये रखने का दायित्व एक स्तर पर जनता का है और यदि जनता जागरूक है तो जनता समाचार को निष्पक्ष स्तर पर अपने पाठकों या जनता के समक्ष सारी सच्चाई रखते हैं । ऐसी स्थिति में राष्ट्र निर्माण और प्रगति में भी समाचारपत्रों ने अपनी पूरी तरह निर्वाह की है । रूढ़ परम्पराओं के उन्मूलन, जाति एवं लिंग संबंधी मानवीय अन्तर को मिटाने तथा नवीन मूल्यों की स्थापना करने में भी समाचारपत्रों के व्यावहारिक पक्ष की पर्याप्त महत्ता रखता है ।

समाचारपत्र यदि स्वतंत्रता का सही प्रयोग करते है तो उसके समाचार भी निष्पक्ष होंगे तथा पाठकों की उत्तम धारणाओं को पुष्ट करेंगे । लेकिन आजकल ऐसा बहुत कम हो रहा है, क्योंकि असत्य, अपुष्ट और तोड़ -मरोड़कर छापे गये समाचारों के कारण सामाजिक तनाव, हिंसा, उपद्रव एवं आपत्तिजनक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिल रहा है । इसलिए आज आवश्यक यह है कि समाचारपत्र अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के साथ पत्रकारिता के नवीन मूल्यों की संस्थापना के प्रति सक्रिय बनकर संयम संतुलन, दूरदृष्टि और निष्पक्षता से सामाजिक चेतना और उन्नत जीवन पद्धति के निर्माण की प्रेरणा जनता को दे सके।

12.3.3.2 समस्या का समाधान

लोकतंत्र में समाचारपत्रों की भूमिका आम आदमी को उसके कर्त्तव्य-बोध से परिचित कराते हुए शासक वर्ग को जहां सतर्क व्यवहार के लिए सचेत करना है, वहीं अपनी समाचार-दृष्टि और संपादकीय आदि के माध्यम से राष्ट्र-जीवन में उत्पन्न छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में भी अपनी भूमिका विस्मृत नहीं करते हैं । समाचारपत्र लोकतंत्र की पुष्टीकरण और स्वस्थ जनमत निर्माण की दिशा में अपनी भूमिका निर्वाह करते हुए समस्याओं का समाधान सशक्त एवं प्रभावशील रूप में करते हैं । तभी जॉन मिल्टन ने कहा था- ' मुझे समाचार या सच्चाई जानने की स्वतंत्रता दो... फिर कोई भी किसी प्रकार से परतंत्र नहीं कर सकता है । '

समाचारपत्र अपने संपादकीय, लेखन और समाचारों के विश्लेषण से राष्ट्र में उत्पन्न विविध समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा इस संबंध में जनमत निर्धारण भी करते है । इस प्रकार समाचारपत्र अपनी तटस्थ और निष्पक्षता के आधार पर स्वस्थ राष्ट्र-हित और जागरूक

जनमत निर्माण करने में सफल होते हैं । लेकिन इस दिशा में राजीव गांधी के ये विचार बहु त ही महत्वपूर्ण है और समाचारपत्रों का ध्यान उन पर केन्द्रित होना चाहिए - ' प्रेस की स्वतंत्रता हमारे लिए एक सिद्धान्त है । जिसे हमारे संविधान द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है । चार दशकों की स्वतंत्रता द्वारा वैधता प्रदान की गई है और एक राष्ट्र के रूप में यह हमारे लिए अनिवार्य है । '

12.4 पत्रकारिता में लेखन

पत्रकारिता सिद्धान्त से अधिक व्यावहारिक और व्यावहारिक से अधिक प्रयोगशील है । इसलिए इस क्षेत्र में यदि कोई कदम बढ़ाता है तो उसे निरन्तर लेखन करना अपरिहार्य होता है । उसके बिना वह पत्रकारिता जगत में न जी सकता है, न रह सकता है, न पहचान बना सकता है । इसलिए किसी पत्रकार, उप-संपादक, संवाददाता से लेकर संपादक तक सभी को लेखन की प्रवृत्ति अपनानी होती है । यह लेखन प्रवृत्ति प्राय: निम्नलिखित रूप में देखी जा सकती है -

1. सूचनापरक लेखन 2.खोजी लेखन
3. समाचार - कथा

12.4.1 सूचनापरक लेखन

पत्रकारिता क्षेत्र का लेखन अधिकतम सूचनापरक होता है और उस सूचनापरकता का अर्थ होता है कि अपने पाठकों को नवीनतम जानकारी, तथ्य एवं सत्य के आधार पर दीजिए । यही कारण है कि पत्रकार या संवाददाता को 'समाचार गंध रोगी' कहा जाता है क्योंकि आंख और कान यानी देखे जाने या सुने जाने से नहीं, उसे नाक से भी काम लेना पड़ता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जो कुछ हो रहा है या होने वाला है, उसकी गंध प्राय: उसे मिल ही जाती है या गंध पाने की निरन्तरता उसकी प्रवृत्ति हो जाती है । तभी वह अपने पाठकों को यथारूप नवीन समाचार और समाचार के पीछे समाचार तक की खोजकर सूचनाएं देता है ।

12.4.2 खोजी लेखन

पत्रकारिता जब व्यवसाय के रूप में स्वीकार की जाती है तो पत्रकार को एक अच्छा लेखक या संवाददाता या स्तम्भ लेखक बनने के लिए यह भी आवश्यक 'हो जाता है कि वह अपनी खोजी दृष्टि से परिपूर्ण हो । यदि वह ऐसा नहीं है तो उसका पाठक उसे न पसंद कर सकता है और न पहचान सकता है । अत: खोज दृष्टि से समर्थित लेखन में लेखक, स्तम्भकार या संवाददाता को श्रम करना तो अपरिहार्य हो ही जाता है, लेकिन वह जो कुछ भी अपने स्तम्भ के लिए प्रस्तुत करता है, वह मात्र स्रोत-सामग्री भर नहीं होता है, उसमें उसकी खोजपूर्ण दृष्टि का नवीनतम परिणाम होता है, जो पाठक को चकित भी करता है और ज्ञान-वृद्धि भी करता है । इस दृष्टि से एम. वी. कामथ का विचार बहु त ही उपयुक्त है कि (आलेख) ' - अप्रयासहीन इस अध्ययन में स्वतंत्रता से ग्राह्य और सूचनात्मक होने के साथ बिना अश्लील हु ए मनोरंजनकारी तथा, अति समाचाररहित ज्ञानवर्द्धन करने वाला होना चाहिए।'

12.4.3 समाचार कथा

पत्रकारिता क्षेत्र में समाचार कथा बहुत ही सर्जनात्मक है । किसी समाचारपत्र या पत्रिका में ऐसी सामग्री जो इसके किन्हीं पृष्ठों पर प्रकाशित होती है उसे एक पत्रकार या संवाददाता यात्रा के बीच में अपने सहपाठियों या किन्हीं विशेष व्यक्तियों से वार्तालाप में कोई सूचना पाता है तो उसे सामान्य, सीधे ही सुस्पष्ट चिन्तन और समग्र सोच के आधार पर बहुत ही सुसंगठित भाषा में प्रस्तुत कर एक श्रेष्ठ समाचार कथा तैयार करता है ।

बोध प्रश्न-

1. पत्रकारिता समाज का दर्पण है - क्यों?
2. पत्रकारिता जनमत निर्माण में किस प्रकार उपयोगी है?
3. पत्रकारिता क्षेत्र में विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता स्पष्ट कीजिए?
4. पत्रकारिता में लेखन की महत्ता किस प्रकार देखी जाती है?
5. पत्रकारिता सिद्धान्त से अधिक व्यावहारिक और व्यावहारिक से अधिक प्रयोगशील है-स्पष्ट कीजिए ।

12.5 पत्रकार :एक समर्पित लेखकीय व्यक्तित्व

पत्रकार आज के जनसंचार माध्यम के बीच वास्तव में ऐसा व्यक्ति है जिसके पास विचार शक्ति है और वह भी पूर्वग्रह-रहित और अहं-रहित भी । इसीलिए वह जहां भी कोई उपयोगी सूचना-स्रोत पाता है तो नये विचारों से भर उठकर अपनी समाचार कथाएं तैयार करने के लिए तत्पर हो उठता है तथा इन विचारों से ही वह अपनी समाचार कथाएं बुनता है । कई बार लेखक या पत्रकार की गहन शोधात्मक दृष्टि की परिणति समग्रत: या 'विशेष कथा' के रूप में प्रस्तुत होती है । ऐसी समग्रत: विशेष कथाओं के लिए पत्रकार को निश्चित ही सूचना प्राप्ति के लिए सदैव तत्पर रहकर विश्लेषण करते रहने के लिए बाध्य रहता है । यही कारण है कि अधिकांश पत्रकार इसी प्रकार के विचारों के लिए ही प्रतीक्षारत रहता है तथा समाचार-गंध पाते ही सूचना-स्रोत संकलन के लिए तत्पर हो उठता है । इस दृष्टि से यह कहना अधिक उपादेय प्रतीत होता है कि पत्रकार में समाचार बोध का नव संस्कार जन्म लेता है । वह नाना वर्ग के युवक-युवतियों से मिलता है, विविध वर्ग से स्रोत पुरुषों तक अपनी शोध के प्रकाशन के लिए तत्पर रहता है, लेकिन यह भी भली-भांति जनता के बीच रहकर अपने मूल स्रोतों की खोज कर लेता है ।

12.5.1 अभिव्यक्ति का कॉपीराइट

पत्रकारिता क्षेत्र में पत्रकार का ऐसा व्यक्तित्व होता है जो उसे अपने कार्य के लिए समर्पित बनाये रखता है । इस सम्बन्ध में श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट का कथन है कि - ' एक सीमा तक, देश के व्यापक तथा आधारभूत उद्देश्यों और आदर्शों के प्रति प्रत्येक पत्रकार का सदा जागृत समर्पण भाव होना चाहिए.. पत्रकारिता को कर्त्तव्य कहा जा सकता है - स्वयं अपने प्रति कर्त्तव्य और जिसके लिए लिखा जाता है, उसके प्रति कर्त्तव्य । ' यह कर्त्तव्यनिष्ठा ही पत्रकार के व्यक्तित्व को बनाती है । पत्रकार का यह कर्त्तव्य है कि समाचार संकलन, लेखन में वह अपने अभिमत की बलि चढ़ाकर व्यापक उद्देश्य को ही लक्षित करके लिखता है तथा विश्वस्त बन पाता है ।

विचारों का कॉपीराइट नहीं हो सकता लेकिन उसके लिखित या अभिव्यक्त रूप का ही कॉपीराइट होता है इस दृष्टि से पत्रकार द्वारा व्यक्ति और उसका लिखित रूप ही कॉपीराइट के क्षेत्राधिकार में आता है क्योंकि अपने व्यक्तिगत स्रोत से अधिकांश सूचनाएं एकत्र करके ही वह कोई समाचार कथा अथवा फीचर अथवा अग्रलेख लिखता है ।

12.5.2 मार्ग -निर्धारक पत्रकार

पत्रकार अनुसरण नही करता, मार्ग-निर्धारक होता है और यह तभी ही हो पाता है जब वह पत्रकारिता को कर्त्तव्य के रूप में ग्रहण करता है । यह बात भिन्न है कि आज पत्रकार और पत्रकारिता क्या है और उन दोनों के विषय में जन समाज क्या सोचता है? पत्रकारिता को व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हुए भी यह तो पत्रकार के समक्ष स्पष्ट होता है कि पत्रकारिता सामान्य व्यवसाय नहीं है । वास्तव में पत्रकारिता एक दर्शन के रूप में है जो आज व्यवसाय के स्तर पर पैसा और नाम कमाने का पर्याय हो चला है । इस प्रकार की दृष्टि पर विचार करते हुए राजेन्द्र शंकर भट्ट का मत रहा है कि - 'यह पत्रकारिता के ऊंचे सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है । इसी दृष्टिकोण ने पत्रकारों के मन से उचित-अनुचित का भेद लोपित किया है और ऐसी परम्परा प्रारम्भ की है कि एक ओर समाचार-पत्रों की ओर उनके पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है, दूसरी ओर पत्रकारों का प्रभाव कम होता जा रहा है ' ।

12.5.3 मान-सम्मान का चिन्तन

उक्त चिन्ता का कारण भी है कि आज पत्रकारिता अर्थोपार्जन का साधन है, मिशन (सेवाभावना) नहीं है । अत: उनका अस्तित्व ही जब अर्थ आधारित होता चला जा रहा है तो पत्रकार का व्यक्तित्व अपनी मान्यता तो रख पाता है, पर सम्मान नहीं पाता है । अत: पत्रकार को 'मान' से अधिक 'सम्मान' का आग्रहशील होकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है । तभी एक पत्रकारिता के व्यावहारिक ज्ञान के प्रवक्ता की मान्यता यह रही है कि - ' जिसे अपने सम्मान के लिए स्वयं चेष्टा करनी पड़ती है, उसका सम्मान दूसरे कर ही नहीं सकते । मान वह है, जो दूसरे अपने मन से करें । इसके लिए पत्रकारों को अपना मान अपने में बढ़ाना होता है.. सचमुच सम्मान के योग्य ज्ञान या कृत्य होना चाहिए ।.... लेकिन इसे पाने का रास्ता न आसान है, न छोटा । ' अत: पत्रकार अपने व्यक्तित्व की पहचान के लिए क्या करें और क्या नहीं, स्वयं ही स्पष्ट हो जाता

12.6 परिवर्तनशील पत्रकारिता

12.6.1 पत्रकारिता : विशिष्ट जनसंचार माध्यम

पत्रकारिता अब मिशन नहीं, व्यवसाय है और जब व्यवसाय कहा जा रहा है उसे, तो उसमें व्यवसायपन' भी देखना अनिवार्य है । अर्थोपार्जन और अर्थ आधार ही उसके लिए जीवनसार होते दिखाई देते हैं, पर अन्य व्यवसायों के समान इस क्षेत्र में आचार संहिता पर संचरण करना आवश्यक होता है । अत: पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत पत्रकारों के लिए आत्म-निरीक्षण, आत्म-नियंत्रण और आत्मानुशासन की त्रियात्मक स्थिति ही उसकी आचार संहिता की व्यवस्था करती है । चक्रवर्ती

राजगोपालाचार्य ने सन् 1951 में संसद में समाचारपत्र संशोधन विधेयक, 1951 के संशोधन प्रस्ताव के अवसर पर कहा था- 'भविष्य में ऐसा समय अवश्य आयेगा कि संगठित समाचारपत्र समूह स्वयं अपनी व्यावसायिक आचार एवं अनुशासन संहिता निर्मित करेगा और स्वयं अपनी अनुशासन समिति नियुक्त करेगा । '

निश्चित ही परिवर्तनशील पत्रकारिता के संदर्भ में उक्त उल्लेख अपना आत्मसंयम निर्धारण करने की दिशा दिखाता है तो विशिष्ट जनसंचार माध्यमों के रूप में पत्रकारिता के परिवर्तनशील स्वरूप की महत्ता भी घोषित करता है । आज देखा जाए तो पत्रकारिता में विकासोन्मुखता के स्तर पर परिवर्तनशीलता के तत्व का महत्व कम नहीं है क्योंकि नाना रूपों और स्थितियों में पत्रकारिता की यह परिवर्तनशीलता का तत्व अपना मूल रूप और उद्देश्य में अपरिवर्तनकारी ही रहता है । निश्चित ही वर्तमान समय में जैसी सामग्री समाचारपत्रों में प्रकाशित हो रही है, उसकी तटस्थ आलोचना दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है ताकि परिस्थितिजन्य आकलन के साथ तथ्य, तर्क और विचार का संतुलन ही पत्रकारिता के बहुआयामी स्वरूप को रेखांकित करता है ।

अत: परिवर्तनशीलता पत्रकारिता का गुण तो होता है, व्यवहारगत नीतियों के अन्तर्गत ही उसकी उपादेयता भी आत्मसंयमी और आत्मनियंत्रकयि हो सकती है तथा होती है । राजेन्द्रशंकर भट्ट के मतानुसार- 'पत्रकारिता अपने में सम्पूर्ण, किसी और को प्रभावित नहीं करने वाला व्यवसाय या उद्योग नहीं है । इसे पूरी तरह व्यवसाय या उद्योग मानने का ही मन नहीं करता, चाहे जितनी श्रमजीवी तथा स्वामीपरक वृत्तियाँ इसमें आ गई हो । ' इससे संकेत यही है कि सेवाभावना का उच्च स्तरीय चिन्तन जनसंचार माध्यम के इस भेद-पत्रकारिता में निहित हैं ।

12.6.2 मुद्रित शब्द और मुद्रित माध्यम

पत्रकारिता जनसंचार का मुद्रित माध्यम है और उसका महत्वपूर्ण अंग मुद्रित शब्द है । समाचार जगत या पत्रकारिता में ही नहीं, मुद्रित शब्द का मूल्य मौखिक शब्द से अधिक होता है । जो भी लिखित है वह शब्दरूप मुद्रित होकर आता है पाठकों के समक्ष, फिर उसे सावधानी से पढ़ा जाता है और कई बार पढ़ा जा सकता है तथा पढ़ने वाले पर प्रभाव डाल सकता है, प्रतिक्रिया के लिए आन्दोलित कर सकता है । वह मुद्रित शब्द की व्यापक भूमिका है, जो समाचारपत्र या पत्रिका रूप में पाठकों के समक्ष आती है । इक्कीसवीं शताब्दी में इलाक्ट्राय माध्यम की भूमिका सर्वोपरि होने में कुछ भी संदिग्ध नहीं है, परन्तु चिन्ता का कोई कारण नहीं है कि दक्षिण एशिया के विकासशील देशों में एक प्रमुख देश भारत फिर भी मुद्रित माध्यम यानी समाचारपत्र के लिए आग्रहशील होगा क्योंकि इलाक्ट्राय माध्यम इतने अधिक मूल्य पर उपलब्ध होंगे कि जनसामान्य द्वारा क्रय किया जाना सम्भव नहीं होगा । अत: मुद्रित माध्यम एव मुद्रित शब्द की महत्ता, श्रेष्ठता, सुगम उपलब्धि जनसामान्य के लिए हो सकेगी ।

मुद्रित शब्द और मुद्रित माध्यम का नगरीय क्षेत्र कम होना इस शताब्दी की उपलब्धि कही जाए तो कुछ विशेष नहीं है, पर यह निश्चित है कि भारतीय ग्रामीण अंचलों में मुद्रित माध्यम की अपेक्षा, मांग तथा पाठक निरन्तर बढ़ते रहेंगे । इसका कारण यह है कि न्यूनतम मूल्य पर समाचारपत्र उपलब्ध हो सकेगा । आज क्षेत्रीय पत्रकारिता और राष्ट्रीय पत्रकारिता के स्तर पर देखा जा सकता है। अन्तर यह है कि क्षेत्रीय समाचारपत्र किसी भी वेतन आयोग के अनुपालन से मुक्त है और उनके दैनिक समाचारपत्र सामान्यत: तुलनात्मक दृष्टि से अधिक मूल्य पर उपलब्ध है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली

से प्रकाशित चौबीस पृष्ठीय अंग्रेजी दैनिक का मूल्य मात्र एक रूपया होता है । यह भी ध्यान देने योग्य है कि क्षेत्रीय सोलह पृष्ठीय समाचारपत्र का मूल्य डेढ़ रुपये से दो रूपये प्रति कॉपी है तो किसी आठ या दस पृष्ठीय स्थानीय दैनिक का मूल्य दो रुपये ही है । इसकी अपेक्षाओं के संदर्भ में प्रभाकर माचवे का कथन अधिक उपयुक्त हैं । कि ' पाठक अब ग्रामांचल में अधिक बढ़ रहे हैं । दैनिक पत्र-पत्रिकाओं से सामान्य पाठकों की अपेक्षाएं बढ़ती जा रही है .....वे ज्ञान विज्ञान की अपनी बढ़ती प्यास एवं जिज्ञासा को भी शांत करना चाहते हैं । '

12.6.3 मुद्रित माध्यम की विश्वसनीयता

शब्द को ब्रह्म की संज्ञा दी गई है. । मुद्रित माध्यम में भी शब्द की ही महिमा है । लिखित शब्द जनमानस या पाठक में अपना मान बनाये हु ए हैं । यद्यपि तथाकथित पीत पत्रकारिता या यलो ज़र्नलिज्म के प्रार्दुभाव ने मुद्रित शब्द का बहु त ही अहित एवं उसकी विश्वसनीयता पर प्र्हार किया है । आज भारतदेश में जनसंचार के अन्य माध्यमों पर सत्ता का अधिकार है । अत: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का कितना और कैसा निर्वाह हो पाता है, उसका अनुभव मुद्रित माध्यम, पत्रकार एवं माध्यम से सम्बन्धित सभी लोगों को है । फिर भी मुद्रित माध्यम ही ऐसा माध्यम है जो सर्वाधिक स्तर पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग कर जनता के मध्य अपनी विश्वसनीयता बनाये हु ए हैं ।

समाचारपत्र एव पत्रिकाएं अधिसंख्य रूप में ऐसे कुशल संपादकों एवं पत्रकारों का नेतृत्व प्राप्त है, वहीं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग उत्तम ढंग से करके पाठकों के मध्य विश्वसनीय पैठ भी बना सके हैं । यहां यह भी स्वीकार कर लेने में आपत्ति नहीं है कि यदि समाचारपत्र का स्वामी ही अपने आपको पत्रकार और संपादक घोषित करके पत्र संचालन करता है तो विश्वसनीयता कभी न कभी किसी दबाव के कारण आहत भी हो सकती है । राजेन्द्र शंकर भट्ट की यह मान्यता है कि- ' हमारे यहां की विशेषता यह है कि बहुपठित पत्र-पत्रिकाएं प्राय: ऐसे स्वामित्व समूहों के हाथों में है, जिनका ज्यादा हाथ अन्य प्रकार के उद्योग-व्यापार में है । अपनी आय के अन्य साधनों की ओर उनका अधिक ध्यान है, क्योंकि उनसे वास्तव में उनकी अधिक आय होती है । उनकी पत्र- पत्रिकाएं उनके अन्य आय-अर्जन में सहायक रहे - - - -ये हित व्यापारिक के अतिरिक्त राजनीतिक भी होते हैं क्योंकि ये पत्र स्वामी-घराने के ही है जो संसद सदस्यों तथा विधायकों को भी... अपने प्रभाव में रखने का प्रयत्न करते रहते हैं । ' ऐसी स्थिति में मुद्रित माध्यम की विश्वसनीयता पर प्रभाव पड़ सकता है ।

संपादक जब पत्रसमूह घरानों से अलग और स्वामी नहीं होते तो मुद्रित माध्यम की विश्वसनीयता सुदृढ हाथों में रहती है, क्योंकि वे विश्वास जमाने की प्रवृत्ति को महत्व देते हैं । हमारे संविधान की उद्देशिका में और 'मूलाधिकार', ' राज्य की नीति के निर्देशक तत्व' तथा ' मूल कर्त्तव्य ' के मार्ग में कुछ राष्ट्रीय विश्वास प्रतिप:दित है, कुछ विश्वास हमारे ऐतिहासिक अनुभव के विकसित रूप है - 'राष्ट्रीय एकता, समभाव और सद्भाव, इन सबका व्यावहारिक उपयोग मुद्रित माध्यम में किया जाता है, अपेक्षित भी है और एक संपादक या पत्रकार के लिए महत्वपूर्ण दायित्व भी है । '

12.6.4 इलाक्ट्राय माध्यम की पत्रकारिता

वैज्ञानिक आविष्कारों नें संचार माध्यमों की गुणात्मक अभिवृद्धि की है तथा उनकी अपेक्षाएं भी मुद्रित माध्यम से भिन्न है । अत: लेखन में भी तकनीक सम्बन्धी भिन्नता अपेक्षित है । पत्रकारिता

केवल समाचार संवाहक नहीं है, उसमें खोज खबर होती है और पत्रकारिता विषयक प्रत्येक लेखन में यह तत्व विद्‌यमान रहता है । लेकिन इसका ज्ञापन करना लेखक का अभीष्ट नहीं होता । पत्रकार या संवाददाता को स्रोत-सामग्री चयन के लिए विभिन्न लोगों से भेंट करनी होती है, यात्रा-सम्पर्क जुटाने पड़ते हैं और फिर माध्यम के अनुरूप सामग्री लेखन करना होता है ।

इलाक्ट्राय माध्यम के दो रूप विशेष है - प्रथम रेडियो । रेडियो में शब्द की महिमा अवश्य है, पर वह उच्चरित शब्द की होती है । शब्द उच्चारण के बाद इलैक्ट्रिक उपकरण के माध्यम से ध्वनि तरंग रूप में परिवर्तित होकर बेतार प्रक्रिया से प्रसारित होता है और अपने विशेष मीटर बैण्ड के रिसीवर पर उस ध्वनि तरंग रूप को ग्रहण किया जाता है । जैसे ही रेडियो का मीटर विशेष खोला जाता है, वैसे ही वे ध्वनि तरंगें शब्द रूप में परिवर्तित होकर श्रोता के पास पहुँचती है । अत लेखक को यहां शब्द के उच्चरित रूप और ध्वनि का महत्व समझकर दूरस्थ बैठे श्रोता (पाठक नहीं) तक अपना मन्तव्य पहुँचाने के लिए अपनी विशेष शैली शिल्प अपनाने की आवश्यकता अनिवार्यत: स्वीकार करनी होती है। अत: श्रव्य माध्यम हेतु लेखन में भिन्नता होती है । इलाक्ट्राय माध्यम का दूसरा रूप विशेष है टेलीविजन । इस माध्यम में दृश्य में परिवर्तित होते शब्द की महिमा का महत्व है । शब्द स्वयं ही परिवर्तित होकर दृश्य नहीं होता और न हो सकता है, परन्तु शब्द मात्र उच्चरित अथवा लिखित रूप में अपना अस्तित्व घोषित नहीं करना अपितु अपने साथ अपनी महत्ता प्रदर्शन के लिए उपयुक्त दृश्य की उपस्थिति दिखाकर दर्शक श्रोताओं के समक्ष अपनी शत प्रतिशत विश्वसनीयता सिद्ध करता है ।

टेलीविजन का ही व्यापक स्वरूप हमें फिल्म के रूप में अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उपलब्ध होता है । यही कारण है, कि टेलीविजन कार्यक्रम की तकनीकी व्यवस्था में लेखन- सम्पादन का प्रकट रूप 'छोटे पर्दे ' के लिए स्वीकार किया जाता है और फिल्म के रूप में 'बड़े पर्दे का उल्लेख किया जाता है । इलाक्ट्राय प्रविधि का लेखन ही वहां पर्याप्त नहीं होता, उसमें दृश्य मिश्रण (विजुअल मिक्सिंग) करने की अनिवार्यता रहती है ।

भारत जैसे विकासशील देश में फिल्म निर्माण का इतिहास गत एक शती प्राचीन है तो टेलीविजन अभी अपनी अर्द्धशती भी पूरी नहीं कर पाया है, परन्तु हमारे पत्रकारों, लेखकों को विधागत महत्ता से परिचित करा दिया है । अत: नवीन प्रविधि से इन क्षेत्रों के लिए समाचार लेखन के साथ-साथ रिपोर्ताज, यात्रावृत्त, आखों देखा हाल, फीचर, समाचार कथा, नाटक, वृत्त चित्र आदि के लिए लेखन किया जा रहा है ।

बोध प्रश्न - 2

(1) पत्रकार को एक समर्पित लेखकीय व्यक्तित्व कहने से क्या आशय है?

(2) विचारों का कापीराइट नहीं हो सकता - इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(3) पत्रकार मार्गदर्शक होकर भी अपने मान- सम्मान का चिन्तक क्यों होता है?

(4) परिवर्तनशील पत्रकारिता से क्या आशय है?

(5) मुद्रित माध्यम और इलान्ट्राय माध्यम के लिए लेखन की भिन्नता क्या है?

(6) इलाक्ट्राय माध्यम की विशेषता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

12.7 सारांश

पत्रकारिता हेतु लेखन विशेष प्रकार का होता है उसे सर्जनात्मक लेखन-कथा काव्य आदि की भांति नही लिखा जाता उसमें सूचना और शिक्षा दोनों का ऐसा समन्वय होता है जो विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की घोषणा करता है पर अपने आप में मर्यादित रहकर। इसीलिए पत्रकारिता के लिए लेखन करते हुए नवीन मूल्य संस्थापन और समस्या समाधान की प्रवृत्ति विकसित होती है तभी सूचनापरक खोजी समाचार कथा जैसे लेखन का परिणाम सामने आता है । इस दिशा में पत्रकार के समर्पित व्यक्तित्व के लेखक के छप में छवि निर्माण होना बहुत महत्व रखता है विज्ञान के विकास के कारण अब पत्रकार या संवाददाता मुद्रित माध्यम के लिए ही नहीं अपितु इलाक्ट्राय माध्यम (रेडियो, टेलीविजन,फिल्म) के लिए भी लिखता है इस खंड की अगली इकाइयों से आप पत्रकारिता क्षेत्र के अन्य प्रकारों से भी परिचित हो रहे हैं ।

12.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. कुलश्रेष्ठ, विजय : फीचर लेख, हंसा प्रकाशन, जयपुर
2. शर्मा, राधेश्याम (संपादक) : जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़
3. भानावत, संजीव : पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स 19, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, लालकोठी, जयपुर-015 302
4. जैन, रमेश (संपादक) : हिन्दी पत्रकारिता के विविध स्वरूप, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर
5. भट्ट, राजेन्द्र शंकर : पत्र, पत्रकार, पत्रकारिता, पब्लिकेशन्स डिविजन, भारत सरकार, नई दिल्ली
6. कुलश्रेष्ठ विजय एवं : संचार पत्रकारिता अथइया, प्रतुलहंसा प्रकाशन, जयपुर

12.9 निबन्धात्मक प्रश्न

(1) विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का आशय स्पष्ट करते हुए पत्रकारिता में उसकी महत्ता का उल्लेख कीजिए ।

(2) 'पत्रकार एक समर्पित लेखकीय, व्यक्तित्व के रूप में उभरता है '- इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(3) कोई भी पत्रकार पत्रकारिता की भूमिका निर्वाह करते हुए किन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करता है और क्यों?

(4) मुद्रित माध्यम और इलाक्ट्राय माध्यमों का अन्तर बताइये और तद्विषयक लेखन में क्या अंतर होता है - स्पष्ट कीजिए ।

इकाई 13 सामाजिक पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 सामाजिक पत्रकारिता का स्वरूप

13.3 सामाजिक पत्रकारिता : उद्भव और विकास

13.3.1 आजादी से पूर्व

13.3.2 आजादी के बाद

13.4 सामाजिक पत्रकारिता का क्षेत्र

13.5 सामाजिक पत्रकारिता की उपलब्धियां

13.6 सामाजिक पत्रकारिता : कुछ समस्याएं

13.7 विभिन्न संस्थाओं का योगदान

13.8 प्रमुख सामाजिक पत्रकार

13.9 सामाजिक पत्रकारिता का महत्व

13.10 सारांश

13.11 शब्दावली

13.12 कुछ उपयोगी पुस्तक

13.13 निबन्धात्मक प्रश्न

13.0 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप-

- सामाजिक पत्रकारिता के स्वरूप को समझेंगे ।
- आजादी से पहले की और आजादी के बाद की सामाजिक पत्रकारिता की विकास-यात्रा
- सामाजिक-पत्रकारिता का क्षेत्र, उसकी उपलब्धियां, समस्याएं तथा महत्व जान सकेंगे ।
- सामाजिक पत्रकारिता में विभिन्न संस्थाओं के योगदान को जान सकेंगे ।
- सामाजिक पत्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

13.1 प्रस्तावना

पत्रकारिता जनसंचार (प्रिण्ट मीडिया) की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विधा है । दूरदर्शन ' का अत्यधिक प्रसार हो जाने पर भी बिना पत्र-पत्रिका पढ़े रह पाना आज भी उतना ही कठिन है जितना पहले था । अब तो पत्रकारिता इलाक्ट्राय मीडिया से भी जुड़ गई है । दूरदर्शन, आकाशवाणी, इण्टरनेट आदि पर भी 'पत्रिका' (मैग्जीन) शीर्षक के पत्रकारिता का समावेश हो गया है । समाचार आदि भी पत्रकारिता के ही अंग है ।

पत्रकारिता के भी अनेक अंग हैं - खेल पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता, ब्रेल पत्रकारिता, फिल्मी पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, वाणिज्य पत्रकारिता, ग्रामीण पत्रकारिता, सर्वोदय

पत्रकारिता, हास्य पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता (महिलोपयोगी पत्र-पत्रिका आदि द्वारा) आदि । इनके अलावा एक और पत्रकारिता भी है, जिसकी ओर लोगों का कम ही ध्यान गया है । वह है - ' सामाजिक पत्रकारिता' । वैसे तो सभी प्रकार की पत्रकारिता किसी न किसी रूप में समाज से जुड़ी हुई है परन्तु यहां ' सामाजिक-पत्रकारिता' से तात्पर्य है -विभिन्न समाजों, बिरादरियों द्वारा निकाली गई पत्र-पत्रिकाएं, उनके द्वारा की गई पत्रकारिता । विभिन्न समाजों, बिरादरियों ने समय-समय पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है । इसके अलावा भी अनेक व्यक्तियों ने समाज-सुधार, समाजोन्नति को लेकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, संपादन, संचालन किया है । यह सब सामाजिक-पत्रकारिता' का अंग है ।

13.2 सामाजिक पत्रकारिता का स्वरूप

सामाजिक पत्रकारिता को जानने से पहले ' पत्रकारिता' को समझ लेना आवश्यक है । पत्रकारिता आंग्ल शब्द 'जर्नलिज्म' का पर्याय है जो फ्रैंच शब्द 'जर्नी ' से बना है, जिसका अर्थ है - 'एक दिन का कार्य' अथवा 'रोजाना के कार्य ' । आक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार' पत्रकारिता लेखन और जनसामान्य की स्थितियों का संग्रह, सुरक्षा व समूह्‌वृत्ति है " । 'पत्रकारिता का सामान्य अर्थ है - 'पत्रकार का काम या व्यवसाय' 'हिन्दी शब्द सागर के अनुसार' ।

पत्रकारिता सामाजिक कार्य-कलापों का विवरण प्रस्तुत करने वाली, सामाजिक जीवन की नियामिका, सामाजिक जागरूकता की परिचायिका और मानवीय गुणों के विकास में सहायिका है । पत्रकारिता लोक-शिक्षण और लोक-जागरण का सशक्त माध्यम है । यह विशुद्ध 'सेवावृत्ति' (मिशन) का कार्य है । यह जन-जीवन से जुड़ी हुई है । यह जनहित की रक्षा करती है । सामाजिक विकृतियों को दूर करके सुधारों, मंगलकारी निर्माण-तत्वों और मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है ।

सम्पूर्ण समाज अथवा समाज-विशेष की उन्नति, सुधार आदि उद्देश्यों को लेकर जो पत्रकारिता की जाती है, वह 'सामाजिक पत्रकारिता' कहलाती है । इस उद्देश्य के लिए व्यक्तियों, सामाजिक संस्थाओं, समाज-विशेष, बिरादरियों द्वारा पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं संचालन किया जाता है । इस क्षेत्र में व्यक्ति इस प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं का संपादन करते हैं ।

13.3 सामाजिक पत्रकारिता उद्भव और विकास

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव 30 मई, 1826 से माना जाता है जब पं. युगलकिशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्तण्ड' पत्र का प्रकाशन-संपादन आरम्भ किया । लगभग तभी से सामाजिक पत्रकारिता का भी प्रादुर्भाव हुआ । महान समाज-सुधारक राजा राम मोहनराय ने 1829 में 'ब्रह्मसमाज' की स्थापना करके सामाजिक सुधार का सूत्रपात किया । उन्होंने सती प्रथा और बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का जमकर विरोध किया । अपने कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने बंगला- अंग्रेजी में 'ब्राह्मेनिकल मैगजीन' का संपादन-प्रकाशन किया तथा अन्य पत्र भी निकाले । पत्रकारिता के जरिये उनका सुधारवादी आन्दोलन निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होने लगा । इस प्रकार उन्होंने सामाजिक पत्रकारिता की शुरूआत की ।

सन् 1875 में ' आर्य समाज' की स्थापना करके स्वामी दयानन्द ने समाज-सुधार आन्दोलन को और अधिक गति प्रदान की । उन्होंने आडम्बरों के विरोध, दीनोद्धार, महिलाओं की प्रगति आदि पर बल दिया । आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित अनेक पत्रकारों 'ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन-प्रकाशन किया । आर्य-समाज की अनेकानेक संस्थाओं ने भी बहु त सी पत्रपत्रिकाओं का प्रकाशन करके अपने कार्य को आगे बढ़ाया ।

13.3.1 आजादी से पूर्व

सन् 1870 में मुंशी बख्तावर सिंह ने शाहजहांपुर (उप्र.) से सामाजिक पत्र 'आर्य-दर्पण' का सम्पादन-प्रकाशन आरम्भ किया । उन्होंने 1877 मे 'आर्यभूषण' पत्र भी निकाला । सन् 1878 में साप्ताहिक 'आर्य समाचार' (कल्याणराय) निकली। सन् 1880 में जैन पत्रिका 'प्रयाग' (जीयालाल) और 'क्षत्रिय पत्रिका' का प्रकाशन शुरू हु आ तो1883 में प्रतापनारायण मिश्र के संपादन में कानपुर से 'ब्राह्मण' पत्र प्रकाशित हु आ । भीमसेन शर्मा ने इटावा से'ब्राह्मण सर्वस्व' निकाला । सन् 1884 में 'आर्य-विनय' (मुरादाबाद, रुद्रदत्त शर्मा), 'जैन बोधक' (शोलापुर से), 'कायस्थ व्यवहार' (फतहपुर, उ.प्र. से) तथा 14 नवम्बर, 1884 को फरूखनगर (गुड़गांव) से हरियाणा का पहला पत्र 'जैन प्रकाश' (लाहौरे से भी निकला) । सन् 1885 में ब्रह्समाज द्वारा मराठी पत्र 'सत्यबोधिनी' निकाला गया जो कभी-कभी अंग्रेजी में भी सामग्री देता था । 'जैनबोधक' (शोलापुर) का संपादन सखाराम दोशी करते थे । सन् 1887 में कलकत्ता से प्रसिद्ध सामाजिक पत्र 'आर्यावर्त' का प्रकाशन शुरू किया गया । 1888 में मुरादाबाद, आगरा, लखनऊ आदि स्थानों से रूद्रदत्त शर्मा के संपादन में 'आर्य मित्र' का प्रकाशन हु आ ।'कायस्थ शुभचिन्तक' पत्र भी निकला ।

सन् 1889 में कन्हैयालाल सिंह के संपादन मे गुड़गांव से पाक्षिक 'द्विज' (अब बांग्लादेश) तथा 1890 में पदमसिंह के संपादन में गुड़गांव से ही मासिक 'जाट समाचार' निकला । सन् 1890 में पदमसिंह शर्मा के संपादन में अजमेर से 'परोपकारी' तथा दरभंगा से 'कायस्थ हितैषी' का प्रकाशन हु आ तथा 1891 में फतहपुर (राजस्थान) से 'अग्रहरि वैश्य बन्धु' सामने
आया । इसी वर्ष 'जैन हितैषी' (पन्ना लाल) भी निकला । सन् 1895 में 'जैनगजट' (अजमेर) 'जैनगजट (मथुरा, सूरजभान), 'आर्य मार्तण्ड (अजमेर, रामसहाय), 'आर्यावर्त' (रांची, बालकृष्ण सहाय), 'जैन समाज' (लखनऊ) तथा उर्दू 'जैनहित उपदेशक' (मथुरा, सूरजभान) प्रकाशित हु ए । सन् 1897 में फरूखनगर (गुड़गांव), से 'जैनभास्कर', दरभंगा से 'कायस्थ पत्रिका' 1899 में जबलपुर से साप्ताहिक 'क्रिश्चियन सेवक' तथा 1900 में बम्बई में 'जैन मित्र' का प्रकाशन हु आ । 'कायस्थ समाचार' भी निकला ।

सन् 1901 से आजादी प्राप्ति तक अनेक सामाजिक पत्र निकाले गए । इनमें प्रमुख है- सारस्वत सर्वस्व (1903, कलकत्ता, गोविन्दनारायण मिश्र), 'वैश्योपकारक' (1904, कलकत्ता, शिवचन्द भरतिया, बाद में माधवप्रसाद मिश्र), कायस्थ हितकारी, मारवाड़ी बन्धु, जैन पताका (1908), 'वीरभारत' (1909), 'जैन नारी हितकारी' (1910 ज्योतिप्रसाद), 'औदुम्बर' (1911, काशी, हरिभाऊ उपाध्याय), 'भार्गव ब्राह्मण हितैषी' (दिनारा, पन्नालाल द्विवेदी), 'तैली समाचार' (बाढ़, पटना), 'जैन प्रकाश' (1913), 'जैन प्रभात' (1914), 'जैन समाज' (1917 टेकचन्द सिंधी), 'ओसवाल' (191 8), कान्यकुब्ज (1919, जबलपुर), 'हयवंश समाचार' (1919, ग्वालियर, फन्नूलाल), माहु री मयंक (हँसुआ, गया),

दिगम्बर जैन, जैन मित्र (सूरत, एम. के. कापड़िया), श्रीमाली शुभेच्छुक (1920, अहमदाबाद, टी. एम. त्रिवेदी), समाज सेवक (1921, नागपुर, राधामोहन गोकुलजी), खंडेलवाल हितैश (बम्बई), जैन महिलादर्श (1922, सूरत, एम. के. कापड़िया, चन्द्रावती), खंडेलवाल जैन हितैषी (1924 सोलापुर) आर्यजगत (लाहौर, खुशालचन्द खुरचंद) 'आर्यगजट' (उर्दू में) मारवाड़ी मित्र (1925, पूना), कान्फ्रेंस प्रकाश (अकोला, लल्लूभाई जौहरी), 'ब्राह्मण' (1926, अम्बाला, जगन्नाथ कौशल), वैश्य समाचार (1917, दिल्ली, महात्मा मुंशीराम अर्थात् स्वामी श्रद्धानन्द), हिन्दू पंच (राम लाल वर्मा), 1928 में औदिच्य बन्धु मासिक (इन्दौर), मैड़ प्रभाकर (भिवानी, नानूराम वर्मा), आर्य (लाहौर), क्षत्रिय (1929, लखनऊ), 1933 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा 'हरिजन सेवक' (अहमदाबाद), जैन ध्वज (1936), हरिश्चन्द्र (1937, दिल्ली), उषा (1938, कनखल, संतराम बी.ए.) मंगल (1942, इन्दौर, श्वेताम्बर संघ), 1945 में पारीक (जयपुर, नन्दकिशोर पारीक) तथा मैद मित्र (इन्दौरा), क्षत्रिय वीर (आगरा) कायस्थ वीर एवं स्काउट (ग्वालियर) ।

13.3.2 आजादी के बाद

स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता ने भी जन-जागृति का सन्देश देना जारी रखा । समाज-सुधार का कार्यक्रम चलता रहा । समानता, सुदृढ़ता, भाईचारा, कुरीति-उन्मूलन जैसी बातों को महत्व दिया गया । दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, कन्या वध, वैश्यावृत्ति, छुआछूत, मृत्यु भोज, अंध- विश्वास आदि बुराइयों का विरोध किया गया और अच्छी बातों का प्रचार-प्रसार किया गया । आजादी के बाद भी सामाजिक पत्र निरन्तर प्रकाशित होते रहे । इनमें कुछ नाम इस प्रकार है - मा ज्योति (1947, जम्मू समाज सुधार समिति, दुर्गाप्रसाद काचरु), मेढ़ क्षत्रिय समाचार (1949, इन्दौर), अहिंसावाणी (1950, महेन्द्र प्रचंडिया, एटा), 'सुधारक (1953, भगवानदेव), हरिजन सेवक, (1954, सतारा जिला, ग.र. अग्रवाल, उर्दू में भी), सेवा समाज (प्रमिला ओसवाल, हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी), अंत्योदय (1959, इन्दौर, म. प्र. हरिजन सेवक संघ), हरिजन पुकार (1960, रोहतक, करतारदेवी), समाज ज्योति (मुजफ्फरनगर, शीतल प्रसाद), अग्रवाही (1962, वेदप्रताप वैदिक, इन्दौर), महाजन मित्र माथुर (1965, दिल्ली), अग्रवाल जागृति (1966, बम्बई, त. ह अग्रवाल), आदिवासी गर्जना (1966, नागपुर), माहेश्वरी (1967, विश्वंभर प्रसाद शर्मा), मंगल मिलन (1973, दिल्ली, रामावतार गुप्त), केसरवानी ज्योति पत्रिका (1978, इलाहाबाद, भोलानाथ केसरवानी), राजवंश ज्योति (मेरठ, राकेश कुमार राना) जागृत महिला (1961, नागपुर, सत्यबाला तायल), औचित्य ब्राह्मण (हरियाणा, शिवप्रकाश द्विवेदी) ।

आर्य समाज की संस्थाओं द्वारा दिल्ली से आर्यजगत, आर्य मर्यादा, सार्वदेशिक आदि पत्र निकाले गए । प्रकाशवीर शास्त्री ने 'आर्य समाज' पत्र निकाला । जैन समाज के अन्तर्गत श्वेताम्बर जैन सन्देश (1946, आगरा, जवाहर लाल लोढ़ा), अहिंसा (जयपुर, इन्द्रलाल शास्त्री), जिनवाणी (डा. नरेन्द्र भानावत), वीरवाणी (चैनसुखदास भंवरलाल न्यायतीर्थ), महावीर सन्देश, जैनपथ प्रदर्शक (रतन चन्द भारिल्ल), समन्वयवाणी (शैल बंसल, अखिल बंसल), जैन समाज (जिनेन्द्र कुमार जैन), अणुव्रत, वल्लभ सन्देश, तीर्थंकर, जैन दर्शन, जैन प्रकाश (दिल्ली) आदि पत्रों का प्रकाशन हुआ ।

अग्रगामी (जयपुर, अग्रवाल समाज), अग्रजीवन (जयपुर, कमला देवी अग्रवाल), अग्रोहाधाम (हिसार), अग्रोदक (जयपुर, गिर्राजप्रसाद मित्तल), अग्रवाल समाज (हरिकिशन अग्रवाल), अग्रसेन सन्देश (नागपुर), अग्रवाल गजट (इन्दौर), केडिया गजट (कलकत्ता, सीताराम केडिया), अग्रवाल ज्योति (श्रीगंगानगर, डा. चंपालाल गुप्त), अग्रसेन वाणी (गंगापुर), खंडेलवाल सन्देश, खंडेलवाल महासभा पत्रिका, जयपुर), खंडेलवाल परिवार (आगरा), खंडेलवाल हितैषी (अजमेर), खंडेलवाल सेवक (जयपुर), माहेश्वरी बाल विकास (उदयपुर), माहेश्वरी सेवक (बीकानेर), विजयवर्गीय संदेश (कोटा), विजय बन्धु (जयपुर), वरनवाल चान्द्रिका (वाराणसी), प्रकाश केसरी (गया), शैड्रिक (पटना, विश्वनाथ प्रसाद साहू) वैश्य सहोदर (कानपुर), वैश्यों का उस्तंत्र (डॉ. रामेश्वर दयाल गुप्त, ज्वालापुर), माहौरमित्र (एटा, सत्यदेव आर्य), हितकारी (बरेली), आदिवासी जागृति (अजमेर), गुर्जरगौड़ सन्देश (अजमेर), वैश्य ब्राह्मण मार्तण्ड (अजमेर), वीररावत (अजमेर), कोली राजपूत (अजमेर), धाकड़बंन्धु (कोटा), सनाढ्य सौरभ (कोटा), माली बना (कोटा), मीना संसार (कोटा), औदिच्य सन्देश (कोटा), वैष्णव सेवक (उदयपुर), शोषित समाज (रायसिंह नगर), अरोड़वंश पत्रिका (श्रीगंगानगर), बालिया बिरादरी (श्रीगंगानगर), कायस्थ बिरादरी (ग्वालियर), कायस्थ परिवार, (दिल्ली), कुलश्रेष्ठ बन्धु (जयपुर), अन्तर्जातीय परिवार (जयपुर) आदि अनेक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं । गुर्जर, यादव, मुसलिम आदि अनेक समाजों के भी पत्र यंत्र-तंत्र निकल रहे हैं, जिनकी विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है ।

इनके अलावा बिहार से द्विज पत्रिका, क्षत्रिय पत्रिका, क्षत्रिय समाचार, खत्री हितैषी (चारों पटना से) भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका, रोनियार हितैषी, रोनियार वैश्य, कायस्थ कौमुदी, मध्यदेशीय वणिक अविका । रोड़वंश समाचार (बम्बई, जी. पी. जानी), ब्राह्मण समाचार (जगाधरी, हरियाणा,दत्त शर्मा), रोड़वंश (हिसार). विधवा सहायक (हिसार), जातपात तोड़क (लाहौर, संतराम बी. गज विकास (तिनसुकिया, असम पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन), जम्मू-कश्मीर में

फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन पत्रकारिता का आरम्भ आला हंसराज द्वारा सम्पादित प्रकाशित ' महाजन पत्र' और 'डोगरा गजट' से माना जाता है । ये दोनों पत्र में जम्मू से उर्दू प्रकाशित हुए थे । क्षत्रिय पत्रिका लाहौर से निकलती थी । आर्योदय और ' आर्य पत्रिका' मारीशस से निकलती है । ट्रिनिडाड से ' आर्य सन्देश' निकला ।

आजकल अधिकांश समाज, बिरादीरयां नियमित पत्र-पत्रिका निकालने के बजाय समय-समय पर 'स्मारिका' ही अधिक निकालती है ।

बोध प्रश्न -?

1. सामाजिक पत्रकारिता का अर्थ बताइए ।
2. सामाजिक पत्रकारिता में राजा राममोहन राय का योगदान 50 शब्दों में लिखिए ।
3. सामाजिक पत्रकारिता की सामायिकता एवं उपयोगिता पर अपने विचार प्रकट कीजिए
4. सामाजिक पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए ।

13.4 सामाजिक पत्रकारिता का क्षेत्र

सन् 1926 में बाबू रामलाल वर्मा 'हिन्दू पंच ' शीर्षक से एक पत्र निकाला । इसका उद्देश्य सामाजिक संगठन, शुद्ध संस्कार, समाज-सुधार आदि था ।

प्रमुख सामाजिक पत्र 'जैनमित्र' के 5 नवम्बर, 1987 के अंक में इसके उद्देश्य को प्रकट करते हुए कहा गया है- 'इसका अपना निजी लक्ष्य है और वह यह है कि समाज में व्याप्त अंध- श्रृद्धा, पाखण्ड, ढोंग, आडम्बर को नष्ट कर समाज का सही मार्गदर्शन करना, समाजोत्थान के लिए नए-नए आन्दोलन चलाना ।

कायस्थ परिवार (दिल्ली) मासिक के संपादक आर. सी. श्रीवास्तव ने अपने सभी कायस्थ वर्गों को जोड़कर पत्र के उद्देश्य का उल्लेख (जून 1992) किया है - ' हमारा उद्देश्य कायस्थ समाज को सूत्रबद्ध करने, समाज की प्रतिभाओं से परिचित कराने तथा युवावर्ग से आपसी रिश्तों की पहचान कराना तथा सही मार्गदर्शन देना है । तभी सामाजिक बुराइयों से बचा जा सकता है ।

वस्तुत: सामाजिक-पत्रकारिता का ध्येय एक ओर तो समाज में व्याप्त कुरीतियों -पर्दा -प्रथा, आभूषणप्रियता, बाल-विवाह, अनमेल - विवाह, दहेज-प्रथा, मृत्यु-भोज आदि को दूर कर पिछड़े व्यक्तियों को आर्थिक सहायता और उनका उत्थान, आजीविका, शिक्षा का प्रसार, मनोरंजन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करना, विधवा-विचार जैसी बातों को प्रोत्साहन देना, सामाजिक एकता, नशाबन्दी, समानता की भावना का विकास, परिवार नियोजन, समाज प्रगति रहा है ।

13.5 सामाजिक पत्रकारिता की उपलब्धियां

यदि हम सामाजिक पत्रकारिता के इतिहास और वर्तमान प्ररिप्रेक्ष्य को देखें तो हम यह पायेंगे कि इसकी उपलब्धियां व्यापक और महत्वपूर्ण है । इसके द्वारा एक ओर तो सम्पूर्ण समाज का अथवा अलग-अलग पत्र-पत्रिका द्वारा समाज-विशेष की एकता, समानता, सहयोग और उन्नति का कार्य करने में हाथ बंटाया गया है, दूसरी ओर विभिन्न सामाजिक बुराइयों के प्रति जागृति उत्पन्न कर उनको दूर करने में सहयोग प्रदान किया गया है । कमोवेश सभी समाज, सामाजिक-संस्थाओं, बिरादरियों का तथा उनके द्वारा की गई पत्रकारिता का यही ध्येय रहा है । इन्हीं उद्देश्यों को लेकर कुछ व्याक्तियों ने स्वतंत्र पत्रकारिता भी की है, जो कि सामाजिक पत्रकारिता का ही अंग है ।

सामाजिक पत्रकारिता के सहयोग से लोगों में वैचारिक चेतना बढ़ी है, उनका रहन -सहन सुधरा है, सामाजिक बुराइयों कम हुई है, वैवाहिक-सुविधाएं विकसित हुई है उनमें एकता. बढ़ी है और दूसरी बिरादरियों के प्रति सम्मान की भावनाओं में वृद्धि हुई है ।

13.6 सामाजिक पत्रकारिता ' कुछ समस्याएं

निस्सन्देह समाज के उत्थान में सामाजिक पत्रकारिता का उल्लेखनीय योगदान रहा है, परन्तु इसे अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है । सामाजिक पत्रकारिता चूंकि व्यावसायिक पत्रकारिता नहीं रही, इसलिए उसे आर्थिक कष्ट बहुत झेलना पड़ा है । सामाजिक पत्रपत्रिका के लिए ग्राहक जुटाना, उसके मुद्रण, प्रकाशन, वितरण की समुचित व्यवस्था करना, विज्ञापन संग्रह करना अत्यन्त कठिन कार्य है । संपादकों को प्राय: अवैतनिक अथवा अत्यल्प वेतन पर कार्य करना होता है । अन्य व्यक्ति

भी प्राय: ऐसा ही करते हैं । कभी-कभी कुशल संपादकों की व्यवस्था नहीं हो पाती । अत: पत्र- पत्रिका को लम्बे अर्से तक चला पाना काफी मुश्किल होता है । अर्थ-प्राप्ति के अभाव में बहु त से व्यक्ति इसमें रुचि नहीं लेते अथवा जल्दी ही इससे पल्ला झाड लेते हैं । स्वार्थवश कुछ लोग इसे निजी प्रचार का जरिया बना लेते हैं ।

व्यावसायिक पत्रकारिता से तड़क भड़क, प्रसार, रोचकता आदि के मामले में मुकाबला करना इस सामाजिक एवं अव्यवसायिक पत्रकारिता के लिए सम्भव नहीं होता । इसके कार्यकर्ता पत्रकारिता की तकनीक के पारंगत नहीं होते । उनके पास इस कार्य के लिए समय नहीं होता । एक ओर सामग्री-संचय की समस्या भी अपनी जगह होती है । सामाजिक लेखन के साथ संपादन-दक्षता की भी प्राय: कमी रहती है ।

13.7 विभिन्न संस्थाओं का योगदान

सामाजिक पत्रकारिता में स्वतंत्र पत्रकारों, इससे जुड़े अन्य व्यक्तियों के अलावा विभिन्न संस्थाओं का अत्यधिक योगदान रहा है । ब्रह्म समाज, आर्य समाज, विभिन्न समाज, बिरादरियों के अलावा बड़ी संख्या में अन्य सामाजिक संस्थाओं की भूमिका इस पत्रकारिता क्षेत्र में उल्लेखनीय रही है । कुछ संस्थाओं की भूमिका सीमित, संकीर्ण, अनुदार हो सकती है, परन्तु उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है ।

कुछ सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप भले ही बहु त भव्य, आकर्षक, पत्रकारिता की दृष्टि से बहु त ऊंचा स्तर न रहा हो, परन्तु उनकी सेवा-भावना का कोई जवाब नहीं है । कुछ सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं के संपादक, प्रकाशक तो महान पत्रकार रहे हैं जिन्होंने पत्रकारिता जगत को गौरवान्वित किया है । अनेक प्रदेशों में तो पत्रकारिता के उद्भव काल से ही सामाजिक पत्रकारिता अंकुरित एवं पल्लवित होती रही है । इसके योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सख्ती ।

13.8 प्रमुख सामाजिक पत्रकार

हमारे देश में सामाजिक पत्रकार बड़ी संख्या में हु ए हैं, जिनकी चर्चा अन्यत्र जा चुकी है । अनेक सामाजिक पत्रकार तो देश के प्रमुख पत्रकारों में गिने जाते हैं । राजा राममोहन राय महान समाज-सुधारक ही नहीं, महान पत्रकार भी थे । उन्होंने अनेक पत्रों का संपादन-प्रकाशन करके अपने प्रखर पत्रकार-रूप को भी सामने रखा । महात्मागाँधी ने 'हरिजन सेवक' निकालकर सामाजिक-पत्रकारिता की । हरिभाऊ उपाध्याय, मुंशी बख्तावरसिंह, माधवप्रसाद मिश्र, महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), प्रतापनारायण मिश्र, राधामोहन गोकुलजी, सन्तराम बी. ए., खुशालचन्द खुरसंद, लाला हंसराज जैसे पुरोधा सामाजिक-पत्रकार हु ए हैं ।

आधुनिक सामाजिक पत्रकारों में एम. के. कापड़िया, बनारसीदास गुप्त, प्रकाशवीर शास्त्री, डा. रामेश्वर दयाल गुप्त, डा. नरेन्द्र भानावत, शिव कुमार गोयल, डॉ. चंपालाल गुप्त, जितेन्द्र कुमार जैन, डॉ. विष्णु पंकज आदि उल्लेखनीय है ।

13.9 सामाजिक पत्रकारिता का महत्व

सामाजिक पत्रकारिता का अत्यधिक महत्व है । पत्रकारिता के इतिहास में यदि सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख न किया जाए तो वह प्रभावहीन-सा रहेगा । पत्रकारिता के आरम्भ से लेकर अब

तक सामाजिक-पत्रकारिता लगातार आगे बढ़ती रही है । पत्रकारिता के विकास में उसका उल्लेखनीय योगदान रहा है । सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं की चर्चा के बिना पत्रकारिता की कलपना नहीं की जा सकती।

बोध प्रश्न - 2

1. सामाजिक पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
2. सामाजिक पत्रकार के रुप में महात्मा गांधी के योगदान पर 50 शब्दों में प्रकाश डालिए ।
3. हिन्दी पत्रकारिता में सामाजिक पत्रकारिता की स्थिति संतोषजनक नहीं है? क्या आप इस कथन से सहमत हैं?
4. क्या सामाजिक पत्रकारिता द्वारा समाज में परिवर्तन एवं वैचारिक क्रांति की जा सकती है?

13.10 सारांश

सामाजिक बुराइयों को दूर करने तथा समाज की उन्नति के लिए की जाने वाली पत्रकरिता को सामाजिक पत्रकारिता कहते हैं उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस पत्रकारिता का उदय हो गया था । एक ओर जहां अनेक स्वतंत्र पत्रकारों ने सामाजिक संस्थाओं ने भी पत्र निकाले दूसरी ओर वहां विभिन्न समाजों और सामाजिक संस्थाओं ने भी पत्रों का प्रकाशन किया राजा राममोहन राय महात्मा गांधी महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद), हरिभाऊ उपाध्याय' राधामोहन गोकुल जी लाला हंसराज मुंशी बख्तावरसिंह जैसे व्यक्ति सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरे और इस विद्या को समृद्ध किया । सामाजिक पत्रकारिता द्वारा दहेज बाल-विवाह अनमेल-विवाह मृत्युभोज अशिक्षा, अंध-विश्वास आदि बुराइयां दूर करने का प्रयास किया गया । समाज का जीवन-स्तर सुधारने की भी कोशिश की गई । सामाजिक- पत्रकारिता द्वारा अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है । यद्यपि इस क्षेत्र में अनेक समस्याएं भी हैं फिर भी यह दिनोंदिन निरन्तर आगे बढ़ रही है ।

13.11 शब्दावली

सामाजिक पत्रकारिता- समाज की बुराइयों को दूर कर लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के प्रयास के लिए की गई पत्रकारिता।

सामाजिक पत्रकार - वह पत्रकार जो सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत है ।

सामाजिक संस्थाएं-समाज के उन्नयन के लिए कार्यशील संस्थाएं ।

13.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. वेदप्रताप वैदिक - हिन्दी पत्रकारिता, विविध आयाम
2. कृष्णबिहारी - मिश्र-हिन्दी पत्रकारिता
3. रमेश जैन - हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास
4. रामरतन भटनागर - हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास
5. रामेश्वरदयाल गुप्त - वैश्य समुदाय का इतिहास
8. विष्णु पंकज - राजस्थान के पत्र और पत्रकार
7. प्रतापनारायण टण्डन - बृहत पत्रकारिता कोश

13.13 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सामाजिक पत्रकारिता का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

2. उन्नीसवीं शती की सामाजिक पत्रकारिता का प्रकाश डालिए ।
3. आजादी से पहले की (बीसवीं शती) सामाजिक पत्रकारिता की विकास यात्रा लिखिए ।
4. सामाजिक पत्रकारिता के क्या क्षेत्र रहे हैं?
5. सामाजिक पत्रकारिता के योगदान और महत्व पर प्रकाश डालिए ।
6. सामाजिक पत्रकारिता की क्या समस्याएं हैं?
7. सामाजिक पत्रकारिता में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का क्या योगदान रहा?
8. आजादी से पहले के सामाजिक पत्रकारों का परिचय दीजिए ।

इकाई 14 फिल्म पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 फिल्म पत्रकारिता :प्रारम्भिक काल

14.3 हिन्दी फिल्म पत्रिकाएँ

14.4 नया सिनेमा : नए समीक्षक

14.5 गंभीर सिनेमा लेखन

14.6 सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन (राष्ट्रीय पुरस्कार)

14.7 वर्तमान परिप्रेक्ष्य

14.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.9 निबन्धात्मक प्रश्न

14.0 उद्देश्य

इस इकाई में हिन्दी फिल्म पत्रकारिता के अब तक के विकास-क्रम पर विशद चर्चा की गई है । इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जान पाएंगे कि -

- हिन्दी फिल्म पत्रकारिता का क्रमिक विकास कैसे हु आ?
- प्रमुख सिने पत्र-पत्रिकाएँ कौन-सी हैं?
- सार्थक सिनेमा आंदोलन को फिल्म पत्र-पत्रिकाओं ने कैसे सहारा दिया?
- फिल्म पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति क्या है?

14.1 प्रस्तावना

हम जानते हैं कि सिनेमा अनुभव और अन्वेषण का माध्यम है । इसलिए सिनेमा की अपनी एक अलग भाषा है । उसका अपना संप्रेषण तत्व है । सिनेमा ने अपने सौ साल के जीवन में व्यापक उतार-चढ़ाव देखे हैं और आज जबकि सिनेमा अत्यंत विकसित रूप में हमारे सामने है, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस अल्पायु में निश्चित ही सिनेमा कई बार लड़खड़ाया है । आंतरिक विरोधाभास और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण सिनेमा कभी भी एक निश्चित धारा का अनुसरण नहीं कर सका । लगभग हर दौर में सिनेमा की अपनी अलग भाषा, अपना अलग कथ्य रहा है । सिनेमा की बाहरी, ग्लैमरसपूर्ण जिन्दगी के आंतरिक अंतर्द्वन्द्व भी लोगों से छिपे नहीं है और अनेकानेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सिने दर्शकों तक पहुँचते रहे हैं । इन पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से ही दर्शक जान पाते हैं कि सिनेमा का अन्वेषण जारी है, उसका सफर निरंतर चल रहा है । मायावी गलियों से गुजरने के दौरान सिनेमा को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनसे भी दर्शक परिचित हो पाते हैं और इन अर्थों में फिल्मी पत्र-पत्रिकाओं के व्यापक महत्व को नकारा नहीं जा सकता ।

14.3 फिल्म पत्रकारिता ' प्रारंभिक काल

दिलचस्प तथ्य है कि शुरू से ही फिल्म निर्माण का प्रमुख केन्द्र मुंबई ही बना रहा मगर फिल्म पत्रकारिता का केन्द्र बना दिल्ली । हालांकि मुंबई और कलकत्ता से भी हिन्दी तथा दूसरी भाषाओं में फिल्म पत्रिकाएं प्रकाशित होती रही, परन्तु सर्वाधिक पत्रिकाओं ने अपने प्रकाशन स्थल के रूप में दिल्ली को ही चुना ।

हिन्दी फिल्म पत्रकारिता की शुरूआत फिल्म निर्माण के करीब बीस साल बाद हुई । अब जबकि हिन्दी पत्रकारिता गोल्डन जुबली मना चुकी है, यह जानना और भी दिलचस्प है कि शुरूआती दौर की फिल्म पत्रिकाओं में से 'रंगभूमि' आज भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है । 'रंगभूमि' का प्रकाशन 1932 में दिल्ली से शुरू हुआ था । तब लेखराम इसके संपादक थे । कुछ साल बाद ही'रंगभूमि' का प्रकाशन रुक गया । मगर 1941 में धर्मपाल गुप्ता ने इसका प्रकाशन फिर शुरू किया । इससे पहले धर्मपाल गुप्ता जगन्नाथ प्रसाद झालानी की अंग्रेजी स्थित पत्रिका 'मूवीज' में काम कर चुके थे । 'रंगभूमि' को उन्होंने नए सांचे में ढाला । वे खुद ही सारी सामग्री तैयार करते थे । 'रंगभूमि' का कलेवर पाठकों को इतना भाया कि धीरे-धीरे इसकी प्रसार संख्या बढने लगी । सन् 1958 में गुप्ताजी ने 'मुगले आजम' पर 'रंगभूमि' का जो विशेषांक छापा, उसकी तीस हजार प्रतियां बिकी थी । तब अंग्रेजी फिल्म पत्रिका 'फिल्म इंडिया' के आगे 'रंगभूमि' की तीस हजार प्रतियां बिकना वास्तव में बड़ी बात थी । सन् 1941 से लेकर आज तक 'रंगभूमि' प्रकाशित हो रही है ।

14.4 हिन्दी फिल्म पत्रिकाएँ

'रंगभूमि' के आस पास ही 1932 में दिल्ली से ही 'नव चित्रपट' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । मगर इसके बारे में ज्यादा ब्यौरा नहीं मिलता । 'रंगभूमि' को 'चित्रपट' ने टक्कर दी जो ऋषभचन्द जैन के संपादन में 1936 में दिल्ली से शुरू हुआ था ।'रंगभूमि' और 'चित्रपट' की लोकप्रियता को देखकर कुछ पत्रकारों ने अंग्रेजी में भी फिल्म पत्रकारिता की शुरूआत की और इस तरह बंबई में से 'फिल्म इंडिया' और 'टॉकी हैरल्ड' तथा लाहौर से 'फिल्म पिक्टोरियल' और 'स्क्रीन वर्ल्ड' जैसी पत्रिकाआं का प्रकाशन होने लगा । मगर जल्द ही ये पत्रिकाएं बंद हो गई ।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी में कई फिल्म पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा । जिनमें ख्वाजा अहमद अब्बास की 'सरगम' और संपतलाल पुरोहित की 'युगछाया' प्रमुख है । सन् 1958 में उर्दू पत्रिका ' शमा' ने अपना हिन्दी संस्करण 'सुषमा' शुरू किया । यह पत्रिका आज भी निकल रही है । इन्हीं दिनों शुरू हुई 'फिल्म दुनिया' काफी लोकप्रिय हुई ।सन् 1963 में टाइम्स ऑफ इडिया ग्रुप ने 'सुचित्रा' नाम से हिन्दी में फिल्म पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया । 'सुचित्रा' का प्रकाशन बाद में 'माधुरी' के नाम से होने लगा और 1989 में 'माधुरी' को अंग्रेजी पत्रिका 'फिल्म फेयर' में ही समाहित कर दिया गया । इसमें कोई शक नही है कि 'माधुरी' ने हिन्दी फिल्म पत्रकारिता को एक नई पहचान दी । इसमें सिनेमा संबंधी विषयों पर गंभीर और विश्लेषणात्मक आलेख छापे जाते थे । हालांकि अंग्रेजी फिल्म पत्रिकाओं के मुकाबले इसकी साज-सज्जा और छपाई साधारण हुआ करती थी । मगर दिलचस्प विषय वस्तु के कारण पाठकों के बीच 'माधुरी' काफी लोकप्रिय थी । इसे एक संपूर्ण फिल्म पत्रिका का दर्जा दिया जा सकता था । शुरू में 'माधुरी' में फिल्म समीक्षाएं, विश्लेषणात्मक आलेख और गंभीर चर्चाओं को ही

स्थान दिया जाता था । मगर बाद में इसमें गॉसिप कॉलम शामिल कर लिए गए, लेकिन फिल्म पत्रिका के कुल कलेवर के मुकाबले गॉसिप कॉलम को कोई महत्व नहीं दिया जाता था । लेखा-जोखा श्रृंखला के तहत 'माधुरी' ने कई फिल्म हस्तियों का सम्पूर्ण कला-वृत छापा जो पाठकों ने काफी पसंद किया।

फिल्म साप्ताहिकों में इंडियन एक्सप्रेस समूह के 'स्क्रीन' (अंग्रेजी) ने अपना एक अलग स्थान बनाया है । यह साप्ताहिक सिने प्रेमियों, कलाकारों और फिल्म निर्माता-निर्देशकों में समान रूप से लोकप्रिय है । 'स्क्रीन' ने 1991 में अपना हिन्दी संस्करण भी शुरू किया जो अंग्रेजी संस्करण जैसी लोकप्रियता हासिल नहीं कर सका और 1996 में इसका प्रकाशन बंद हो गया ।

14.5 नया सिनेमा ' नए समीक्षक

फिल्म पत्रिकाओं की बढ़ती लोकप्रियता से उत्साहित होकर उन पत्र-पत्रिकाओं ने भी फिल्म संबंधी सामग्री का प्रकाशन शुरू कर दिया । जिनका विषय फिल्म नहीं था । इनमें धर्मयुग, सरिता दिनमान और साप्ताहिक हिन्दुस्तान और नवभारत टाइम्स के नाम प्रमुख हैं । 'दिनमान' ने फिल्म समीक्षा को एक गांभीर्य प्रदान किया । पाठक इसमें छपने वाली फिल्म समीक्षाओं को बड़े चाव से पढ़ते थे । यही स्थिति ' धर्मयुग' की थी । इसमें छपने वाली समीक्षाओं में फिल्म के लगभग हर पहलू का गंभीर विश्लेषण किया जाता था और फिल्म की कलागत ऊँचाइयों को स्पष्ट किया जाता था । जिन दिनों हमारे यहां सार्थक सिनेमा का आंदोलन शुरू हुआ, तब ' धर्मयुग' सरीखी पत्रिकाओं ने इस आंदोलन को काफी सहारा दिया। नए सिनेमा को पनपने के लिए इन पत्रिकाओं ने अपने यहां सार्थक सिनेमा पर विस्तृत आलेख छापे और इस तरह दर्शकों की उत्सुकता बढ़ाई । यही काम हिन्दी के समाचारपत्रों ने किया । नवभारत टाइम्स, वीर प्रताप, नई दुनिया और नवजीवन जैसे अखबारों ने फिल्म विषयक सामग्री को प्रमुखता से छापना शुरू कर दिया । अब तो लगभग प्रत्येक समाचारपत्र और पत्रिका में फिल्म संबंधी सामग्री नियमित रूप से दी जाने लगी है । मगर तब सिनेमा संबंधी सामग्री के प्रकाशन से ज्यादा से ज्यादा दर्शक फिल्मों की ओर आकृष्ट हुए और इस तरह सिनेमा जन्‍जन तक पहुँच गया।

मौजूदा दौर में भी अनेक फिल्म पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है । फिल्म निर्माण का केन्द्र बंबई होने के बावजूद फिल्म पत्रकारिता का केन्द्र आज भी दिल्ली ही है । हिन्दी की ज्यादातर पत्रिकाएं दिल्ली से प्रकाशित हो रही है और अधिकांश पत्रिकाएं सफलतापूर्वक चल रही है । सैकड़ों फिल्म पत्रिकाएं है मगर जब भी कोई नई पत्रिका ठीक-ठाक कलेवर के साथ बाजार में आती है तो अच्छा खासा ग्राहक वर्ग आसानी से मिल जाता है ।

14.6 सिनेमा पर गंभीर लेखन

इंदौर के दैनिक 'नई दुनिया' ने हिन्दी फिल्म पत्रकारिता के क्षेत्र में जो काम किया है, वह मील का पत्थर साबित हुआ है । नई दुनिया' ने कई फिल्म विशेषांक प्रकाशित किए जो बेजोड़ और लाजवाब सिद्ध हुए है । सन् 1988 में भारतीय सिनेमा के प्लेटिनम जुबली वर्ष के मौके पर नई दुनिया ने पहला विशेषांक छापा । इसमें भारतीय सिनेमा के अब तक के गौरवपूर्ण सफर का सिलसिलेवार ब्यौरा शामिल किया गया है । बारह रुपए की मामूली कीमत पर बड़े आकार के दो सौ पृष्ठों में 'नई दुनिया' ने गागर में सागर भरने का काम किया । सन् 1989 में उसने 'सरगम का सफर' शीर्षक से एक और विशेषांक छापा जिसमें फिल्म संगीत पर प्रामाणिक और तथ्यपरक जानकारी जुटाई गई । अगले साल

1990 में तीसरा विशेषांक निकाला 'परदे की परियां' इस विशेषांक में 1913 से 1990 तक फिल्म आकाश की तारिकाओं के अंतरंग संस्मरण, इंटरव्यू परिचय और जीवन-वृत्त शामिल किए गए । चौथा विशेषांक नायकों पर केन्द्रित है । इस तरह एक के बाद एक विशिष्ट फिल्म विशेषांक निकाल कर 'नई दुनिया' ने साबित कर दिया कि हिन्दी में भी सार्थक और गंभीर फिल्म पत्रकारिता की जा सकती है ।

लगभग ऐसा ही प्रयास मध्य प्रदेश फिल्म विकास निगम ने किया । निगम ने हिन्दी में द्वैमासिक पत्रिका 'पटकथा' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसमें सिनेमा पर सिर्फ गंभीर और विवेचनात्मक आलेखों को ही स्थान दिया जाता था । 'पटकथा' का पहला अंक विख्यात फिल्मकार सत्यजित राय पर केन्द्रित था, जिसमें राय का लंबा इंटरव्यू उनकी फिल्म निर्माण शैली, फिल्मों के बिम्ब और प्रतीक तथा उनकी प्रमुख फिल्मों का विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया था । यह अंक काफी लोकप्रिय रहा। बाद में पटकथा की विषय-वस्तु इतनी गंभीर हो गई कि आम पाठक वर्ग से यह पत्रिका एकदम दूर हो गई ।

हिन्दी की अन्य प्रमुख पत्रिकाए,' हैं - - 'फिल्म कलियां', 'चित्रपट', 'युगछाया' 'मेनका', 'फिल्म रेखा', 'फिल्म सिटी' और ' मायापुरी' । अंग्रेजी में निकलने वाली पत्रिकाओं में 'डीप फोकस' और 'सिनेमा इन इंडिया' अच्छी और उपयोगी सामग्री दे रही है । इन पत्रिकाओं में सभी भाषाओं की भारतीय फिल्मों पर हर अंक में अच्छी खासी सामग्री प्रकाशित की जाती रही है । 'सिनेमा इंडिया इंटरनेशनल' भी गंभीर और सार्थक सामग्री के कारण लोकप्रिय है । हालांकि इन तीनों पत्रिकाओं की वितरण व्यवस्था इतनी खराब है कि नियमित रूप से पाठकों तक कभी नहीं पहुंच पाती है, मगर इनकी विषय- वस्तु के पाठक इन्हें खरीदने को उत्सुक रहते हैं ।

14.7 सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन (राष्ट्रीय पुरस्कार)

सिनेमा से संबद्ध विषयों पर गंभीर और सार्थक लेखन को बढ़ावा देने की दृष्टि से प्रति वर्ष दो राष्ट्रीय पुरस्कारों का प्रावधान भी है । इन पुरस्कारों की अनुशंसा पाटिल फिल्म निरीक्षण कमेटी ने की थी । कमेटी की सिफारिश पर सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने फिल्मों और फिल्मकारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार तो 1953 में शुरू कर दिया । मगर सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक और सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के पुरस्कार 1981 में शुरू किए गए । सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन फिल्म समारोह निदेशालय द्वारा इन पुरस्कारों के लिए प्रतिवर्ष प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती हैं ।

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार का उद्देश्य पुस्तकों, लेखों, समीक्षकों आदि के प्रकाशन के माध्यम से कला : रूप में सिनेमा के अध्ययन तथा विवेचन और समालोचनात्मक विश्लेषण को बढ़ावा देना है ।

पुरस्कारों का विवरण इस प्रा कार है -

1. **सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक :** पुस्तक के लेखक / लेखकों को स्वर्णकमल और 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार । संयुक्त लेखकों की दशा में नकद पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं में बराबर-बराबर बांटा जाएगा।

2. **पात्रता: 1** पुरस्कारों की जिस वर्ष घोषणा की जानी है, उससे पहले के वर्ष की 1 जनवरी तथा 31 दिसम्बर (दोनो दिन शामिल) के बीच सिनेमा पर किसी भी भाषा में भारत में प्रकाशित कोई भी पुस्तक पुरस्कार के' लिए पात्र है ।

2. अनुवाद, संक्षेप तथा संपादित या समीक्षा संबंधी रचनाएं पात्र नहीं है ।

3. उन लेखों के संग्रह, जो उसी लेखक द्वारा लिखे गये हों, परन्तु पात्रता अवधि के अंदर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए गए हों, भी पात्र हैं ।

फिल्म समारोह निदेशालय के स्टाफ के किसी सदस्य द्वारा लिखी गई पुस्तक अथवा किसी लेख को प्रवृष्टि की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

'सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक '

पुरस्कार उस वर्ष, जिसमें पुरस्कार की घोषणा की जानी है, उससे पहले के वर्ष के दौरान किसी भी भाषा में भारतीय समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और मैगजीनों में सिनेमा पर प्रकाशित समालोचनात्मक अध्ययनों, समीक्षाओं या लेखों के लिए सर्वोत्तम समीक्षक को दिया जाएगा ।

3. प्रविष्टियों की 'प्राप्ति अंतिम तारीख

दोनों पुरस्कारों के 'लिए प्रविष्टियों की प्राप्ति की अंतिम तारीख, उस वर्ष जिसमें पुरस्कारों की घोषणा की जानी है, के मार्च माह का अंतिम कार्य दिवस होगी ।

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक के लिए पुरस्कार के मामले में प्रविष्टि उसके लेखक या प्रकाशक द्वारा और सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक के लिए पुरस्कार के मामले में स्वयं समीक्षक द्वारा अथवा समाचारपत्र, पत्रिका, मैगजीन के प्रकाशन,संपादक द्वारा प्रस्तुत की जा सकती है । परन्तु पुरस्कार लेखक या समीक्षक को ही दिया जाएगा ।

प्रविष्टियां प्रविष्टि फार्म में निदेशालय को भेजी जानी चाहिए ।

निदेशालय के विचार के लिए प्रकाशक और लेखक के पूरे पते के साथ पुस्तकों अथवा लेखों की अनुशंसा फिल्म फैडरेशन ऑफ इंडिया से संबद्ध संस्थाओं -फिल्म फैडरेशन ऑफ इंडिया, साहित्य कला अकादमियों या किसी भी सामान्य प्राप्त साहित्यिक या सांस्कृतिक संगठन द्वारा की जा सकती है । फिर निदेशालय पुरस्कारों के लिए विचार हेतु इस प्रकार के लेखकों से अपनी पुस्तकों लेखों की प्रविष्टि भेजने हेतु संपर्क करेगा । यदि कोई प्रकाशन या लेखक पुरस्कारों के लिए अपनी रचनाओं की प्रविष्टि नहीं करता है तो उन पर निर्णायक मंडल दारा विचार नहीं किया जाएगा ।

5. (1) सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक के लिए पुरस्कार हेतु प्रविष्टियों के मामले में, प्रविष्टि फार्म के साथ निम्नलिखित विवरण भेजा जाएगा -

(क) पुरस्कार के लिए प्रविष्टि पुस्तक की 3 प्रतियां तथा पुस्तकों के लिए कैशमीमो

(ख) पुस्तक के सारांश की अंग्रेजी में 10 प्रतियां

(ग) लेखक या लेखकों तथा प्रकाशन या प्रकाशकों का संक्षिप्त जीवन वृत्त

(घ) लेखक या लेखकों के हाल के दो फोटो, और

(ङ) यदि कोई प्रचार सामग्री हो तो उसके 6 सैट!

(2) यदि प्रविष्टियां स्वीकार कर ली जाती हैं तो निदेशालय पुस्तक की लागत की प्रतिपूर्ति करेगा ।

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक के पुरस्कार हेतु प्रविष्टियों के मामले में, प्रविष्टि फार्म के साथ निम्नलिखित विवरण भेजे जाएंगे-

(क) रचनाओं की कतरनें जो 5 से कम तथा 18 से अधिक नहीं होनी चाहिए तथा उन समाचारपत्रों आदि के नाम जिनमें ये छपी हों तथा प्रकाशन की तारीख प्रविष्टि-पत्र के साथ प्रत्येक कतरन की 5 - 5 फोटो स्टेट प्रतियां अवश्य संलग्न हों,

(ख) समीक्षक का संक्षिप्त जीवन-वृत्त; और

(ग) समीक्षक के हाल ही के दो फोटो ।

भारतीय स्टेट बैंक, नई दिल्ली को देय 'फिल्म समारोह निदेशालय' के पक्ष में रेखांकित डिमाण्ड ड्राफ्ट के रूप में प्रति प्रवेशक 100 रु. (प्रस्तुत पुस्तकों अथवा लेखों की संख्या पर विचार किए बिना) का अप्रतिदेय प्रवेश शुल्क भेजना होगा।

6. चयन की प्रक्रिया

1. सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन के लिए पुरस्कारों का निर्णय भारत सरकार दारा गठित किये जाने वाले निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा ।
2. इस निर्णायक मंडल में अध्यक्ष सहित, पत्रकारिता तथा सिनेमा के क्षेत्र में विशिष्टता रखने वाले तीन सदस्य होंगे ।
3. निर्णायक मंडल का अध्यक्ष उस भाषा के जानने वाले व्यक्तियों की सहायता ले सकेगा, जिसमें प्रविष्टियाँ स्वीकार की गई हैं ।
4. पुरस्कार के लिए प्रविष्ट पुस्तक, लेख, समीक्षा के लेखन, सम्पादन या प्रकाशन से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित कोई भी व्यक्ति निर्णायक मंडल का सदस्य बनने का पात्र नहीं होगा ।
5. निर्णायक मंडल पुरस्कार विजेताओं का चयन करेगा और अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को देगा।
6. निर्णायक मंडल अपने विवेक से यह सिफारिश कर सकेगा कि यदि प्रविष्टि पुस्तकें, लेख, समीक्षाएं अपेक्षित स्तर की नहीं है तो कोई पुरस्कार नहीं दिया जाए ।

भारत सरकार, किसी भाषा विशेष में प्रविष्ट पुस्तकों, लेखों, समीक्षकों की संख्या को देखते हुए, अपने विवेक से पुस्तकों, लेखों, समीक्षाओं की अनुशंसा करने के लिए भाषा विशेष के लिए लघु क्षेत्रीय पैनल बन सकेगी । बाद में इस प्रकार की पुस्तकों लेखों, समीक्षाओं का राष्ट्रीय पुस्तक निर्णायक मंडल द्वारा आकलन किया जा सकता है ।

14.8 वर्तमान परिप्रेक्ष्य

मौजूदा दौर में अंग्रेजी और हिन्दी की पत्रिकाओं में कड़ी व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा है । इसी प्रतिस्पर्धा के कारण कुछ पत्रिकाओं ने स्तरहीन लेखन का भी सहरा लिया । कलागत मूल्यों को दरकिनार करते हुए ऐसे विषयों पर भी सामग्री छापी गयी, जिनका सिनेमा कला से दूर तक कोई संबंध नहीं था । फिल्मी कलाकारों के निजी जीवन पर भी कलम चलाई गई । नतीजा यह हुआ कि कलाकारों और पत्रकारों के बीच कटुता ने जन्म लिया और कई मौकों पर तो मार-पीट की घटनाएं भी हुई । फिल्म पत्रकारिता में वह मोड़ भी आया जब कलाकारों की संस्था सिने आर्टिस्ट एसोसिएशन ने पांच अंग्रेजी पत्रिकाओं का बहिष्कार करने और उन्हें इंटरव्यू आदि नहीं देने का फैसला किया । लगभग एक साल यह बहिष्कार जारी रहा ।

'स्टारडस्ट' जैसी पत्रिकाओं ने मुखपृष्ठ पर अभिनेत्रियों की अर्धनग्न तस्वीरें छाप कर यह जताया कि पत्रिका की बिक्री बढ़ाने के लिए वे किसी भी हद तक जा सके हैं । कुछ और पत्रिकाओं ने भी यह रास्ता अपनाया मगर इत्तफाक से यह सिलसिला ज्यादा दिन नही चला ।

हिन्दी में एक श्रेष्ठ और सम्पूर्ण फिल्म पत्रिका की कमी आज भी अनुभव की जा रही है । 'माधुरी' के 'फिल्मफेयर' में बदलने और फिल्मफेयर' (हिन्दी) के बन्द होने के बाद इस कमी का ज्यादा अहसास हु आ है । हिन्दी फिल्म पत्रकारिता ने अभी वह मुकाम हासिल नहीं किया है कि पाठक बेसब्री से हिन्दी फिल्म पत्रिकाओं का इंतजार करें । इसका एक बड़ा कारण यह है कि हिन्दी की फिल्म पत्रिकाओं ने अपने को हिन्दी तक सीमित कर रखा है । हिन्दी से इतर अन्य भाषाई फिल्मों में क्या कुछ हो रहा है, उससे हिन्दी फिल्म पत्रकारिता को कोई सरोकार नहीं । आज तथ्य यह है कि मद्रास और हैदराबाद एक समानान्तर फिल्म केन्द्र के रूप में उभर रहे हैं । दक्षिण में बनने वाली फिल्में कई अर्थों में बंबइया फिल्मों से भी आगे ठहरती हैं और उसमें सिनेमाई मूल्य भी उत्कृष्ट रूप में नजर आते हैं । दक्षिण ने ही अडूर गोपाल कृष्णन और जी. अरविंदन तथा मणिरत्नम जैसे प्रयोगवादी फिल्मकार दिए हैं । उनकी फिल्मों में नित नए प्रयोग देखने को मिलते हैं । मगर हिन्दी पत्रकारिता ने इस ओर आंखें मूंद रखी हैं । क्षेत्रीय भाषाई फिल्मों का जिक्र हिन्दी फिल्म पत्रिकाओं में न के बराबर होता है । विश्व सिनेमा के मामले में तो हिन्दी फिल्म पत्रकारिता और भी गरीब है । हिन्दी की कोई भी फिल्म पत्रिका उठाकर देख लीजिए, उसमें विश्व सिनेमा पर शायद ही कोई सामग्री आपको मिलेगी ।

विश्व सिनेमा के तेजी से बदलते परिदृश्य से जैसे हिन्दी फिल्म पत्रकारिता को कोई लेना-देना नहीं । स्पीलबर्ग, अकीरा कुरोसावा, डेविड लीन और आइजेस्ताइन जैसे फिल्मकारों की फिल्म पर भी कोई टिप्पणी या आलेख हिन्दी की फिल्म पत्रिकाओं में देखने को नहीं मिलता । हिन्दी फिल्म पत्रकार अक्सर यह तर्क देते हैं कि पाठक विश्व सिनेमा के बारे में पढ़ना ही नहीं चाहता । यह तर्क उतना ही खोखला है, जितना फार्मूला फिल्मों के निर्माताओं का यह तर्क कि वे फिल्में में हिंसा और बलात्कार इसलिए दिखाते हैं क्योंकि दर्शक यही देखना चाहते हैं । हिन्दी पाठक वर्ग कुंए का मेढक नहीं है जो उसे विश्व सिनेमा की गतिविधियों में दिलचस्पी ही नहीं हो । जब कभी कोई चर्चित अंग्रेजी फिल्म प्रदर्शित होती हैं, तब उस पर टूटने वाली भीड़ इस बात का प्रमाण है कि विश्व सिनेमा से दर्शक वर्ग पूरी तरह अनजान नहीं हैं ।

हमारे यहां फिल्म पत्रकारिता के विधिवत शिक्षण-प्रशिक्षण की भी कोई व्यवस्था नहीं है । अधिसंख्य युवक-युवतियाँ फिल्मों के मोहजाल में बंधे होते हैं । मगर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में भी फिल्म संबंधी सामग्री का अध्ययन नहीं कराया जाता । आज भी ज्यादातर दर्शक फिल्म निर्माण की तकनीक और प्रयोगों से अनभिज्ञ हैं । उन्हें सीदे -साधे फिल्म देखने से मतलब है, निर्देशकीय सूझबूझ और कौशल से उनका कोई वास्ता नहीं ।

इसे एक विडम्बना ही कहा जाएगा कि फिल्म निर्माण के लिहाज से अव्वल होने के बावजूद हमारे देश में फिल्म पत्रकारिता अब तक अपने अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं कर सकी है । न सिर्फ हिन्दी, बल्कि अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में भी फिल्म पत्रकारिता चटपटे, मसालेदार व्यंजन की भांति अपना गॉसिप आधारित स्वरूप ही पेश पर पाई है । सैकडों की संख्या में निकलने वाली फिल्म पत्रिकाओं के पृष्ठ फिल्मी कलाकारों की निजी जिंदगी के किस्से-कथाओं से भरे रहते हैं और उनमें भी सत्यता का अंश नाम मात्र को भी नहीं होता । नतीजा यह है कि औसत पाठक वर्ग ने भी इन पत्रिकाओं को गंभीरता

से लेना छोड़ दिया है और किसी 'सी ग्रेड' फिल्म की तरह फिल्म पत्रिकाओं को भी लोग बहुत ही सतही तौर पर लेने लगे हैं । हालांकि आज फिल्म पत्रकारिता बहुत व्यापक स्तर पर हो रही और लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में फिल्म संबंधी सामग्री नियमित रूप से दी जाती है । लेकिन स्तरीय फिल्म पत्रिकाओं के मैदान में आज भी एक विराट शून्य नजर आता है ।

14.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. डा. वेदप्रताप वैदिक - हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम
2. 2 मनमोहन चड्ढा - हिन्दी सिनेमा का इतिहास
3. इण्डियन सिनेमा (वार्षिक प्रकाशन), फिल्म समारोह निदेशालय
4. टी. रामचन्द्रन - सेवेण्टी फाइव ग्लोरियस ईयर्स ऑफ इण्डियन सिनेमा
5. प्लेटिनम जुबली अंक- नई दुनिया

14.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. स्वतंत्रता के उपरांत हिन्दी फिल्म पत्रकारिता के उद्भव और विकास पर निबंध लिखिए ।
2. हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं की चर्चा करते हुए सार्थक सिनेमा आंदोलन में उनके योगदान को स्पष्ट कीजिए।
3. सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन के राष्ट्रीय पुरस्कार का उद्देश्य कीजिए । पुरस्कार की सम्पूर्ण प्रक्रिया को भी समझाइए।
4. फिल्म पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए ।

14.11 परिशिष्ट

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक और सर्वश्रेष्ठ सने समीक्षक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रमुख लेखक या समीक्षक।

1. श्री अनंथाई नारायणन : 'थमीज सिनिमाविन कथाई' (तमिल), 1982
2. श्री विजय कृष्णन : 'चलचित्र समीक्षा' (हिन्दी), 1983
3. श्री अडूर गोपालकृष्ण : 'सिनेमायुद लोकम्' (मलयालम), 1984
4. श्री जगन्नाथ चट्टोपाध्याय : 'चलचित्रेर अविर्भाव' (बांग्ला), समीक्षक : स्वप्न मलिक, 1985
5. श्री अरुण खोपकर : 'गुरुदत्त : तीन अंकी शोकांतिका' (मराठी), 1986
6. श्री किशोर वालीचा : 'द मूविंग इमेज' (अंग्रेजी), 1989, समीक्षक : मनमोहन चड्डा
7. श्री कुमारन थम्पी : 'कन्क्कुम कवितायुम्' (मलयालम), 1990
8. प्रो. सुरेन्द्रनाथ तिवारीः 'शतरंज के खिलाड़ी' (हिन्दी), 1990 समीक्षक : श्री के. एन. टी शास्त्री, 1990
9. श्री अरविन्दन बालाचीरा : 'आत्मानिंडे यूड़े पुक्कल' (मलयालम), 1992 समीक्षक : श्री गौतम कौल
10. सु श्री गायत्री चटर्जी : ‘आवारा' (अंग्रेजी) 1993, समीक्षक : श्री सुधीर बोस
11. श्री मनमोहन चट्टा : 'हिन्दी सिनेमा का इतिहास' (हिन्दी), 1991, समीक्षक : सुश्री शोभा ए. चटर्जी
12. डॉ. भानुमति रामकृष्णन : 'नालू नेनू (तेलगू) 1994 । समीक्षक : श्री प्रीतिमान सरकार

13. श्री भरतगोपी 'अभिनयन अनुभवम' (मलयालम), समीक्षक : सुश्री रश्मि दुरैस्वामी
14. श्री संजीत नार्वेकर : 'मराठी सिनेमा : एरेट्रोस्पेक्ट' (अंग्रेजी), 1996 समीक्षक : श्री एम. सी. राजानारायण
15. श्री एस. थियोडोर भास्करन : 'द आई ऑफ द सरपेन्ट : 'एन इन्ट्रोडक्शन टू तमिल सिनेमा' (अंग्रेजी), 1997, समीक्षक : श्री एम. के. राघवेन्द्र
16. श्री अनिल झणकार : 'सिनेमाची गोष्ठ' (मराठी), 1998
17. सुश्री सविता भाखरी एवं श्री आदित्य अवस्थी : 'हिन्दी सिनेमा और दिल्ली' (हिन्दी), 1998. समीक्षक : सुश्री दीपा गहलोत

इकाई 15 बाल पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 बाल पत्रकारिता क्या है?
15.3 बाल पत्रकारिता की स्थिति
15.4 बाल पत्रकारिता : उद्भव एवं विकास
15.4.1 अंकुरण काल
15.4.2 संस्थापन काल
15.4.3 विकास काल
15.4.4 आधुनिक काल
15.4.5 शताब्दि-समापन काल
15.5 बाल पत्रिका संपादन की अपेक्षाएं
15.6 सारांश
15.7 कुछ सुझाव
15.8 शब्दावली
15.9 कुछ उपयोगी पुस्तक
15.10 निबन्धात्मक प्रश्न

15.0 उद्देश्य

यह पाठ पूरा हो जाने पर आप -

- बाल पत्रकारिता और उसके उद्भव विकास से परिचित हो जाएगे
- प्रमुख बाल पत्रिकाओं एवं उनके संपादकों को जान सकेंगे ।
- बाल पत्रिकारिता के महत्व से अवगत हो जाएगे ।
- बाल पत्रकारिता एवं अन्य पत्रकारिता के भेद से परिचित हो जाएगे ।

15.1 प्रस्तावना

बच्चे समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं । उनके अभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती । प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार विलियम वर्डसबर्थ ने ठीक ही लिखा है - 'चाइल्ड इज दि फादर ऑफ मैन' अर्थात् बच्चा इंसान का पिता होता है । कहने का तात्पर्य यह है बच्चे में इंसान के सभी गुण समाहित रहते हैं जो धीरे- धीरे उसकी अवस्था के अनुसार उसमें विकसित होते हैं ।

बच्चों का बाल साहित्य से सीधा सम्बन्ध होता है । स्वस्थ बाल साहित्य जहां एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर उनमें अच्छे संस्कार डालकर उनके भावी संसार की नींव मजबूत करता है। बच्चे स्वस्थ बाल साहित्य से अनायास ही जुड़ते चले जाते हैं ।

बाल साहित्य प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाओं के दो रूप हैं - प्रथम प्रकार की वे पत्रिकाएं है जो प्रमुख रूप से बड़ों का साहित्य प्रकाशित करती है और साथ में दो-चार पृष्ठों का बाल स्तंभ भी छापती है । ऐसी पत्रिकाओं में 'नवनीत' (बम्बई), 'अतएव' (लखनऊ), 'पालिका समाचार' 'समाज कल्याण' (नई दिल्ली), हरियाणा संवाद (हरियाणा), 'जागृति' (पंजाब), 'राष्ट्रधर्म' 'उत्तर प्रदेश (लखनऊ) आदि प्रमुख हैं ।

इसके पूर्व साप्ताहिक 'धर्मयुग' (बंबई) में भी बच्चों का स्तंभ 'बाल जगत' बड़े कलात्मक और आकर्षक ढंग से नियमित छपता था, परन्तु संपादक डॉ. धर्मवीर भारती के अवकाश ग्रहण करने के साथ ही 'धर्मयुग' से बालजगत ही समाप्त हो गया । इसी तरह 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की पत्रिका 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' तथा ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी से प्रकाशित 'अवकाश' पाक्षिक में भी उपयोगी और सुरुचिपूर्ण बाल साहित्य प्रकाशित होता था, परंतु दुर्भाग्यवश इनका प्रकाशन ही बंद हो गया ।

दूसरे प्रकार की वे पत्रिकाएं हैं जो संपूर्णत: बच्चों के लिए ही प्रकाशित होती हैं । संप्रति प्रकाशित हो रही ऐसी बाल पत्रिकाओं में 'बालहंस' (जयपुर), 'नंदन', 'चंपक', 'बाल भारती' 'लोटपोट','मधु मुस्कान', 'तमाशा' तथा 'नन्हे सम्राट' (सभी नई दिल्ली) 'चकमक' (भोपाल), 'देवपुत्र' (इंदौर), 'समझ झरोखा' (भोपाल), 'बालदर्शन' (कानपुर), 'बालवाटिका' (भीलवाड़ा राज.), 'बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी', 'बाल कविता', 'चमाचम', 'लल्लू जंगधर' (सभी लखनऊ) 'बाल सेतु' (बस्ती), 'बालमितान' (दुर्ग म.प्र.), 'बाल साहित्य समीक्षा' (कानपुर), 'किशोर लेखनी' (कटिहार, बिहार), 'गुड़िया' और 'चंदामामा' (दोनों मद्रास) आदि उल्लेखनीय हैं । ये पत्रिकाएं बाल पत्रकारिता की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी हैं । इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त मेरठ से 'बच्चों की उमंग' वाराणसी से 'चिल्ड्रेन टाइम्स' 'लखनऊ' से 'बच्चे और आप' नाम से बच्चों के कुछ अखबार भी प्रकाशित होते हैं ।

जहाँ तक समाचारपत्रों की बात है- लगभग सभी समाचारपत्र जैसे- 'नवभारत टाइम्स' 'जनसत्ता', 'दैनिक हिन्दुस्तान', 'आज', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत', 'दैनिक जागरण', 'नवज्योति', 'नई दुनिया', 'अमर उजाला', 'राष्ट्रदूत', 'दैनिक ट्रिब्यून', 'पंजाब केसरी', 'दैनिक विश्वामित्र', 'नवजीवन' तथा 'स्वतंत्र चेतना' आदि अपने-अपने साप्ताहिक परिशिष्ट में नियमित बाल साहित्य प्रकाशित करते हैं । 'राष्ट्रीय सहारा', 'स्वतंत्र भारत' तथा 'राजस्थान पत्रिका' तो सप्ताह में एक- से अधिक बार क्रमश: बचपन, अंकुर तथा परिवार शीर्षकों से बाल साहित्य छापते रहे हैं । 'दिनमान टाइम्स' ने 'पराग' के अंतर्गत उच्चकोटि का बाल साहित्य प्रकाशित किया । 'सण्डे मेल' भी सार्थक बाल साहित्य प्रकाशित करता रहा है ।

वस्तुत: बाल साहित्य के उत्थान में बाल पत्रिकाओं की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है । इन पत्रिकाओं ने तमाम बिखरी हुई बाल साहित्य की श्रृंखलाओं को एक में जोड़ने का काम किया है । बाल पत्रिकाएं बच्चों के लिए एक कुशल उपदेशक, सफल अभिभावक, उचित मार्गदर्शक और सच्चे मित्र का कार्य करती है । ये बाल पत्रिकाएं बाल साहित्य का एक प्रमुख अंग है । अगर हम यह कहें कि आज का बाल साहित्य पत्र-पत्रिकाओं की ही देन है तो अतिशयोक्ति न होगी ।

11.2 बाल पत्रकारिता क्या है ?

किसी भी साहित्य के उद्भव और विकास में पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । पत्र-पत्रिकाएं जन-सामान्य को जहां रोचक जानकारियां उपलब्ध कराती हैं, वहीं साहित्य की पड़ाव दर-पड़ाव विकास यात्रा को अपने अंदर समेटे रहती है । बाल साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है उसकी विकास यात्रा को बाल पत्रिकाओं ने शनै: शनै: सुनियोजित ढंग से आगे बढ़ाया है ।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में बाल पत्रकारिता की शुरूआत हुई । इसके पूर्व न तो बाल साहित्य की और न ही बाल पत्रकारिता की चर्चा थी । बड़ों के लिए उपलब्ध साहित्य में से बच्चे अपनी पसंद की सामग्री छांट लिया करते थे । तुलसीदास और सूरदास के राम तथा कृष्ण सम्बन्धी काव्यों में ही बच्चों को अपना साहित्य परिलक्षित होता था । आगे चलकर बच्चों के मन और मनोभाव को परखकर लिखी गई बाल साहित्य की रचनाओं ने बाल पत्रकारिता को जन्म दिया ।

आरंभ में बाल पत्रकारिता का कोई स्वरूप निर्धारित नहीं था । जो पत्रकार बड़ों के लिए प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में संपादन का कार्य देखते थे, वही बाल पत्रिकाओं के लिए भी संपादक नियुक्त कर दिये जाते थे । वरिष्ठ पत्रकार और कई पत्र-पत्रिकाओं के यशस्वी संपादक श्री कन्हैयालाल 'नंदन' सुप्रसिद्ध बाल पत्रिका ' पराग' के लम्बे समय तक संपादक रहे हैं । उन्होंने अपने संपादन काल में ' पराग' को जहां ऊंचाइयों तक पहुँचाया वहीं बाल साहित्य के नये मानदण्ड स्थापित किये ।

एक साक्षात्कार में नंदनजी बताते हैं : - 'बाल पत्रकारिता से जुड़ना अनायास ही रहा, लेकिन जब जुड़ गया तो मैंने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकारा । बच्चों के लिए तो मैंने एक कहानी भी नहीं लिखी थी और मुझे बच्चों की पत्रकारिता दे दी गई । लेकिन जुड़ने के बाद मुझे लगा कि इसमें कुछ करना चाहिए । इसमें काम करते हुए मैंने महसूस किया कि बच्चों की पत्रकारिता को काफी सीमित करके देखा गया है, जैसे- वे केवल कहानियां, कविताएं ही पढ़ते हैं । बच्चे डायरी नहीं लिख सकते? यात्रा-संस्मरण नहीं पढ़ सकते? हिन्दी में लिखे जाने वाले नव गीत क्या बच्चों के लिए नहीं लिखे जा सकते? क्या बच्चों के लिए नयी बिम्ब योजना नहीं हो सकती? इन सवालों पर मैने सोचा और उन लेखकों को बाल लेखन के लिए उकसाया जो बड़ों के लिए लिखते थे । '

इस प्रकार विषम परिस्थितियों में शुरू हुई बाल पत्रकारिता ने आगे चलकर यह सिद्ध किया कि बाल पत्रिकाएँ बच्चों के विकास की दिशा में विशेष रूप से शिक्षा देने का कार्य करती है । बच्चों को जो कुछ स्कूल में नहीं पढाया जाता है, उसे बाल पत्रिकाएं सिखाती हैं तथा उनमें संभावनाओं के नये-नये द्वार खोलती हैं ।

वस्तुत: बाल पत्रकारिता को सामान्य तौर पर जितना सहज और आसान समझा जाता है उतना है नहीं । अगर गोपाल कृष्ण कौल के शब्दों में कहें तो - 'बाल पत्रकारिता एक विशेषीकृत पत्रकारिता है, उसे सिर्फ सामान्य पत्रकारिता के अनुसार उचित दिशा में प्रतिनिधिपरक रूप नहीं दिया जा सकता है । चाहे सरकारी क्षेत्र हो या निजी क्षेत्र, बाल पत्रकारिता को व्यावसायिकता के साथ मिशनरी भावना से ही विकसित किया जा सकता है । सिर्फ पत्रकारिता के व्यवसाय से मुनाफा कमाने की दृष्टि से बाल पत्रकारिता का विकास संभव नहीं है क्योंकि इसमें देश के बालकल्याण का प्रश्न भी जुड़ा है। बड़े पाठकों की तरह बाल पाठक की नियमित आमदनी या कमाई नहीं होती है जो वह मनचाही सामग्री की मांग कर सके और जब चाहे खरीदकर पढ़ सके । आर्थिक दृष्टि से ग्राहक के रूप में बाल पाठक उन बड़ो

पर आश्रित है जो उसके आर्थिक अभिभावक है । इसलिए केवल व्यावसायिक लाभ की दृष्टि से बाल पत्रिकाओं के बाल पाठकों की ओर देखना सामाजिक अन्याय है । '

> बाल पत्रकारिता का मुख्य ध्येय है - बच्चों को आधुनिक जीवन और समान से जोड़कर उन्हें एक सुयोग्य नागरिक बनाना उन्हें यथार्थ से जोड़कर समसामयिक परिस्थितियों से अवगत कराना । आज बाल पत्रकारिता को उसकी विशिष्टता के साथ महत्व दिए जाने की आवश्यकता है

बोध प्रश्न -1

1. बाल पत्रकारिता किसे कहते है?
2. बाल पत्रकारिता की स्थिति बताइए?
3. बात पत्रकारिता का भविष्य आप कैसा मानते है?
4. किसी एक बाल पात्रिका पर एक आलोचनात्मक लेख लिखिए
5. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें
6. 1 बालहंस 2. पराग
7. 3.वानर 4.नंदन

15.3 बाल पत्रकारिता की स्थिति

जहाँ तक बाल पत्रकारिता की स्थिति का प्रश्न है, हिन्दी में बाल पत्रिकाओं की एक समृद्ध परंपरा रही है । सन् 1882 से अब तक लगभग डेढ़ सौ से ऊपर बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई है इन बाल पत्रिकाओं ने स्वस्थ बाल साहित्य का प्रकाशन तो किया ही, साथ ही अनेक योग्य बाल साहित्यकार भी बनाये । बाल साहित्यकारों का निर्माण करने वाली बाल पत्रिकाओं में 'बालसखा' 'शिशु ' , 'लल्ला', 'बाल विनोद', 'पराग' आदि महत्वपूर्ण हैं । इन पत्रिकाओं के संपादकों ने व्यक्तिगत स्तर पर संपर्क करके लोगों का ध्यान बाल साहित्य की ओर आकृष्ट किया तथा साहित्यकारों से उच्चकोटि का बाल साहित्य लिखवाया । आज उपर्युक्त बाल पत्रिकाओं में से कोई भी पत्रिका जीवित नहीं है । जबकि इनके द्वारा बनाये गये बाल साहित्यकार आज भी बाल साहित्य के क्षेत्र में अपनी कीर्ति फैला रहे हैं ।

आज बाल पत्रिकाओं के मुद्रण की सबसे जटिल समस्या है । इस व्यावसायिकता के युग में बच्चों के लिए पत्रिकाएं निकालना हंसी-खेल नहीं है । केवल पूंजीपति या प्रसिद्ध व्यावसायिक संस्थान ही आकर्षक रंगीन एवं नयनाभिराम चित्रों से भरपूर बालोपयोगी पत्रिकाएं निकाल सकते हैं क्योंकि उनके पास अपार साधन हैं । यह बात सत्य है कि बालकों के मस्तिष्क पर पत्रिका की छपाई एवं चित्रों का भरपूर प्रभाव पड़ता है । वे दुरंगी-तिरंगी एवं आकर्षक पत्रिकाएं ही पढ़ना चाहते है। साधारण कागज पर साधारण ढंग से छपी अच्छी से अच्छी रचनाएं भी कभी-कभी बच्चे पढ़ने से इनकार कर देते हैं।

बाल पत्रिकारिता की स्थिति एवं भविष्य पर प्रकाश डालते हुए डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने लिखा है - 'आज के बच्चों के मानसिक विकास उनकी जिज्ञासाओं और रुचियों के अनुरूप ऐसी पत्रिकाओं की बहुत आवश्यक्ता अनुभव की जा रही है, जो उन्हें राजनीति, विश्व के विभिन्न देशों की समस्याओं, समसामयिक घटनाओं जैसे गंभीर विषयों पर उनकी रुचि के अनुरूप सामग्री प्रस्तुत करे । बाल पत्रकारिता

के मानदण्ड स्थापित करने की दिशा में अभी काफी कुछ किया जाना है और यह तभी संभव है जब उसे उचित महत्व मिलेगा और उसकी वास्तविक आवश्यकता को समझा जाएगा ।

16.4 बाल पत्रकारिता ' उद्भव एवं विकास

बाल पत्रकारिता के विकास का उल्लेख निम्नलिखित काल खण्डों के रूप में किया जा सकता

(i)	अंकुरणकाल	सन् 1882 से 1930 तक
(ii)	संस्थापन काल	सन् 1931 से 1950 तक
(iii)	विकास काल	सन् 1951 से 1970 तक
(iv)	आधुनिक काल	सन् 1971 से 1990 तक
(v)	शताब्दि-समापन काल	सन् 1991 से अब तक

15.4.1 अंकुरण काल

बाल पत्रकारिता का इतिहास कुल मिलाकर एक सौ दस वर्षो का है । हिन्दी में बच्चों की पहली पत्रिका 'बाल दर्पण' सन् 1882 ई. में प्रयाग (उ.प्र.) से प्रकाशित हुई थी । भारतेन्दु हरिशचन्द्र के विशेष प्रयत्नों से प्रकाशित यह पत्रिका भारतेन्दु युग की अभूतपूर्व देन रही है । इस पत्रिका के लिए भारतेन्दु जी ने स्वयं अनेक रोचक रचनाओं का सृजन किया तथा अपने समकालीन साहित्यकारों को बाल साहित्य लिखने के लिए प्रेरित किया ।

वैसे तो हिन्दी में बच्चों की पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरूआत हस्तलिखित पत्रों से हुई । ये पत्र काफी संख्या में अलग-अलग स्थानों से प्रकाशित होते थे । एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1940 के आसपास हिन्दी में लगभग तीस मुद्रित तथा सोलह हस्तलिखित बाल पत्रिकाएं प्रकाशित होती थी । लोकसाहित्य मर्मज्ञ और हिंदी के समर्थ समीक्षक डॉ. सत्येन्द्र ने भोगीपुरा (आगरा के पास गांव) में हस्तलिखित पत्रिका सन् 1912 में आरंभ की थी । यह 1916 तक हर तीसरे माह तैयार की जाती रही थी । हस्तलिखित बाल पत्रिकाओं का प्रयास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है कि ऐसे ही बच्चों की लेखन प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है ।

'बाल दर्पण' के बाद लोगों का ध्यान बच्चों की पत्रिकाओं की ओर नहीं गया । इसलिए लम्बे अरसे तक बच्चों की कोई महत्वपूर्ण पत्रिका प्रकाशित नहीं हुई । छिटपुट कहीं-कहीं से कोई पत्रिका निकल जाती थी जिसकी आयु अत्यंत अल्प होती थी । ऐसी बाल पत्रिकाओं में सन् 1891 में लखनऊ से प्रकाशित 'बाल हितकर', 'विद्या प्रकाश' भी थीं । इसके बाद सन् 1906 में अलीगढ़ से प्रकाशित छात्र हितैषी, बनारस से प्रकाशित 'बाल प्रभाकर' आदि का महत्वपूर्ण स्थान है । सन् 1912 में नरसिंहपुर से 'मानीटर' नामक बच्चों की पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । यह पत्रिका 1916 तक प्रकाशित होती रही । इसी तरह एक पत्र 'हितकारी' का भी उल्लेख मिलता है, जो 1917 तक लगातार प्रकाशित होता रहा । आगरा (मालवा) से प्रकाशित 'बाल मनोरंजन' भी 1915 तक लगातार प्रकाशित होता रहा।

सन् 1914- 15 से बाल पत्रकारिता में तेजी आई । इसका श्रेय 'विद्यार्थी' और 'शिशु' को दिया जा सकता है । 'विद्यार्थी' सामान्य बाल पाठकों के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए भी विशेष उपयोगी पत्रिका थी । इसमें तत्कालीन चर्चित अनेक कवि एवं लेखक लिखते थे । मैथिलीशरण गुप्त माखनलाल चतुर्वेदी, राम नरेश त्रिपाठी, कामता प्रसाद गुरु, छविनाथ पांडेय आदि की रचनाएं इस पत्रिका की शोभा

हुआ करती थी । 'विद्यार्थी' के संपादक प. रामजीलाल शर्मा बाल साहित्य के मर्मज्ञ थे । उनके कुशल संपादन में 'विद्यार्थी' ने खूब उन्नति की । हिन्दी बाल पत्रकारिता के इतिहास में 'विद्यार्थी' के महत्व को भुलाया नहीं जा सकता ।

सन् 1915 में पंडित सुदर्शनाचार्य के संपादन में प्रकाशित शिशु' पत्रिका ने बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में नये मानदण्ड स्थापित किये । प्राय: तीन दशकों से भी अधिक समय तक यह पत्रिका बच्चों में ही नहीं, अपितु अभिभावकों में भी काफी लोकप्रिय रही । 'शिशु' में वहीं रचनाएं प्रकाशित होती थी जिनके माध्यम से बालकों में सदाचार, शक्ति, आदर्श और राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने की प्रेरणा मिले । अगर यह कहा जाय कि 'शिशु' ने बाल साहित्य को अंगुली पकड़कर चलना सिखाया तो अतिशयोक्ति न होगी । सन् 1916 में कलकत्ता के 'हेयर स्कूल' से हिन्दी विद्यार्थियों ने 'हेयर स्कूल पत्रिका' निकाली थी । सन् 1917 में 'विधा', 'विद्यार्थी सखा' तथा 'स्कूल मास्टर' नामक बाल पत्रिकाओं का भी उल्लेख मिलता है ।

सन् 1917 में प्रयाग के इंडियन प्रेस से प्रकाशित 'बाल सखा' ने बाल साहित्य को सजाया, संवारा तथा इसका रूप निखारा। वास्तव में 'बाल सखा' पत्रिका बाल पत्रकारिता के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध हुई । इसके प्रथम संपादक प बदरी नाथ भट्ट थे । तदनन्तर सर्वश्री पं. लल्ली प्रसाद पाडेय, पं. कामता प्रसाद गुरु, प. सोहनलाल द्विवेदी, प देवीदत्त शुक्ल 'गिरीश' तथा ठाकुर श्रीनाथ सिंह ने इसका संपादन किया । 'बाल सखा' के प्रकाशन से हिन्दी बाल साहित्य के विकास के लिए एक खुला मार्ग मिल गया । इसमें नये-पुराने लेखकों की मनोरंजक तथा ज्ञानवर्द्धक रचनाएं प्रकाशित होती थी। 'बाल सखा' के प्राप्त आकड़ों से भी पता चलता है कि यह बच्चों की बहुत लोकप्रिय पत्रिका थी । लगातार 53 वर्षों तक प्रकाशित होने के बाद सन् 1969 में व्यावसायिकता की दौड़ में पीछे रहने के कारण इसका प्रकाशन बंद हो गया ।

सन् 1920 में जबलपुर में 'छात्र सहोदर' नामक बाल पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । परन्तु इसका इतिहास अंधकारमय है । सन् 1924 में दिल्ली से 'वीर बालक' तथा काशी से 'उत्साह' नामक बाल पत्रिकाओं का भी उल्लेख मिलता है । इसी वर्ष कलकत्ता से एक 'आशा' नामक पत्रिका भी प्रकाशित हुई थी ।

सन् 1926 में पटना से आचार्य रामलोचन शरण ने 'बालक' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया था । आचार्य शरण बाल मनोविज्ञान के मर्मज्ञ तथा बाल साहित्य के ज्ञाता थे, इसी कारण बालक में उच्चकोटि की रचनाएं प्रकाशित होती थी । 'बालक को तत्कालीन प्रमुख लेखकों का भरपूर सहयोग प्राप्त था । 'बालसखा' की भांति 'बालक' भी लम्बे समय तक प्रकाशित होता रहा । इधर तीन-दशकों से इसका प्रकाशन बंद है । बालक' अक्टूबर 1965 में प्रकाशित श्री प्रसाद की निम्नलिखित रचना साधारण बोलचाल में होते हुये भी एक सफल प्रयोग है : -

नदी अपनी राह बहती जा रही थी ।
बड़ी लम्बी कथा कहती जा रही थी ।।
बहुत दूरी पार करके आ सकी थी ।
राह का हर दुःख श्रम से ढा सकी थी ।।
एक छोटी धार बन करके चली थी ।

पत्थरों में पा गई पतली गली थी ।।
मगर तब तक एक पत्थर ने बिचारा ।
क्यों न रोकूं रास्ता ही अभी सारा ।।

सन् 1927 में पं. रामजीलाल शर्मा के संपादन में ' खिलौना' नामक किशोर बच्चों की एक बड़ी आकर्षक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । 'खिलौना' में प्रकाशित होने वाली सामग्री बालकों का मनोरंजन ही नहीं, अपितु ज्ञानवर्द्धन भी करती थी। इस पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसका प्रकाशन नियमित और समय से होता था । इसमें किशोरोपयोगी रचनाओं को प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जाता था । सन् 1960 में इसका प्रकाशन बंद हो गया ।

सन् 1930 में विश्वप्रकाश के संपादन में 'चमचम' नामक शिशुओं की एक बहुत ही अच्छी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । सुंदर टाइटिल, रंगीत छपाई तथा मोटे टाइप में छपा होने के कारण यह पत्र शिशुओं के लिए झलक थी । 'चमचम' में प्रमुख रूप से 'शिशुगीत' और लघु बाल कथाएँ प्रकाशित होती थी ।

15.4.2 संस्थापन काल

सन् 1931 में रामनरेश त्रिपाठी ने प्रयाग से 'वानर' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया था । इससे बाल पत्रकारिता का संस्थापन काल का आरंभ कहा जा सकता है । उन्होंने इसमें बालोपयोगी उच्चकोटि का साहित्य प्रकाशित किया। इस पत्रिका में कविताओं, कहानियों और लेखों के अतिरिक्त 'कसरत करो' 'ख की पहेली का उत्तर' आदि प्रमुख स्तंभ प्रकाशित किये जाते थे । 'वानर' जनवरी. 1932 में प्रकाशित सुप्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की 'घंटा' कविता इस प्रकार है-

उस आसमान की चुप्पी पर । घंटा है एक टंगा सुन्दर ।।
जो घड़ी-घड़ी मन के भीतर । कुछ कहता रहता है बजकर ।।
परियों के बच्चों से सुन्दर । कानों के भीतर उसके स्वर ।।
घौंसला बनाते उतर उतर । फैला कोमल ध्वनियों के पर ।।
भरते वे मन में मधुर रोर । जागो रे जागो कामचोर ।।
डूबे प्रकाश में दिया छोर । अब हुआ भोर अब हुआ भोर ।।
आई सोने की नई प्रात । कुछ नया काम हो नयी बात ।।
तुम रही स्वच्छ मन स्वच्छ गात । निद्रा छोड़ो रे गई रात ।।

सन् 1932 में कालाकांकर के राजा सुरेश सिंह ने ' कुमार' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया था । इसमें किशोरोपयोगी रचनाएं प्रकाशित की जाती थीं । सुमित्रानंदन पंत की कविता 'कलरव' सर्वप्रथम कुमार में ही प्रकाशित हुई थी । बड़ों के लिए लिखने वाले प्राय: अधिकांश कवियों ने 'कुमार' में बालकों के लिए लिखा । प. सोहनलाल द्विवेदी, स्वर्ण सहोदर, शंभू दयाल सक्सैना, कुमार हृदय आदि की रचनाएं इसमें प्रमुखता के साथ प्रकाशित की जाती थी । रवीन्द्रनाथ टैगोर को कई बाल कविताओं के अनुवाद 'कुमार' में प्रकाशित हुये थे । सन 1934 से 1938 तक इलाहाबाद से ' अक्षय भैया' नामक मासिक बाल पत्रिका प्रकाशित हुई थी । इसके संपादक रामकिशोर अग्रवाल ' मनोज' थे । इसी वर्ष लाहौर से संतराम 'विचित्र' के संपादन में प्रकाशित 'कमल' नामक बाल पत्रिका का भी उल्लेख

मिलता है । 'कमल' के संपादक विचित्र जी बाल मनोविज्ञान के मर्मज्ञ थे, यही कारण है कि 'कमल' बालकों का पत्र ही नहीं, अपितु मित्र भी बन गया था ।

सन् 1936 में मुरादाबाद से 'बाल विनोद' नामक बालकों की एक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई थी। इसके संपादक रमाशंकर जैतली थे, परन्तु बाद में इसका प्रकाशन लखनऊ से दुलारे लाल भार्गव करने लगे । भार्गव जी ने इस पत्रिका के माध्यम से बाल साहित्य की उल्लेखनीय सेवा की । उन्होंने तत्कालीन बाल साहित्यकारों को नये-नये विषयों पर लिखने के लिए आमंत्रित किया तथा 'बाल विनोद' के माध्यम से कई नये बाल साहित्यकारों को प्रतिष्ठित किया। इस पत्रिका ने कई उल्लेखनीय विशेषांक भी निकाले, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्व है ।

सन् 1938 में पटना से बाल शिक्षा समिति द्वारा बाल पत्रिका 'किशोर' का प्रकाशन आरंभ हुआ था । इसके संपादक प. रामदहिन मिश्र थे, बाद में इसका कार्यभार देवकुमार मिश्र ने संभाला । यह पत्रिका लगातार उन्तीस वर्षो तक प्रकाशित होती रही । इसमें किशोरों के लिए बड़ी अच्छी पठनीय सामग्री रहती थी । मुख्य रूप से किशोर पत्रिका का ध्येय किशोरों का मानसिक विकास और चरित्र निर्माण करना था । सन् 1944 में लखनऊ से प्रेम नारायण टंडन के संपादन में ' होनहार' नामक बच्चों की एक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । कुछ दिन तक प्रकाशित होने के बाद यह पत्रिका बंद हो गई परन्तु 1947 में इसका प्रकाशन मासिक रूप में पुन: आरंभ हुआ । इसमें प्रमुख रूप से बच्चों के लिए विनोदपूर्ण तथा मनोरंजन प्रधान रचनाएं प्रकाशित होती थी इसकी छपाई नयनाभिराम तथा बच्चों को आकर्षित करने वाली होती थी । लगभग 2-3 वर्ष निकलने के बाद इसका प्रकाशन सदा के लिए बंद हो गया ।

'कुमार' नामक एक पत्रिका कालाकांकर से कुँ. सुरेश सिंह के संपादन में निकलती थी जिसका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं । इसके अतिरिक्त 'कुमार' नामक एक और बच्चों की पत्रिका सन् 1944 में राजमल लोढ़ा के संपादन में मंदसौर (ग्वालियर) में प्रकाशित होती थी। सन् 1946 में व्यथितहृदय ने प्रयाग से 'तितली नामक बच्चों की एक पत्रिका प्रकाशित की थी । यह रंगबिरंगे कागज में बड़े आकर्षक ढंग से छपती थी । व्यथितहृदय स्वयं एक अच्छे बाल साहित्यकार होने के साथ-साथ सफल संपादक भी रहे हैं इसलिए उनके संपादन में कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण अंक निकले जो बाल साहित्य की धरोहर है ।

सन् 1947 में ठा. श्रीनाथसिंह के संपादन में प्रयाग से 'बालबोध' का प्रकाशन सुखकर रहा है । इसमें नियमित कविताएं, कहानियाँ, लेख, चुटकुले आदि प्रकाशित होते थे । इनके अतिरिक्त इसमें बच्चों के पत्र, प्रश्नपिटारी, वानर सेना आदि प्रमुख स्तम्भ थे । इसी काल में असमय काल कवलित होने वाली बाल पत्रिकाओं में उदयपुर से प्रकाशित 'बाल हित', इलाहबाद हो प्रकाशित 'लल्ला', 'मदारी' और 'किशोर भारती' आदि पत्रिकाएं महत्वपूर्ण हैं । इन पत्रिकाओं ने बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, परन्तु व्यावसायिकता की दौड़ में पीछे रहने के कारण इनका आस्तित्व ही लुप्त हो गया । इनका इतिहास अंधकारमय है ।

15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हो गया । भारत में स्वाधीनता की लहर फैल गई, लोगों ने राहत की सांस ली । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बाल पत्रकारिता के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ फलत: कई नई बाल पत्रिकाएँ उभरकर सामने आई, जिनमें से कुछ तो अभी भी प्रकाशित हो रही

हैं । ऐसी पत्रिकाओं में 'बाल भारती' सन् 1948 से लगातार भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित हो रही हैं । इसके कागज और मुद्रण का स्तर प्रशंसनीय होता है । इसके चित्र बहु त ही साफ़ सुथरे और आकर्षक होते हैं । सामग्री की दृष्टि से इसमें विविधता पाई जाती है ।

सन् 1949 में इलाहाबाद से 'मनमोहन' प्रकाशित हुई थी । आरम्भ में इसके संपादक ठाकुर श्रीनाथ सिंह थे, बाद में इसका कार्यभार सत्यव्रत जी ने संभाला । 'मनमोहन' की साज-सज्जा बहु त आकर्षक नहीं होती थी, परन्तु इसमें रचनाएँ उच्चकोटि की प्रकाशित होती थी । नये रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता था । इसी वर्ष दिल्ली से ' अमर कहानी' का प्रकाशन हु आ जो 1966 तक नियमित प्रकाशित होने के बाद बंद हो गई ।

अहिन्दी भाषी प्रदेश मद्रास के मासिक 'चंदामामा' का प्रकाशन स्वागतयोग्य कदम रहा है । यह पत्रिका बच्चों से अधिक उनके अभिभावकों में लोकप्रिय है, क्योंकि इसमें भूत-प्रेत, वैताल और राजा रानी की कहानियाँ प्रकाशित की जाती हैं । इसमें बच्चों की कविता को कोई स्थान नहीं दिया जाता है । सम्भवत: संपादक की दृष्टि में बाल कविताओं का कोई महत्व नहीं है । बच्चों की मानसिकता को गहराई से पकड़ने की आवश्यकता इस पत्रिका को है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की बाल पत्रिकाओं में 'चुन्नू -मुन्नू ' का अपना विशेष महत्व हे । इस पत्रिका का प्रकाशन पटना (बिहार) से होता था तथा इसके आदि संपादक रामवृक्ष वैनीपुरी थे । बाद में इसका संपादन जयनाथ मिश्र ने संभाला। यह पत्रिका आकर्षक और रंग-बिरंगे डिजाइनों में प्रकाशित होती थी । इसमें कविताओं के अतिरिक्त लोक कथाओं और चुटकुलों को मुख्य रूप से स्थान दिया जाता था । यह पत्रिका बच्चों में बेहद लोकप्रिय थी ।

15.4.3 विकास काल

सन् 1951 में प्रो. लेखराज उल्फत के संपादन में 'नन्हीं दुनिया' नामक बाल मासिक का प्रकाशन प्रारंभ हु आ था । प्रो. उल्फत एक कुशल संपादक के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं । उनके संपादन में पत्रिका लम्बी अवधि तक प्रकाशित होती रही, बाद में आर्थिक कठिनाइयों के कारण इसका प्रकाशन बंद हो गया ।

सन् 1955 में नई दिल्ली से जहाँ ' बालमित्र' का प्रकाशन हु आ वहीं जयपुर से 'वानर' नामक मासिक बाल पत्रिका निकली। प्रसिद्ध व्यावसायिक संस्थान से सम्बद्ध होने के कारण ' वानर' की साज-सज्जा आकर्षक की जाती थी, परन्तु रचनाओं का स्तर बहु त सामान्य होता था । एक लम्बे अरसे तक छपने के बावजूद भी यह पत्रिका बच्चों में अपना कोई विशेष स्थान नहीं बना सकी जबकि इसकी समकालीन इलाहाबाद से पं. रामनरेश त्रिपाठी के संपादन में प्रकाशित 'वानर' पत्रिका ने अच्छी ख्याति अर्जित की ।

सन् 1957 में तरुण भाई के संपादन में मासिक 'जीवन शिक्षा ' का प्रकाशन प्रारंभ हु आ । उत्तर प्रदेश सरकार की क्रय-नीति के बल पर छपने वाली इस पत्रिका ने 25 वर्षो की लम्बी यात्रा पूरी की, परंतु बच्चों में विशेष लोकप्रियता नहीं अर्जित कर सकी । हां, गांधीजी की 'बुनियादी' शिक्षा का स्पष्ट प्रभाव पत्रिका के पुराने अंकों पर देखा जा सकता है । इसके प्रमुख लेखकों में रामसिंहासन सहाय ' मधुर', रामबचनसिंह ' आनंद', विष्णुकांत पांडेय, निरंकार देव सेवक आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इसी वर्ष दिल्ली से बच्चों की एक और मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ ।'स्वतंत्र बालक' इस बाल पत्रिका के संपादक रत्न प्रकाश शील थे । शील जी ने इसका प्रकाश बाल साहित्य की नवीन संभावनाओं को मद्देनजर रखते हुए किया था । जिसमें उन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई । इसे तत्कालीन प्रमुख बाल साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त था । इसी वर्ष जालन्धर से 'भारत ज्योति' का प्रकाशन अपने आप में एक साहसिक कदम था । सुरेश वर्मा के संपादन में प्रकाशित इस पत्रिका में पंजाब के प्रमुख हिन्दी बाल साहित्यकारों की रचनाएं प्रकाशित की जाती थी । इसमें नवलेखन को भी विशेष प्रोत्साहन किया जाता था ।

सन् 1958 में बच्चों की समस्याओं और उनके मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर ' पराग' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन बम्बई से प्रारंभ हुआ । इसके तत्कालीन संपादक सत्यकाम विद्यालंकार थे । इसके बाद आनंद प्रकाश जैन के संपादन में शिशु गीतों, एकांकी, नाटकों तथा बाल उपन्यासो को विशेष रूप से प्रोत्साहन मिला । श्री जैन सही अर्थों में मंचीय बाल नाटकों और सफल शिशु गीतों के कुशल शिल्पी थे । संपादक की यह टिप्पणी 'पराग' के हर अंक में छपती थी : - 'पिछले कई वर्षों से 'पराग' में शिशु गीत छापे जा रहे हैं । इन शिशु गीतों के चयन में बड़ी सावधानी बरती जाती है क्योंकि शुद्ध शिशु गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है । इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं । ये गीत ऐसे होने चाहिए कि इन्हें चार से छह साल तक के बच्चे आसानी से जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद लें सके । इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलता से जबान पर चढ़ जाती है । '

उपर्युक्त टिप्पणी सहित प्रकाशित 'पराग' अक्टूबर, 1969 के दो शिशु गीत हैं -

चली खेत पर चुहिया रानी
चूहे का ले खाना
मिले राह में गदहे दादा
लगे सुनाने गाना
चुहिया बोली - 'भइया, तुम तो
सचमुच अच्छा गाते
समझ न आता तुम्हें क्यों नहीं
फिल्मों में बुलवाते

बंदर बोला जानवरों से,
'खबर एक है ताजा,
कल से मैं ही बन जाऊँगा
इस जंगल का राजा
तभी दहाड़ा शेर जोर से,
बोला- ' जल्दी जाओ ।
राजा बनना पीछे, पहले
मुंह तो धोकर आओ ' ।

पराग की लम्बी विकास यात्रा को आगे बढ़ाने का श्रेय इसके संपादकों -कन्हैयालाल नंदन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा डा. हरिकृष्ण देवसरे को है । लगभग पैतीस वर्ष की लम्बी यात्रा पूरी करके 1992 में 'पराग' का प्रकाश बंद हो जाना बाल पत्रकारिता के लिए सचमुच एक दु :खद घटना है ।

इसी वर्ष लुधियाना से ' शोभा' नामक पत्रिका भी प्रकाशित हुई । यह मासिक पत्रिका थी तथा इसके संपादक संत राय थे । इसकी 600 प्रतियां प्रति अंक प्रकाशित होती थी । जालंधर सिटी से 'नन्हे -मुन्ने ' मासिक पत्रिका भी इसी वर्ष प्रकाशित हुई थी । वाराणसी से 'राजा बेटा' के प्रकाशन से बाल साहित्य में विशेष गति आई । इसमें बच्चों के अनुरूप उन्हीं की भाषा में, उन्हीं के मानसिक स्तर पर उतरकर रचनाओं का सृजन करने वाले लेखकों की रचनाएं प्रमुखता के साथ प्रकाशित की जाती थी

। सन् 1958 में ही मुरादाबाद से ' बालबन्धु ' नामक बच्चों की मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई थी । इसके संपादक शांति प्रसाद दीक्षित थे । इसका मूल्य 35 पैसे प्रति अंक था । आरंभ में यह पत्रिका खूब सज- धज कर निकली परंतु बाद में इसे विशेष सफलता नहीं मिली ।

सन् 1959 में चक्रधरपुर, सिंहभूमि (बिहार) से 'मीनू-टीनू नामक मासिक पत्रिका रमाकांत पांडेय के संपादन में प्रकाशित हुई थी । इसमें प्रमुख रूप से कविताएं और कहानियां ही प्रकाशित की जाता थी । परंतु इसके अतिरिक्त भी पत्रिका के कुछ अपने स्तम्भ थे । ढेर सारी अच्छाइयों को समेटे हुये यह पत्रिका अपने शैशवकाल में ही काल-कवलित हो गई ।

सन् 1959 में ही नई दिल्ली से 'राजा भैया' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । इसके संपादक दयाशंकर मिश्र 'दद्दा' थे । लगभग दो दशक तथा प्रकाशित होने के बावजूद भी यह पत्रिका बच्चों में अपना कोई विशेष स्थान नहीं बना सकीं । इसी वर्ष अमृतसर से रंगबिरंगी 'बाल फुलवारी' गुरुचरणसिंह साखी के संपादन में प्रकाशित हुई थी । इसमें बच्चों की रोचक रचनाएं विशेष साज- सज्जा के साथ प्रकाशित की जाती थी । लगभग एक दशक तक प्रकाशित होने के बाद इसका प्रकाशन बंद हो गया । परंतु बाल पत्रकारिता के इतिहास में यह अपनी अमिट छाप छोड़ गई है ।

सन् 1960 में करनाल से ' बालजीवन', अम्बाला से 'बच्चों का खेल खिलौना', कानपुर से ' हमारा शिशु ' तथा फैजाबाद से ' सम्भल' नामक बाल पत्रिकाएं प्रकाशित हुई । अपने - अपने सीमित साधनों से प्रकाशित इन बाल पत्रिकाओं ने बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया लेकिन अंत में आर्थिक बोझ न संभाल पाने के कारण इनका प्रकाशन स्थगित हो गया।

सन् 1960 के बाद प्रकाशित होने वाली बाल पत्रिकाओं में ' बेसिक बाल शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है । भार्गव परिवार के संपादन में प्रकाशित इस पत्रिका में बच्चों के लिए शिक्षाप्रद तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्रकाशित की जाती थी । उत्तर प्रदेश सरकार की पत्रिका क्रय-नीति के बल पर यह पत्रिका लगभग डेढ़ दशक तक प्रकाशित होती रही, अंत में सरकारी दौड में पीछे रहने के कारण इसका प्रकाशन स्थगित हो गया ।

सन् 1961 में वाराणसी से 'फुलवारी ' नामक नन्हें -मुन्नों की प्रिय मासिक पत्रिका कुंवर जी अग्रवाल के संपादन में प्रकाशित हुई थी । इसकी एक प्रति का मूल्य 50 पैसा तथा वार्षिक मूल्य 6 रुपया था । ' फुलवारी' में बच्चों की अभिरुचियों, उनकी जिज्ञासाओं तथा मनोरंजन का विशेष ध्यान दिया जाता था । संपादक महोदय ने अपने संपादकीय में एक जगह लिखा था- 'तुम्हारे लिए मैं सुन्दर कविताएं, कहानियां, चित्र, ज्ञान-विज्ञान की बातें तथा तरह-तरह के सामान बनाने की योजनाएं प्रस्तुत करता हूँ ।मैं चाहता हूँ कि तुम फुलवारी पढ़कर खुश हो जाओ, इससे तुम्हारा मनोरंजन हो, तुम नयी-नयी बातें जान सको, इसकी सहायता से तुम अच्छी- अच्छी चीजें बना सकीं ।

इस पत्रिका में संपादक महोदय लेखकों से आग्रह करके बच्चों के मनोनुकूल सामग्री लिखवाते थे । लगभग एक दशक तक प्रकाशित होने के बाद इसका प्रकाशन बंद हो गया । सन् 1962 में दिल्ली से 'बाल दुनिया' (संपादक प्रदीप कुमार अरोरा), लखनऊ से 'बाल वाटिका' (संपादक पी. एस. पांडेय) नामक बाल पत्रिकाओं का उल्लेख मिलता है, परन्तु इनका इतिहास अंधकार में हैं।

सन् 1963 में पंडित शिव नारायण उपाध्याय के संपादन में बालिकाओं की एक पत्रिका 'रानी बिटिया' का प्रकाशन आरम्भ हुआ । हिन्दी में बालकों के लिए तो कई पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रही

है, परन्तु विशेष रूप हो बालिकाओं के लिए पत्रिका का प्रकाशन नहीं के बराबर है । 'रानी बिटिया' का प्रकाशन इस क्षेत्र में एक साहसिक और स्वागतयोग्य कदम था । इसमें ऐतिहासिक और आदर्शवादी कहानियों के अतिरिक्त सिलाई, कढ़ाई और रसोई की तरफ विशेष ध्यान दिया जाता था । 1972 के बाद इसका प्रकाशन बद हो गया ।

सन् 1964 में ' शेरसखा ' पत्रिका सर्वप्रथम ' शेरबच्चा' नाम से प्रकाशित हुई । समाचारपत्र पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत कुछ माह पश्चात् जब उसका पंजीकरण हुआ तो ' शेरबच्चा' नाम स्वीकृत न होने के कारण उसे ' शेरसखा' नाम दिया गया । यह बच्चों की मासिक पत्रिका थी तथा 1966 ई. तक नियमित प्रकाशित हुई ।इस अवधि में उसने बाल साहित्य जगत एवं बाल पाठकों में अपनी विशिष्टताओं के कारण लोकप्रियता अर्जित की । ' शेरसखा' का अद्वितीय विशेषांक था - ' विश्व बालक अंक' 1965 में प्रकाशित हुआ था । इसमें संसार को चालीस विकासशील देशों के बालकों का जीवन, दर्शनीय स्थल, पर्व, राष्ट्रीय उत्सव, पशु -पक्षी डाक टिकट शिक्षा प्रणाली आदि की रोचक एवं प्रामाणिक जानकारी बड़े परिश्रम से विदेशी दूतावासों के सहयोग से एकत्र की गई थी । प्रारम्भ से लेकर अंत तक शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव इसके संपादक रहे । श्रीवास्तव जी ने इस पत्रिका में पांच -छः छद्म नामों से भी रचनाएं लिखी । शेरसखा के प्रमुख लेखकों में उललेखनीय नाम हैं - डा. हरिकृष्ण देवसरे, राष्ट्रबन्धु, चन्द्रपालसिंह यादव ' मयंक', मंगरूराम मिश्र, सरस्वती कुमार दीपक, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, शकुन्तला सिरोठिया आदि ।

इसी वर्ष 1964 में ही बच्चों की एक और प्रमुख पत्रिका 'नंदन' का प्रकाशन आरंभ हुआ । बच्चों की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में इसका प्रमुख स्थान है । पत्रिका के आदि संपादक राजेन्द्र अवस्थी ने 'नंदन' को जो मंच प्रदान किया था उसे जय प्रकाश भारती निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं । 'नंदन' का संपादकीय विभाग बाल पत्रकारिता की दृष्टि से काफी संपन्न है । इसमें लगभग सभी चुने हुए पत्रकार है । इधर 'नंदन बालसमाचार' का प्रकाशन काफी लोकप्रिय हुआ । भारती जी का नियमित स्तंभ 'आओ बात करें' बाल पाठकों में बेहद लोकप्रिय है । इसके माध्यम से भारती जी ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक तथा महत्वपूर्ण घटनाओं को बाल पाठकों तक पहुँचाते हैं । फिलहाल, 'नंदन' की दो लाख से ऊपर प्रतियां प्रकाशित होती हैं ।

सन् 1965 में नई दिल्ली से 'मिलिन्द' (संपादक : रत्न प्रकाश शील), बरेली से 'गुलबाल' (संपादक : वीरेन्द्र नाथ ग्रोवर), इलाहाबाद से 'जंगल' (संपादक. आनंद कमल) तथा अलीगढ़ से 'अलीगढ़ के शिशु' नामक बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई, हुई, परन्तु इनमें से कोई पत्रिका दीर्घजीवी न रह सकी । शैशवावस्था में ही इनका बंद होना बाल पत्रकारिता की एक दुखद घटना है ।

सन् 1966 में पटना से 'चमकते सितारे' (संपादक : ब्रजेश्वर मलिक) मासिक ने बच्चों में खूब लोकप्रियता अर्जित की। इसी के समकालीन प्रकाशित 'बाल प्रभात' (संपादक : श्री प्रकाश जैन) को भी बच्चों ने जी जान से अपनाया । इसी वर्ष लखनऊ से प्रकाशित 'शिशु बन्धु' (सं. : श्रीमती सरोजिनी कुलश्रेष्ठ) की अधिकांश प्रतियां बच्चों में मुफ्त बांट दी जाती थी, परन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण इनका प्रकाशन स्थगित हो गया ।

सन् 1967 में लखनऊ में 'बालजगत' (सं. : ऊषा तिवारी) का प्रकाशन सुखकर रहा है । अपने सीमित साधनों के बावजूद यह पत्रिका बड़ी आकर्षक निकली थी । इसी वर्ष इंदौर से महेन्द्र जोशी के

संपादन में पहली बार 'बच्चों का अखबार' प्रकाशित हुआ था । इस वर्ष की अन्य बाल पत्रिकाओं में अजमेर से प्रकाशित 'छात्र हितैषी' (सं. मनमेल जैन), जबलपुर से प्रकाशित 'नटखट' (सं.: अशोक कुमार विश्वकर्मा) ने बाल साहित्यकारों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया ।

सन् 1968 में लुधियाना से 'बालकुंज' (सं. : रमेश कुमार बालरतन), दिल्ली से 'पूत सपूत' (सं. : देवकी नंदन शर्मा) तथा 'चंपक' (सं. : विश्वनाथ) का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । 'चंपक' की प्रारम्भ से ही अपनी कुछ संपादकीय एवं व्यावसायिक नीतियों रही है । यह पत्रिका आज भी अपनी नीतियों के बल पर चल रही है ।

बाल साहित्य लेखन में हास्य-व्यंग्य का बहुत अभाव है । कुछ रचनाएं हास्यपरक तो लिखी गई है, परन्तु जहाँ तक व्यंग्य का सवाल है, इस क्षेत्र में अभी भी अकाल ही नजर आता है । इसी अभाव को ध्यान में रखकर सन् 1969 में हास्य-व्यंग्य की अनूठी पत्रिका 'लोट पोट' का प्रकाशन मासिक रूप में प्रारंभ हुआ परंतु बाद में व्यावसायिक दृष्टिकोण को दिखते हुये इसे साप्ताहिक कर दिया गया । यह पत्रिका आज भी प्रकाशित हो रही है परंतु इसे पूरी तरह चित्रकथा की पत्रिका बना दिया गया है । इसी वर्ष मुजफ्फरपुर (बिहार) से 'चन्द्र खिलौना' (सं.:मुरलीप्रसाद सिंह) आकर्षक साज-सज्जा तथा मनमोहन चित्रों के साथ सन् 1970 में दिल्ली से 'बाल रंगभूमि' (सं. : सत्येन कुमार गुप्ता), 'मुन्ना' (सं.: प्रखर बुद्धि कपूर) तथा 'गोलगप्पा' (सं. : महेन्द्र प्रताप गर्ग) प्रकाशित हुई थी ।

15.4.4 आधुनिक काल

सन् 1971 में दो कॉमिक्स 'हिन्दी कॉमिक्स एवं महाबली कॉमिक्स का प्रकाशन बाल साहित्य प्रेमियों के लिए निश्चय ही महत्वपूर्ण रहा है । इन पत्रिकाओं ने बच्चों के लिए सार्थक तथा उपयोगी साहित्य प्रकाशित किया ।

सन् 1972 में जहाँ दिल्ली से डा. मस्तराम कपूर 'उर्मिल' ने 'बच्चे और हम' का प्रकाशन किया, वही लखनऊ से घनश्याम रंजन ने 'चमाचम' निकालकर बच्चों की लेखन प्रतिभा को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया । 'बच्चे और हम' अल्पकाल तक निकलकर बंद हो गई जबकि 'चमाचम' अभी भी निरंतर प्रकाशित हो रही है ।

सन् 1973 में श्रीमती ऊषा कुमारी के संपादन में दिल्ली से 'गुरु चेला', पी. एल. बजाज एवं निर्मल जोशी के संपादन में हँसती दुनिया' तथा शशि प्रभा अग्रवाल के संपादन में 'किशोर मिलिन्द' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । साथ ही इसी वर्ष मद्रास से 'गुड़िया' तथा लखनऊ से 'बाल बन्धु' नामक बाल पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुई ।

इस पाठ में पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि बाल साहित्य में हास्य-व्यंग्य लेखन का बहुत अभाव रहा है । इस दिशा में जो भी कार्य हुआ वह'ऊँट के मुँह में जीरा' के समान है । इसी अभाव को ध्यान में रखते हुये सुप्रसिद्ध हास्य व्यंग्य लेखक के पी. सक्सैना के अतिथि संपादन में 1975 में लखनऊ से 'लल्लू-पंजू' नामक मासिक बाल-पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । इसमें व्यंग्यचित्र कथाएँ, कार्टून और चुटकुले प्रमुखता के साथ प्रकाशित ।किये जाते थे ।

सन् 1975 में ही नई दिल्ली से अंजु बजाज एव सरोजनी प्रीतम के संयुक्त संपादन में ' शावक', नई दिल्ली से ही विश्वदीप के संपादन में 'बालेश', लखनऊ से रवीन्द्र श्रीवास्तव के संपादन में 'बालरुचि',

जालंधर छावनी से मनमोहन सहगल के संपादन में 'देवछाया' तथा कानपुर से नरेश चन्द्र सक्सेना 'सैनिक' के संपादन में 'बालदर्शन' नामक बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई । इनमें से'बालदर्शन' को छोड़कर सारी पत्रिकाएं बंद हो चुकी है । बालदर्शन अभी भी नई साज-सज्जा और ऑफसेट पद्धति से श्रीमती मानवती आर्य के संपादन में प्रकाशित हो रही है ।

सन् 1977 में 'शिशुरंग' का प्रकाशन कानपुर से करुणेश वर्मा के संपादन में हुआ । इस पत्रिका में कविताओं और कहानियों के अतिरिक्त खेल जगत, ज्ञान जगत, कार्टून-फीचर, रंग भरो प्रतियोगिता आदि प्रमुख स्तम्भ प्रकाशित किये जाते थे। इसी वर्ष नई दिल्ली से 'कलरव' (सं. रमेश कुमार राणा), वाराणसी से ' आदर्श बाल सजा' (सं. : राम प्रवेश चौबे), इंदौर से ' ओ राजा' (सं. त्रिलोक सिंह खानुजा) तथा कानपुर से 'बाल साहित्य समीक्षा' (सं. : डा. राष्ट्रबन्धु) का प्रकाशन आरंभ हुआ । इनमें से केवल 'बाल साहित्य समीक्षा प्रकाशित हो रही है, शेष पत्रिकाएं बंद हो चुकी है । बाल साहित्य समीक्षा' अपने नाम के अनुरूप समीक्षात्मक सामग्री प्रस्तुत करती है साथ ही साथ इसमें नवलेखन को विशेष प्रोत्साहन दिया जाता है ।

सन् 1978 में मथुरा से प्रकाशित 'बाल पताका' (सं. : श्याम कुमार दास) ने लघु पत्रिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया था । पत्रिका का कलेवर लघु होने के कारण इसमें छोटी-छोटी रचनाओं को ही स्थान दिया जाता था । इसी के समकालीन जयपुर से प्रकाशित 'मुस्कराते फूल' ने बच्चों को विशेष रूप से प्रभावित किया। आकर्षक और रंग इस साप्ताहिक पत्रिका के संपादक श्याम बिहारी भटनागर थे ।

सन् 1979 में जालंधर से प्रकाशित 'बाल कल्पना' ने बच्चों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया । इसी वर्ष कलकत्ता से प्रकाशित 'मेला' (सं. योगेन्द्र कुमार लल्ला) ने बाल साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान बनाया । 'मेला' की सामग्री तथा छपाई का स्तर इतना आकर्षक होता था कि बच्चे इसे देखते ही पाने के लिए लालायित हो उठते थे । 'मेला' का प्रकाशन मुख्य रूप से किशोरों को ध्यान में रखकर किया गया था । 'मेला' के समकालीन ग्वालियर से 'देवपुत्र' सरस्वती शिक्षा परिषद, मध्यप्रदेश द्वारा संचालित मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ ।'देवपुत्र' को पढ़ने से ऐसा लगता है कि इसमें रचनाओं का चयन बड़े साधारण ढंग से किया जाता था । संप्रति, 'देवपुत्र' इंदौर से कृष्ण कुमार अष्ठाना के संपादन में नियमित प्रकाशित हो रही है ।

सन् 1980 में अकोला (चित्तौड़गढ़) से 'राकेट' नामक बच्चों की एक लघु पत्रिका का प्रकाशन राजकुमार जैन 'राजन' के संपादन में प्रारंभ हुआ ।'राकेट' के कुछ अंक कामचलाऊ ढंग से किसी तरह प्रकाशित किये गये, परंतु अन्त में आर्थिक बोझ न संभाल पाने के कारण इसका प्रकाशन स्थगित हो गया । इसी वर्ष नई दिल्ली से 'बाल मन' (सं. : सूर्य नगर सक्सैना) तथा कानपुर से 'बाल रत्न' (सं. नरेन्द्र कुमार) प्रकाशन बाल पत्रकारिता की दिशा में एक अभिनव प्रयास थी। ये दोनों बाल पत्रिकाएँ अपरिमित संभावनाएं लेकर सामने आई थी परन्तु अपनी खूबियों ओर अच्छाइयों को समेटे हुये एक वर्ष के अंदर ही काल के गाल में समा गई ।

सन् 1981 में रतलाम, मध्य प्रदेश से रमेश गुप्ता 'चातक' के संपादन में 'कुटकुट' प्रकाशित हुई थी । पत्रिका प्रवेशांक से ही आकर्षक साजसज्जा के साथ प्रकाशित हुई । इसका मुख्य पृष्ठ दुरंगा-तिरंगा तथा आकर्षक होता था । 'कुटकुट' में कविताओं और कहानियों के अतिरिक्त व्यंग्य चित्र

कथाएँ भी प्रकाशित की जाती थी । इसी वर्ष हरियाणा से ' नन्हें तारे' (सं. पुष्पकुमार सिंह) तथा कानपुर से 'नन्हीं मुसकान' (सं. श्याम निगम) का प्रकाशन बाल पत्रकारिता के लिए अत्यंत सुखकर रहा है । सन् 1981 में ही बच्चों के दो अखबार ' नन्हें -मुन्नों का अखबार' (सं.. प्रदीप सौरभ एव अजामिल) तथा 'दि चिल्ड्रेन टाइम्स' (सं. : नरेन्द्र निर्मल एवं प्रमेन्द्र श्रीवास्वत) भी प्रकाशित हुये, परंतु धनाभाव के कारण अल्पकाल में ही इनका प्रकाशन स्थगित हो गया । ' नन्हे - मुन्नों का अखबार' और 'दि चिल्ड्रेन टाइम्स जैसे बालपत्रों का धनाभाव के कारण प्रकाशन बन्द होना बड़े दुख की बात है, क्योंकि ऐसे पत्रों से बच्चे सीधे जुड़ते हैं । अत: यह हमारा कर्त्तव्य बनता है कि ऐसे पत्रों के अस्तित्व को बनाए रखने में हम सहयोग दें तथा असमय उन्हें काल-कवलित होने से बचायें।

सन् 1982 अहमदनगर (महाराष्ट्र) से ' आनंद दीप' (सं. : दयानंद शर्मा 'मधुर'), इलाहाबाद से ' बाल नगर' (सं. : शील एम. ए. एवं कुणाल श्रीवास्तव), बहराइच के 'चंदन' (सं. अजीजुल्लाह खां) तथा लखनऊ से ' लल्लू जगधर' (सं. : प्रेमचन्द गुप्त 'विशाल ') नामक बाल पत्रिकाएं प्रकाशित हुई, परंतु 'लल्लू जगधर' को छोड़कर शेष कोई भी पत्रिका इस समय जीवित नहीं है । चूँकि ' लल्लू जगधर' अर्द्धवार्षिक पत्रिका है तथा इसके संपादक विशाल स्वयं बाल साहित्यकार हैं, इसलिए वे किसी तरह अपने प्रयत्न से आगे -पीछे इसे निकाल रहे हैं ।

सन् 1983 में दिल्ली प्रेस से ' सुमन सौरभ' नियमित प्रकाशित हो रही है । यह रंगीन साज-सज्जा तथा आकर्षक मुख्यपृष्ठ के साथ प्रकाशित होती है । यह प्रमुख रूप से किशोरों के लिए प्रकाशित की जाती है तथा रचनाओं का चयन भी उन्हीं के वर्ग के अनुरूप होता है । संप्रति, यह पत्रिका मासिक रूप में अपार साधन सामर्थ्य के बल पर प्रकाशित हो रही है।

सन् 1984 में दिल्ली से भूपेन्द्र गांधी के संपादन में 'किलकारी' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इसमें रंग-बिरंगी कई चित्रकथाएँ हर बार प्रकाशित की जाती थी । नन्हे-मुन्नों को भाने वाली छोटी-छोटी कहानियाँ तथा मनमोहक शिशुगीत इसके विशेष आकर्षक होते थे । ' किलकारी' ने शिशु साहित्य को भरपूर प्रोत्साहन प्रदान किया है । आज ऐसी बाल पत्रिकाओं की महती आवश्यकता है । इसी वर्ष सीकर (राजस्थान) से 'उपवन' (संपादक : सलीम खान 'फरीद') का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ परंतु अपने शैशव काल में ही इसका प्रकाशन स्थगित हो गया ।

मध्य प्रदेश के होशंगाबाद विज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्यरत शिक्षकों के लिए एक बुलेटिन (पत्रिका) का प्रकाशन सन् 1980 में शुरू हुआ- ' होशंगाबाद विज्ञान' । यह देखा गया कि लोगों से संवाद स्थापित करने के लिए पत्रिका एक अच्छा माध्यम है, पर बच्चों तक पहुँचाने का ऐसा कोई माध्यम उपलब्ध नहीं था । धीरे- धीरे ' होशंगाबाद विज्ञान' में ही बच्चों के लिए कुछ सामग्री डालना शुरू किया गया । जैसे-माथापच्ची, विज्ञान की कहानियां, जीव जंतुओं की कहानियां आदि । बच्चों ने बड़ी संख्या में पत्रिका खरीदना शुरू किया पर एक ही पत्रिका के माध्यम से शिक्षक और बच्चों तक पहुँचना जरा मुश्किल था । अंत में तय किया गया कि बच्चों के लिए एक पत्रिका अलग से निकाली जाए । 'होशंगाबाद विज्ञान' का नाम बदलने के लिए एक प्रतियोगिता की गई । उस प्रतियोगिता में जो नाम आये उनमें 'चकमक' भी एक था । फलत: ' होशंगाबाद विज्ञान' का नाम तो नहीं बदला, पर 'चकमक' नाम बच्चों की पत्रिका के लिए चुन लिया गया।

सन 1985 से 'चकमक' एकलव्य संस्था द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है । 'चकमक' का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति' कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है । 'चकमक' के संपादक विनोद रायना हैं । इसका भविष्य उज्जवल है । आशा है इससे बच्चों को निरन्तर भरपूर प्रोत्साहन मिलता रहेगा ।

सन् 1985 में ही बाल साहित्य संस्थान लखनऊ से पहली बार बच्चों की वार्षिक पत्रिका 'बाल कविता' का प्रकाशन प्रारंभ हु आ । इसके प्रधान संपादक विनोद चन्द्र पांडेय'विनोद' हैं । बाल पत्रकारिता के इतिहास में सर्वप्रथम बाल कविताओं को ही केन्द्र में रखकर 'बाल कविता' का प्रकाशन निश्चिय ही महत्वपूर्ण है । इस पत्रिका के सभी अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किये जाते हैं । यह पत्रिका बाल कविता पर शोध करने वालों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं ।

सन् 1986 में इलाहाबाद से ' अच्छे भैया' (प्रधान सं. सतीश चन्द्र अग्रवाल), मथुरा से 'नये फूल धरती के ' (सं. जयव्रत चटर्जी) तथा जयपुर (राजस्थान) से ' बालहंस' (सं. अनंत कुशवाहा) का प्रकाशन प्रारंभ हु आ ।' अच्छे भैया' तथा 'नये फूल धरती के' बाल पत्रिकाएं कुछ समय तक निकलकर बंद हो गई परन्तु 'बालहंस' अभी भी नयी-नयी आकर्षक योजनाओं तथा बालोपयोगी प्रतियोगिताओं सहित प्रकाशित हो रही है । 'बालहंस' की साज-सज्जा नयनाभिराम तथा मुख्यपृष्ठ बड़ा लुभावना होता है ।

सन् 1987 में बच्चों के परमप्रिय चाचा नेहरू के जन्म दिन 'बाल दिवस' के उपलक्ष्य में नई दिल्ली से ' बाल मंच ' का प्रकाशन आरंभ हुआ । बच्चों की रचनाओं को 'बाल मंच' में सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाता था जिससे उनकी लेखन प्रतिभा को आगे आने का अवसर मिले । इसमें रचनाएं उपयुक्त साज-सज्जा के साथ प्रकाशित की जाती थी । 'बाल मंच' बच्चों के लिए उपयोगी मंच था, लेकिन दु:ख की बात है कि इसे अधिक समय तक बच्चों की प्रतिभा को निखारने का अवसर नहीं मिला, अन्यथा इससे बाल साहित्य को निश्चय ही नवीन दिशा मिलती ।

सन् 1988 से नई दिल्ली से 'नन्हे सम्राट' नियमित प्रकाशित हो रही है । इसमें कहानियों और लेखों को भरपूर साज-सज्जा के साथ प्रकाशित किया जाता है परन्तु बाल कविताओं के लिए इसमें कोई स्थान नहीं है । 'नन्हें -सम्राट' की रचनाओं में प्राय: बासीपन झलकता है । आशा है भविष्य में इसमें मौलिकता और ताजगी के दर्शन होंगे, जिससे बाल साहित्य का कुछ तो भला हो सके । सन् 1988 से ही कटिहार (बिहार) से 'किशोर लेखनी' प्रकाशित हो रही है । अनियतकालीन इस पत्रिका के अब तक सात अंक प्रकाशित हो चुके हैं । इसका बाल साहित्य संभावना अंक विशेष रूप से चर्चित रहा है । संपादक देवेन्द्र कुमार 'देवेश' में काफी उत्साह तथा उनकी लेखनी में ताकत है । आशा है भविष्य में 'किशोर लेखनी' अपनी अलग पहचान बनायेगी ।

सन् 1989 में नई दिल्ली में 'बालमेला' (सं. : राधेश्याम 'प्रगल्भ') भोपाल (म.प्र.) से 'समझ झरोखा' (सं. : लक्ष्मीनारायण पयोधि) तथा लखनऊ से 'यूपी. नन्हा समाचार' नामक पत्र- पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हु आ । 'बालमेला' का प्रकाशन निश्चय ही बड़ा साहसिक और महत्वपूर्ण था परंतु विज्ञापन के अभाव में इसका प्रकाशन बंद हो गया। 'समझ झरोखा' नियमित प्रकाशित हो रही है, इससे बाल साहित्य को बहु त आशाएँ हैं ।

15.4.5 शताब्दि - समापन काल

सन् 1992 में दिल्ली से एच. सी. तनेजा के संपादन में 'पमपम' नामक बाल पत्रिका प्रकाशित हुई थी परंतु अल्पकाल में ही इसका प्रकाशन बंद हो गया । इसी कड़ी में 'बालपरंपरा' बाल पत्रिका के कुछ अंक भी प्रकाशित हुए परंतु इनका प्रकाशन नियमित नहीं हो सका । नगर बाजार, बस्ती से डॉ. मुनिलाल उपाध्याय ' सरस' के संपादन में 'बालसेतु' त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है । हालांकि मुद्रण की दृष्टि से अभी इसमें काफी सुधार की आवश्यकता है ।

चर्चित बाल साहित्यकार डॉ. भैरूलाल गर्ग 1996 से लगातार 'बालवाटिका' नामक मासिक बाल पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं । 'बालवाटिका' ने धीरे- धीरे लेकिन निश्चित रूप से बाल साहित्य के लेखकों, पाठकों तथा संपादकों के बीच में अपनी जगह बनाई है । इससे बाल साहित्य जगत को बहुत आशाएं हैं ।

इसके अतिरिक्त नई दिल्ली से 'तमाशा' बाल पत्रिका प्रकाशित हो रही है । 'बाल सुमन' नामक बच्चों की एक अनियतकालीन पत्रिका चाचा नेहरू अखिल भारतीय बालमित्र सभा, बस्ती (उ.प्र.) से प्रकाशित होती रही है । अब तक इसके कुल सात अंक निकल चुके हैं । इसका ' बाल फिल्म आंदोलन विशेषांक' विशेष रूप से चर्चित रहा है ।

उपर्युक्त पत्रिकाओं के अतिरिक्त इलाहाबाद से 'सम्पा', ' अगर के गुच्छे', बिहार से 'मुन्ना मुन्नी', भोपाल से 'बच्चों की दुनिया, फगवाड़ा (महाराष्ट्र) से 'बाल गोपाल', 'बाल कल्याण', कानपुर से ' बाल ज्योति', जबलपुर से 'चंदा', नई दिल्ली से 'छौना', लखनऊ से 'घरौंदा', कलकत्ता से 'दूध बताशा' तथा जोधपुर से 'झरना' नामक बाल पत्रिकाओं का उल्लेख मिलता है । परन्तु इनका इतिहास अंधकार में है ।

15.5 बाल पत्रिका संपादन की अपेक्षाएं

बाल पत्रिकाओं के अतिरिक्त लगभग सभी हिन्दी दैनिक समाचारपत्रों में बाल स्तम्भों का होना इस बात का परिचायक है कि बच्चों में बाल साहित्य की रुचि और मांग बहुत बढ़ गई है या निरंतर बढ़ रही है । बच्चे आज पढ़ने के साथ-साथ बाल साहित्य-लेखन से भी जुड़ने लगे हैं । आज ऐसे अनेक प्रतिभाशाली बच्चे हैं जिनकी अनेक रचनाएँ दैनिक पत्रों के रविवारीय संस्करणों तथा बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है या हो रही है । कुछ बच्चों की रचनाएं पुस्तकाकार भी प्रकाशित हो चुके हैं।

बच्चों की प्रतिभा और उनकी रुचि को देखते हुए आज बाल पत्रपत्रिकाओं के संपादकों को ऐसा मार्ग अपनाना होगा जिससे बच्चों को अभिव्यक्ति का माध्यम मिले । बाल साहित्य बच्चों का अपना ही साहित्य होता है । बड़ों द्वारा उन्हें जो लिखकर दिया जाता है वह उपयोगी तो होता है परंतु अधिकांश में उन पर आरोपित होता है । इस दृष्टि से दैनिक समाचारपत्रों के बाल स्तम्भ तथा बाल पत्रिकाएँ बच्चों को चुनकर ऐसी सामग्री प्रदान करें जिनसे बच्चे आसानी से तादात्म्य स्थापित कर सकें ।

15.5.1 आयुवर्ग का निर्धारण

अत: बाल पत्रिकाओं का संपादन करते समय संपादक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है -

1. आयुवर्ग का निर्धारण

2. संशोधन उचित पर रचना की आत्मा सुरक्षित
3. नये रचनाकारों को प्रोत्साहन
4. रचना चयन की नीति

बाल पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण पहलू है- आयुवर्ग का निर्धारण । इस दृष्टि से बच्चों के लिए लिखे गए संपूर्ण साहित्य को तीन खंडों में विभाजित कर सकते हैं - शिशुवर्ग, बालवर्ग एवं किशोर वर्ग । संपादक की दृष्टि में पत्रिका के पाठकों का आयुवर्ग बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए क्योंकि शिशुओं के लिए लिखी गई रचना कभी भी किशोरों के लिए उपयोगी नहीं हो सकती है । इसी प्रकार किशोरों के लिए लिखी गई रचनाएं शिशुओं के गले के नीचे नहीं उतर सकती है ।

15.5.2 संशोधन उचित. रचना की आत्मा सुरक्षित

बच्चों के लिए निकलने वाली पत्रिकाओं में अधिकांश मासिक है । कुछ बाल पत्रिकाओं के संपादक एक बंधे -बंधाये साँचे में ही रचनाओं का चयन करते है । वे नई रचनाओं को उसकी स्वाभाविकता से स्वीकार नहीं करते । अगर वे नई रचनाओं में संशोधन कर उसे छापने का एहसान करते हैं तो रचना को तराशते-तराशते वे उसका मूल रूप ही अपने अनुसार बना डालते हैं । जबकि होना यह चाहिए कि संपादक रचनाओं में आवश्यक संशोधन एवं परिमार्जन करें, परंतु उसकी आत्मा के साथ खिलवाड़ न करें । उसकी आत्मा सुरक्षित रहनी ही चाहिए ।

15.5.3 नये रचनाकारों को प्रोत्साहन

बहु त से युवा लेखकों की यह शिकायत है कि संपादक केवल प्रतिष्ठित लेखकों की ही रचनाएँ प्रकाशित करते हैं । वे नये लेखकों की अच्छी से अच्छी रचनाओं को भी प्रकाशित करने की ओर ध्यान नहीं देते । लेखकों की यह भी शिकायत है कि बाल पत्रिकाओं के संपादक बाल साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं को अधिक महत्व देते हैं । कुछ लेखकों की यह भी धारणा है कि बाल पत्रिकाओं के संपादक पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण अपनाकर चलते हैं । कुछ गिने -चुने लेखकों का गुट बनाये रखते हैं तथा उन्हीं की रचनाएँ बार-बार छपती हैं जबकि अन्य लेखकों की रचनाएँ या तो सधन्यवाद वापस आ जाती हैं या कभी-कभी स्वीकृत होने के बाद भी लम्बी प्रतीक्षा के बाद प्रकाशित की जाती हैं ।

15.5.4 रचना चयन की नीति

बाल पत्रिकाओं के संपादकों की दृष्टि से देखा जाय तो उनके पास सैकड़ों नहीं तो पचासों रचनाएं प्रतिदिन डाक से प्रकाशनार्थ पहुंचती हैं । वे उन सबको तो प्रकाशित नहीं कर सकते पर यदि वह अपने संपादकीय उत्तरदायित्व का सच्चाई और ईमानदारी से निर्वाह करते हु ये रचनाओं के चयन के सम्बन्ध में कुछ ऐसी नीतियाँ निर्धारित करें, जिनसे वह बच्चों को स्तरीय और श्रेष्ठतम रचनाएँ ही दे सकें तो लेखकों की उपर्युक्त शिकायतों का बहु त कुछ निराकरण हो सकता है । किसी भी प्रकार केपक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण को छोड़कर केवल बच्चों की दृष्टि से ही बाल साहित्य की रचनाओं को देखें, तभी वह सफल संपादक बन सकते हैं । इसके लिए संपादकों में बच्चों के स्वभाव और उनकी रुचियों को अच्छी तरह से. समझने की क्षमता होनी चाहिए और सुरुचिपूर्ण बाल साहित्य के विकास के प्रति निष्ठा और लगन भी तभी बाल पत्रकारिता का विकास संभव है ।

15.6 सारांश

भारतेन्दु युग से लेकर अब तक की बाल पत्रकारिता के अध्ययन- विश्लेषण के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रारंभ में बाल पत्रकारिता की स्थिति विशेष अच्छी नहीं रही । जब हिन्दी में बाल साहित्य को ही हेय दृष्टि से देखा जाता है तो बाल पत्रकारिता की स्थिति कैसे अच्छी हो सकती है । भारतेन्दु युग में बाल पत्रकारिता की शुरूआत मात्र हुई थी इसका विकास तो वास्तव में द्विवेदी युग में हुआ और आगे छायावाद युग में यह अपने उत्कर्ष पर थी ।

द्विवेदी युग में बहुत सी बाल पत्रिकाएँ प्रकाश में आई परंतु वे सब की सब चिरस्थायी न रह सकीं । उनमें से कुछ तो साल दो साल चली परंतु कुछ अपने शैशवकाल में ही काल कवलित हो गईं द्विवेदी युग की केवल 'बाल सखा' ही ऐसी अकेली बाल पत्रिका रही जिसने अपने जीवन के तिरेपन बसंत देख । यही स्थिति स्वतन्त्रता पूर्व तक के बाल पत्रकारिता की रही स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई ऐसी बाल पत्रिकाएँ उभरकर सामने आई जिनका अपना स्थायी महत्व है । ऐसी बाल पत्रिकाओं में 'नंदन', 'बालभारती' 'पराग' आदि के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है इन पत्रिकाओं के माध्यम से ढेर सारा बाल साहित्य छपकर प्रकाश में आया है

सन् 1960 के बाद तो बाल पत्रिकाओं की धूम मच गई अनेक प्रसिद्ध व्यावसायिक संस्थानों के अतिरिक्त लोगों ने व्यक्तिगत स्तर पर भी बाल पत्रिकाएँ निकालने का प्रयास किया और वे काफी हद तक अपने उद्देश्य में सफल भी रहे सन् 1960 के बाद निकलने वाली बहुत सी बाल पत्रिकाएँ आज भी जीवित हैं और रचनाओं के माध्यम से बाल साहित्य के भंडार को भरने में संलग्न है ।

15.7 कुछ सुझाव

1. आज इस बात पर चिन्ता व्यक्त की जानी चाहिए कि बाल पत्रिकाएँ लम्बे समय तक क्यों नहीं निकल पाती हैं?
2. बाल पत्रिकाएँ बड़े पुस्तकालयों में संजोकर रखी हुई कम ही मिल पाती हैं । ऐसी दशा में बच्चों के लिए अलग से जगह-जगह बाल पुस्तकालय होने चाहिए तथा उसमें नियमित समकालीन-बाल पत्रिकाएँ मँगवाई जाएं ताकि बच्चे तथा शोधार्थी समय-समय पर लाभ उठा सकें ।
3. बाल पत्रिकाएँ को स्थायित्व प्रदान करने के लिए सरकार को खरीद योजना प्रारंभ करनी चाहिए जिससे दम तोड़ रही बाल पत्रिकाएँ आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो सकें ।
4. किसी बाल पत्रिका की योग्यता और प्रसिद्धि उसके संपादक की योग्यता, प्रतिभा और क्षमता पर निर्भर करती हैं । बाल पत्रिका के संपादक को कुशल बाल साहित्य लेखक तथा बाल मनोविज्ञान का ज्ञाता होना चाहिए । अन्य पत्रों की संपादन कला तथा बाल पत्र- पत्रिकाओं की संपादन कला में बहुत अन्तर है । बच्चों की दुनिया बड़ों की दुनिया से सर्वथा भिन्न होती हैं । बच्चों की इस भिन्न दुनिया को सही मार्ग दिखलाने का कार्य बाल पत्रिकाएँ ही करती हैं । इसलिए उन्हें शत प्रतिशत बच्चों के अनुरूप ही होना चाहिए ।
5. बाल पत्रिकाएँ बच्चों से सीधे जुड़ती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि उनकी भाषा बालोपयोगी और बाल मनोविज्ञान के अनुकूल हो । बोझिल भाषा या थोपी गई शब्दावली तथा जबर्दस्ती दिए गए उपदेश को नकारने में बच्चे कतई नहीं हिचकते हैं । यदि बाल पत्रिकाओं की भाषा

कठिन हुई तो बच्चा इस पत्रिका में प्रकाशित संपूर्ण साम्रगी को सहज ही नकार देता है। संभवत: इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि बाल साहित्य लिखना बहुत कठिन काम है ।

6. बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं की विषय वस्तु सर्वथा बच्चों के अनुकूल होनी चाहिए। आज का बालक यथार्थ की दुनिया में सास ले रहा है अत: उसे यथार्थवादी रचनाएँ ही दी जानी चाहिए । मात्र आदर्श की घुट्टी पिलाना एवं हवाई कल्पना के महल बनाना बाल पत्रिकाओं का उद्देश्य नहीं होना चाहिए ।
7. बाल पत्रिकाओं में भरपूर, रोचक, नयनाभिराम तथा बालोपयोगी चित्र होने चाहिए । चित्र अधिक से अधिक दुरंगे-तिरंगे और आकर्षक होने चाहिए तथा उनमें रंगों का चयन समझ बूझकर किया गया हो । बच्चों के लिए अधिक भड़कीले चित्र नहीं होने चाहिए ।
8. बाल पत्रिकाओं में मजबूती एव टिकाऊपन का होना अति आवश्यक है । बच्चे तो स्वभावत: चंचल होते हैं । वे कभी-कभी पढ़ते-पढ़ते पत्रिका को खिलौना समझकर उसी से खेलने लगते हैं और कभी-कभी उसी पर सो जाते हैं । ऐसी स्थिति में पत्रिका अगर मजबूत और टिकाऊ नहीं हुई तो शीघ्र ही नष्ट हो जायेगी ।
9. हर रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से कुछ न कुछ संदेश देना चाहता है, परंतु बालोपयोगी रचनाओं में संदेश इस तरह दिया जाना चाहिए कि वह बच्चों को पता भी न चल सके और वे उसे आसानी से ग्रहण भी कर लें।
10. आज युग की मांग है कि गाँव के बच्चों के लिए कुछ साहित्य लिखा जाय तथा उनके लिए विशेष रूप से बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाये । आज जो बाल साहित्य विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में छपकर आ रहा है, वह शत प्रतिशत नहीं तो अधिकांश शहर के बच्चों के लिए लिखा जा रहा है और शहर के ही बच्चे उसे पढ़ते भी हैं । जब गाँव के बच्चों को उद्देश्य बनाकर बाल साहित्य लिखा ही नहीं जाता तो उनके लिए अलग से पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने का प्रश्न ही नहीं उठता । यही कारण है कि आज पूरे बाल साहित्य जगत में ऐसी कोई पत्रिका नहीं है । जो गाँव के बच्चों के लिए छपती हो ।
11. बाल पत्रिकाओं का बढ़ता हुआ मूल्य आज की बाल पत्रकारिता के लिए अभिशाप है । हर अभिभावक मँहगी पत्रिकाएँ खरीदकर अपने बच्चों को नहीं दे सकता । ऐसी स्थिति में बाल पत्रिकाओं के मूल्य कम होने चाहिए ताकि बच्चे आसानी से खरीदकर पढ़ सकें ।

15.8 शब्दावली

बाल साहित्य : जो साहित्य बच्चों के मन और मनोभाव को परखकर उन्हीं की भाषा में उन्हीं के स्तर पर उतर कर लिखा जाता है, वह बाल साहित्य कहलाता है ।

बाल पत्रकारिता : बच्चों की पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्धित पत्रकारिता,

काल पत्रकारिता: असमय ही समाप्त हो जाना ।

नयनाभिराम :जो देखने में सुन्दर लगे ।

संकलन: अनेक ग्रंथों से अच्छे- अच्छे विषय या बातें चुनना ।

सर्वाधिकार सुरक्षित :किसी लेखक, कवि आदि की किसी रचना प्रतियाँ छापने का वह अधिकार जो कर्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता ।

आस्तित्व: किसी चीज की मौजूदगी ।

दीर्घजीवी :जो लम्बे समय तक जीवित रहे ।

मुख पृष्ठ :किसी पुस्तक या पत्रिका के आरम्भ में दिया हुआ चित्र

संपादकीय :किसी समाचारपत्र या पत्रिका का वह लेख जो किसी विशिष्ठ विषय पर संपादक द्वारा लिखा होता है ।

संभावना :जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन होता है ।

तादात्म्य: दो वस्तुओं के परस्पर अभिन्न होने का भाव या देख समझकर यह प्रमाणित करना कि यह वहीं है ।

थोपना : किसी के मत्थे मढ़ना ।

संपादक :किसी पुस्तक, समाचारपत्र या पत्रिका को सम्यक रूप से उपयुक्त बनाने वाला ।

समकालीन :जो (दो या अधिक में) एक ही समय में हुआ हो ।

हस्तलिखित : हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ आदि ।

प्रबंध संपादक :वह संपादक जो समाचारपत्र या पत्रिका के कार्यालय के संपादकीय विभाग का प्रबंध करता है ।

मनोविज्ञान :वह शास्त्र जिसमें चित्त की प्रवृत्तियों का तथा मन में उठने वाली भावनाओं आदि की मीमांसा हो ।

15.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम - हिन्दी बाल पत्रकारिता : उद्भव और विकास
2. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम - हिन्दी बाल साहित्य : विविध परिदृश्य
3. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे- हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन
4. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे संपादक-बाल साहित्य : रचना और समीक्षा
5. डॉ. वेदप्रताप वैदिक संपादक- हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम
6. अखिल विनय एंव चंचल संपादक- हिन्दी की पत्र- पत्रिकाएँ
7. डॉ. (श्रीमती) कुसुम अग्रवाल -बीसवीं शताब्दी : दो दशक (पत्र -पत्रिकाओं का अवदान)
8. डॉ. देवेन्द्र दत्त तिवारी-बाल साहित्य की मान्यताएँ एवं आदर्श
9. डॉ. रामचन्द्र तिवारी-स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी पत्रिकाओं का विकास

15.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. बाल पत्रिकारिता क्या है? साहित्यिक पत्रकारिता और बाल पत्रकारिता में अंतर स्पष्ट कीजिए?
2. बाल पत्रकारिता का उद्देश्य स्पष्ट करते हुये यह बताइये कि बाल पत्रकारिता अन्य पत्रकारिता से किस प्रकार भिन्न है?
3. बाल पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास लिखिए?
4. बाल पत्रकारिता के संपादक में किन-किन गुणों का होना आवश्यक है?
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त में अपने विचार व्यक्त कीजिए -

   (क) समकालीन बाल पत्रिकाएँ : एक विवेचन

   (ख) बच्चों की ऐतिहासिक पत्रिका 'बाल सखा'

(ग) साठोत्तरी बाल पत्रकारिता

(घ) बाल पत्रिकाओं के संपादन में ध्यान रखने योग्य बातें ।

(ङ) हस्तलिखित बाल पत्रिकाएँ

इकाई 16 विशेष विषय पत्रिकाएँ

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 विशेष विषय पत्रिका का स्वरूप और अवधारणा

16.3 विशेष विषय पत्रिकाएँ

16.3.1 उद्‌योग वाणिज्य पत्रिकाएँ

16.3.2 कृषि पत्रिकाएं

16.3.3 खेल पत्रिकाएं

16.3.4 धार्मिक और आध्यात्मिक पत्रिकाएँ

16.3.5 फिल्म पत्रिकाएँ

16.3.6 बाल पत्रिकाएँ

16.3.7 ब्रेल पत्रिकाएँ

16.3.8 महिला पत्रिकाएँ

16.3.9 मीडिया पत्रिकाएं

16.3.10 राजनैतिक पत्रिकाएँ

16.3.11 विज्ञान पत्रिकाएँ

16.3.12 सर्वोदय-पत्रिकाएँ

16.3.13 साहित्यिक पत्रिकाएँ

16.3.14 स्वास्थ्य पत्रिकाएँ

16.3.15 हास्य-व्यंग्य पत्रिकाएँ

16.316 अन्य विषयक पत्रिकाएँ

16.4 पत्रिका की तैयारी और प्रस्तुतीकरण

16.4.1 सामग्री-संकलन

16.4.2 मुद्रण

16.4.3 प्रकाशन और वितरण

16.4.4 ध्यान रखने योग्य बातें

16.5 सारांश

16.6 शब्दावली

16.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.8 निबंधात्मक प्रश्न

16.0 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप -

- विशेष विषय पत्रिका के स्वरूप और उसकी अवधारणा के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विशेष विषय पत्रिकाओं के प्रकार और उनके विकास क्रम को समझ सकेंगे ।
- विभिन्न विशेष विषय पत्रिकाओं का पारस्परिक अन्तर को जान सकेंगे । सामान्य पत्रिका से इसके अन्तर को भी समझ सकेंगे ।
- विशेष विषय पत्रिका की तैयारी और उसके प्रस्तुतीकरण के विषय में अपेक्षित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- विशेष विषय पत्रिका में कार्य करने अथवा उसे निकालने में समर्थ हो सकेंगे ।

16.1 प्रस्तावना

जब पत्रकारिता की शुरुआत हुई तो आरंभ में एक ही पत्रिका में विविध विषयक सामग्री का समावेश किया जाता था । अब भी ऐसी बहुतसी पत्रिकाएं निकलती हैं, जिनमें हर अंक में साहित्य, खेलकूद, विज्ञान, राजनीति, स्वास्थ्य, हास्य-व्यग्य, बाल स्तंभ, महिला स्तम्भ, फिल्म आदि विषयक मिली-जुली सामग्री मिल जाएगी । धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सरिता, नवनीत, कादंबिनी आदि इस प्रकार की अनेक पत्रिकाएं हैं । धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान पत्रिकाएं बन्द हो गई हैं । पहले भी सरस्वती, विशाल भारत, वीणा आदि पत्रिकाओं में विविध विषयक सामग्री निकलती थी । पुराने और वर्तमान समाचारपत्रों में तो आरंभ से ही विविधए विषयक सामग्री छपती रही है और अब भी छप रही हैं ।

एक ही पत्र अथवा पत्रिका में हर विषय की सामग्री ठूंस देने से विभिन्न विषयों की सामग्री के साथ न्याय नहीं हो पाता है, उन्हें पूर्ण और समुचित स्थान नहीं मिल पाता, इस बात को महसूस किया जाने लगा । इसका नतीजा यह निकला कि अलग- अलग विषय को लेकर स्वतंत्र पत्रिकाएं निकालने के विषय में सोचा जाने लगा । साहित्य, खेलकूद, फिल्म, जनसंचार, व्यापार- उद्योग, कृषि, धर्म-आध्यात्म, राजनीति, विज्ञान, सर्वोदय, स्वास्थ्य आदि विषयों को लेकर तथा बालोपयोगी, महिला पत्रिका आदि का स्वतंत्र रूप से प्रकाशन होने लगा । इसका एक लाभ यह हुआ कि जिसको जिस विषय में रुचि हो वह उसी विषय की पत्रिका को पढ़ सकता है, अपनी रुचि की पत्रिकाए लिख सकता है, उसमें कार्य कर सकता है । इस प्रकार का विशेषीकरण भारत में ही नहीं विदेशों में भी है । अब तो खेल विषयक एक पत्रिका में सारे खेलों की सामग्री न होकर अलग- अलग खेलों को लेकर भी स्वततंत्र पत्रिकाएं निकलने लगी हैं, जैसे क्रिकेट को लेकर ' क्रिकेट सम्राट' । साहित्य में भी कहानी, कविता, आलोचना, शोध, समीक्षा आदि विषयों की अलग- अलग पत्रिकाएं निकलती हैं ।

16.2 विशेष विषय पत्रिका का स्वरूप और अवधारणा

जैसा कि नाम से ही प्रकट है कि विशेष विषय पत्रिका किसी विशेष विषय को लेकर स्वतंत्र रूप से निकाली जाती है । यह विषय कुछ भी हो सकता है, जैसे कृषि, अध्यात्म, धर्म, खेलकूद, कहानी, कविता, आलोचना, पुस्तक समीक्षा, फिल्म, जनसंचार, तंत्र, ज्योतिष, विज्ञान, गांधीवाद, सर्वोदय,

स्वास्थ्य, व्यापार, उद्योग, राजनीति, शिशु, किशोर, महिलाएं आदि। किसी एक विषय को लेकर स्वतंत्र पत्रिका निकाली जाती है । उसी एक विषय के अंगों -उपागों को लेकर सामग्री प्रस्तुत की जाती है ।

किसी फिल्म पत्रिका में फिल्मों के निर्माण, प्रदर्शन, फिल्मी-संगठनों आदि के समाचार, फिल्मों की कहानियां, सीनरियो, समीक्षा, कलाकारों के जीवन और घटनाओं की जानकारी, फिल्मी-संगीत विषयक जानकारी विभिन्न चित्र आदि सभी का समावेश होगा । फिल्मी व्यक्तियों के साक्षात्कार भी होंगे । इसी प्रकार खेल सम्बन्धी पत्रिका में विभिन्न खेल-समाचार, खेलों की तकनीक, खिलाड़ियों के परिचय और साक्षात्कार, संस्मरण, आलोचना, खेलकूद विषयक पुस्तकों की समीक्षा, विदेशी सामग्री के अनुवाद सभी का समावेश होगा ।

16.3 विशेष विषयपत्रिकाएं

16.3.1 उद्योग-वाणिज्य पत्रिकाएं

भारत में पहली वाणिज्य-पत्रिका 'कैपिटल' शीर्षक से सन् 1886 में कलकत्ता से निकली थी । यहीं से 1910 में 'कॉमर्स' का प्रकाशन हुआ । बाद में यह पत्रिका मुम्बई से निकलने लगी । सन् 1928 में कलकत्ता से 'इण्डियन फाइनेंस' तथा ' 1943 में दिल्ली से 'ईस्टर्न इकानामिस्ट' इण्डियन फाइनेंस' तथा 1943 में दिल्ली से 'आर्थिक समीक्षा', 1952 में मासिक 'संपदा' (कृष्णचन्द विद्यालंकार) निकलीं । 1953 में भारत सरकार ने पाक्षिक 'व्यापार उद्योग पत्रिका' का दिल्ली सें प्रकाशन किया । 1955 में कानपुर से 'उद्योग विकास' निकली । सन् 1968 में एल. एल. आच्छा के संपादन में दिल्ली से 'आर्थिक चेतना' का प्रकाशन हुआ । जिसके अनेक विशेषांक चर्चित रहे ।

उद्योग-वाणिज्य सम्बन्धी प्रमुख पत्रिकाएं हैं - दैनिक अकोला बाजार समाचार, अर्हत व्यापार पत्रिका (दिल्ली), पाक्षिक आन्ध्र समाचार (रा.मू.अन्ने), आर्थिक जगत (कलकत्ता), आर्थिकी (काशी विद्यापीठ), इण्डस्ट्रियल गजट (कलकत्ता), इकानामिक टाइम्स, मासिक 'उद्यम' (नागपुर वि.ना. वाडेगांवकर), उद्योग भारती (कलकत्ता), 'खादी ग्रामोद्योग' मासिक (खादी ग्रामोद्योग कमीशन), जन उद्योग (दिल्ली, शशिभूषण व प्रेमनाथ प्रेम), पाक्षिक 'जागृति'। टैक्सटाइल्स न्यूज (मुम्बई), प्रत्यक्ष कर (कलकत्ता), फाइनेंशियल एक्सप्रेस, मारवाड़ी, डेली काटन मार्केट रिपोर्ट, मार्केट सर्किल (दिल्ली), धंधाबाड़ी (जयपुर), नफा-नुकसान (जयपुर), योजना (योजना आयोग, दिल्ली), राजस्थान लघु उद्योग (जयपुर), साप्ताहिक 'रिसाला व्यापार' (दिल्ली, बनारसीदास सेठी), दैनिक व्यापार भारती (दिल्ली), श्री सुभाष । दैनिक व्यापार पत्रिका आदि। 1949 में गुजराती में मासिक 'व्यापार' का प्रकाशन शुरू हुआ था ।

16.3.2 कृषि पत्रिकाएं

सन् 1743 में पेरिस (फ्रांस) से 'पेरिस किसानी गजट' प्रकाशित हुआ था जो संभवतः विश्व की प्रथम कृषि-पत्रिका थी। भारत में पहली कृषि-पत्रिका 1914 में आगरा से बंशीधर तिवारी के संपादन में 'कृषि सुधार' शीर्षक से निकली । यहीं से 1918 में 'कृषि' का प्रकाशन हुआ । सन् 1934-35 में बंगला में कई कृषि-पत्र निकले । मराठी में 'शेतकरी' का प्रकाशन हुआ। सन् 1940 में अंग्रेजी में 'फार्मर',

'एग्रीकल्चर गजट' और 'फार्म जर्नल' निकले । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (दिल्ली) ने 1946 में 'खेती' तथा 1950 में 'कुरुक्षेत्र' का प्रकाशन किया । प्रथम पत्रिका खेती के संपादक रमेशदत्त शर्मा, डा. रामगोपाल चतुर्वेदी तथा दूसरी पत्रिका संपादक के एम. पी. सिंह रहे । मानकचन्द्र बौंद्रिया ने 1946 में नागपुर से 'कृषक जगत' का संपादन - प्रकाशन किया, जो बाद में भोपाल से निकलने लगा ।

कृषि-विषयक अन्य प्रमुख पत्रिकाएं हैं- अपना पत्र (डी. के. व्यास), आज की खेती (चन्द्रमोहन), आधुनिक कृषि, उजाला (लखनऊ, ई. सी. शॉ), उन्नत खेती (पुराना नाम 'धरती के लाल), किसान, किसान भारती, किसान सन्देश (कोटा), किसानी समाचार (भोपाल, डी. डी. गुप्ता), किसानोत्थान (लखनऊ, छोटेलाल, उ प्र. सहकारी संघ), 'कृषक समाचार' मासिक (दिल्ली, भारत कृषक समाज), पाक्षिक कृषि प्रगति (कानपुर, महेश तिवारी), 'कृषि व पशुपालन मासिक (कृषि विभाग, उ प्र.), कृषि चयनिका, कृषिलोक (जोधपुर, श्रीपालसिह), कृषि विकास (जयपुर, अयोध्या प्रसाद शर्मा), कृषक समाज (दिल्ली), गाँव (बिहार राज्य सहकारी संघ पटना), मासिक गोसंवर्धन (दिल्ली, भगवत प्रसाद चतुर्वेदी, कृषि मंत्रालय), ग्रामभूमि (इलाहाबाद, चन्द्रभानुसिंह), घरनी, राजस्थान विकास (राजस्थान सरकार, जयपुर), पशु पालन, 'विश्व उपज, समयकोण (जयपुर सी. एल. माथुर), साक्षी (राजनीतिक पत्र से कृषि-पत्र बना), हरियाणा खेती (के. मेहता) आदि ।

16.3.3 खेल पत्रिकाएं

हिन्दी में खेल रपट छापने का काम देर से शुरु हुआ । सन् 1951 में दिल्ली में एशियाई खेल होने पर अखबारों में खेल समाचार छपने शुरू हुए । ठीक तरह यह शुरूआत 1960 में हुई । सभी पत्र पत्रिकाओं में खेल-समाचार और अन्य सामग्री का प्रकाशन होने लगा । दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर भी ये समाचार नियमित रूप से आने लगे । मद्रास (अब चेन्नई) से अंग्रेजी में 'स्पोर्ट्स एण्ड पास्ट टाइम्स' पत्रिका निकलती थी, जो बन्द हो गई । सन् 1968 में खालिद अंसारी ने बंबई (मुम्बई) से 'स्पोर्ट्स वीक, पत्रिका अंग्रेजी में निकाली, जिसका हिन्दी संस्करण नवम्बर, 1971 में प्रकाशित किया । सन् 1972 में इन्दौर से 'खेलयुग' (सुशीलकुमार दोषी) के आठ-दस अंक ही निकल सके । मासिक खेल-खिलाड़ी (मनोहर सिन्हा), खेल समाचार (आगरा, राजीव सक्सैना), खेल-सम्राट, क्रिकेट सम्राट, भारतीय कुश्ती (इन्दौर, रतन पाटौदी) आदि खेल पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ । वस्तुत भारत में, विशेष रूप में हिन्दी में, खेल पत्रिकाओं की बड़ी कमी है ।

16.3.4 धार्मिक और आध्यामिक पत्रिकाएं

वैसे तो शुरू में निकले विभिन्न पत्र उदंत मार्तण्ड, भारत चित्र, उचित वक्ता सार सुधानिधि, नृसिंह, श्री वेंकटेश्वर समाचार, देवनागर आदि धार्मिक एव आध्यात्मिक सामग्री बहुतायत से प्रकाशित करते रहे । मध्य युग में भी ऐसा होता रहा । आज कल भी पत्रिकाएं इस प्रकार की सामग्री प्रकाशित करती रहती है । फिर भी ऐसा अनुभव किया जाता है कि धर्म और अध्यात्म विषयक स्वतंत्र पत्रिकाएं निकलनी चाहिए । फलत: सन् 1882 में काशी से अंबिकादत्त व्यास ने 'वैष्णव पत्रिका' का प्रकाशन किया और इसमें ठोस सामग्री दी । इसके बाद तो इस प्रकार की पत्रिकाओं का सिलसिला ही शुरु हो गया । सन् 1883 में नाथद्वारा से 'सद् धर्म स्मारक', 1884 में काशी से 'धर्मप्रचारक' (राधाकृष्ण दास),

1889 में धर्मसुधा वर्णन (कुलयशस्वी शास्त्री) तथा सूरत से 1899 साप्ताहिक - 'जैन मित्र' का प्रकाशन हुआ । इससे पूर्व 1895 में अजमेर से साप्ताहिक 'जैन गजट' निकला ।

बीसवीं सदी में इस प्रकार की प्रमुख पत्रिकाएँ हैं - ब्राह्मणसर्वस्व (1902, इटावा, भीमसैन शर्मा 1945 तक प्रकाशित), निगमागम चंद्रिका (1904, काशी भारत धर्म महामंडल, अमृतलाल चक्रवर्ती, फिर गोविन्द शास्त्री दुग्वेकर, इससे पूर्व यह पत्रिका विधु बाबू के संपादन में मेरठ से निकली थी), सनातनधर्म (1905, काशी), सनातनधर्म पताका मासिक (रामचंद्र शर्मा गौड़, मुरादाबाद, उन्नीसवीं शती के आरंभ से 1950 तक चली), श्री सनातनधर्म (1908, कलकत्ता, अंबिका प्रसाद वाजपेयी), जैन प्रकाश (1913, दिल्ली), वैदिक धर्म (1919, पारडी, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर), योग प्रभारक (1924 अभयानंद सरस्वती), योग रहस्य (1925, काशी, रामचन्द्र बलवन्त डोगेर), श्री कृष्ण संदेश (1926, लक्ष्मण नारायण गर्दे)।

पहली अगस्त 1926 में 'कल्याण' का प्रथमांक बम्बई से प्रकाशित हुआ । यहां से इसके बारह अंक और एक विशेषांक का प्रकाशन हुआ । फिर यह गीता प्रेस, गोरखपुर से निकलने लगी । इसके सूत्रधार हनुमानप्रसाद पोद्दार थे । यह उच्चस्तरीय, विशुद्ध धार्मिक-आध्या।हबक पत्रिका है । इसके विशेषांक अत्यन्त उल्लेखनीय होते हैं । इसकी प्रसार संख्या डेढ़ लाख से भी अधिक है । आजकल इसके संपादक स्वामी रामसुखदास हैं । फिर भक्ति (रेवाड़ी, 1926, कृष्णानंद भूमानद, 1940 तक निकली), सुदर्शन (1928, मेरठ, के. राम आचार्य, 20 वर्ष तक निकली), पंडित (1928, काशी, लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़), संकीर्तन (1932, मेरठ, स्वामी शिवानंद सरस्वती), सनातन धर्म

(1933, काशी, सीताराम चतुर्वेदी, अ भा. सनातनधर्म महासभा का मुखपत्र), सतयुग (1938, इलाहाबाद, सत्यभक्त), सन्मार्ग (1939, काशी, गंगाशरण मिश्र), अखंड ज्योति (1939, मथुरा, आचार्य श्री राम, गायत्री-परिवार की लोकप्रिय पत्रिका), प्रेम सन्देश (1941, वृन्दावन), मानसमाणि (समवन न. प्र., 1941), कर्मयोग (1946, आगरा, डा. हरिशंकर शर्मा), साधु (1946, ऋषिकेश, श्रीदत्त शर्मा), संतवाणी (1947, जयपुर, केशवदास शास्त्री) का प्रकाशन हुआ ।

आजादी के बाद भी इस प्रकार की पत्रिकाएं निरन्तर निकलती रहीं । कुछ प्रमुख नाम है - भक्तभारत (1948, वृन्दावन, रामदास शास्त्री), धर्मचर्चा (1949, श्री गंगानगर बिहारीलाल टांटिया), अहिंसावाणी (1950, एटा, महेन्द्र प्रचंडिया, राजकुमार शास्त्री), धर्मज्योति (1950, काशी, रामावतार पाण्डेय), गोकुल (जयपुर, धर्मेन्द्र), समन्वय साधनापथ (हरिद्वार, न्यायमित्र शर्मा), श्री शंकराचार्य संदेश (1951, प्रयाग), मानसहंस (1951, हाथरस, मानस शास्त्री), गीता संदेश (1956, ऋषिकेश, सोम प्रकाश शांडिल्य), अहिंसा (1956, जयपुर, इन्द्रलाल शास्त्री), वजा वज्रांग (1956, विराटनगर, रामचन्द्र वीर), भैरवी, (1964, काशी, लीलानंद नाथ), शाश्वतवाणी (अशोक कौशिक), श्री कृष्ण संदेश (1965, मथुरा, सीताराम चतुर्वेदी आदि), अध्यात्म ज्योति (1966, कानपुर, गोकुल बिहारी वर्मा), धर्मदूत और 'सारनाथ' (भिक्षु धर्मरक्षित), क्रान्ति (दिल्ली, अल उलमाएं हिन्द)' मसीही आवाज (पटना, राबिन शॉ पुष्प), भागवत पत्रिका (मथुरा), योग वेदान्त (ऋषिकेश स्वामी चन्द्रशेखरानन्द), भगवत् दर्शन (1966, वृन्दावन, डा. रवीन्द्रप्रताप राव), सविता (अजमेर, स्वामी विद्यानन्द विदेह), विश्वज्योति (होशियारपुर,

विश्वबन्धु), हिन्दू विश्व (दिल्ली, नारायणराव तर्टे), अणुव्रत (दिल्ली, सत्यनारायण मिश्र), जिन वाणी (जयपुर संजीव भानावत) जैन भारती (कलकत्ता, बच्छराज संचेती)

16.3.5 फिल्म पत्रिकाएं

हमारे यहां फिल्म-पत्रिकाओं की कमी नहीं है । डा. धर्मेन्द्र गुप्त ने सन् 1936 में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक 'रंगभूमि' (लेखराम) को हिन्दी की पहली फिल्मी पत्रिका माना है । सन् 1936 तक तो यह सुचाक रूप से चली, फिर स्थगित हो गयी । सन् 1941 में यह धर्मपाल गुप्त के संपादन में पुन: निकली । इसमें फिल्म समाचार, निमाणाधीन फिल्मों का विवरण, फिल्मी लोगों के परिचय और साक्षात्कार, फिल्मी गीत, कहानियां, कविता, शेरोशायरी हुआ करती थी । डा. रामचन्द्र तिवारी के अनुसार हिन्दी की पहली फिल्म पत्रिका 'नव चित्रपट' थी जो 1932 में ही दिल्ली के साहित्यकार ऋषभचरण जैन ने निकाली थी । डॉ. राजकुमार जैन तो सन् 1931 में इन्दौर से प्रकाशित 'मंच' को यह श्रेय देते हैं । ऋषभशरण जैन ने 1936 में साप्ताहिक 'चित्रपट' का संपादन-प्रकाशन किया । जिसे अनेक प्रमुख साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त था । सन् 1946 में जयपुर से मासिक 'चांदनी' का प्रकाशन हुआ, जिसका संपादन नंदकिशोर पारीक ने किया । उस युग में अच्छी सामग्री, सुन्दर छपाई, नयनाभिराम चित्र इन पत्रिकाओं की विशेषता थी ।

आजादी के बाद फिल्मी-पत्रिकाओं की भरमार हो गई । इनमें से कुछ प्रमुख नाम हैं - सन् 1947 में युगछाया (संपतलाल पुरोहित), फिल्मचित्र (ब्रजमोहन), 1948 में चित्रलेखा (राजकेसरी), चित्रकार (दिल्ली), सरगम (ख्वाजा अहमद अब्बास) में एक भाग साहित्यिक और दूसरा फिल्मी होता था । सन् 1955 में चित्रभारती व सिनेचित्र (कलकत्ता), 1956 में सिनेवाणी (बंबई), 1957 फिल्मिस्तान (फिरोजपुर), फिल्मी दुनिया (दिल्ली, नरेन्द्र कुमार, प्रसारण संख्या एक लाख से अधिक), 1959 में फिल्म किरण (जबलपुर), चित्रावली (बम्बई), प्रीत (जोधपुर), 1960 में नीलम (दिल्ली), मधुबाला (दिल्ली), 1962 में मनोरंजन (दिल्ली), मूवीटोन (जयपुर, विजय नारायण शुक्ल), राधिका, 1963 में रसटराज (बंबई), पाक्षिक 'माधुरी' (बंबई, अरविंद कुमार, शुरू में उसका नाम 'सुचित्रा' था, उर्दू चित्रा का हिन्दी सस्करण भी निकला, 1964 में कजरा (कानपुर), फिल्म अप्सरा (दिल्ली), 1965 में फिल्मांजली, फिल्म रेखा, मेनका, 1967 में बबीता (दिल्ली), 1968 सिनेपोस्ट (दिल्ली), फिल्मी कलियां (दिल्ली), 1969 में अभिनेत्री (लुधियाना), फिल्म श्रृंगार (दिल्ली), फिल्मी परियां (लखनऊ), फिल्म संसार (मेरठ), फिल्म कमल (मेरठ),फिल्म अभिनेत्री (मेरठ), पूनम की रात (जबलपुर), चित्रीकरण (बंबई), 1971 में सने हलचल (दिल्ली), 1973 पालकी (दिल्ली, अनिल नरेन्द्र), 1975 में रजनीगंधा (बंबई), आसपास (दिल्ली), तथा दीपाली अभिनय (कलकत्ता), रूपवानी, चित्रप्रकाश, कौमुदी, उर्वशी (बम्बई), रूपम (लाहौर), कल्पना (दिल्ली, बच्चन श्रीवास्तव), सुषमा, शबनम (देवेन्द्र कुमार), अनुपम राज चौपड़ा, छायाकार, प्रिया आदि । उर्दू 'शमा' का हिन्दी संस्करण भी निकला । अंग्रेजी में लाहौर से फिल्म पिक्टोरियल, कलकत्ता से स्क्रीन, बंबई से फिल्म इण्डिया, फिल्म फेयर, टाकी हैराल्ड, स्क्रीन वर्ल्ड, स्टार डस्ट आदि ।

16.3.6 बाल पत्रिकाएं

हिन्दी में बाल-पत्रिकाएं समय-समय पर निकलती रही है । पहली बाल-पत्रिका 1882 में 'बाल दर्पण' निकली थी । भारतेन्दु-युगीन इस पत्रिका का ऐतिहासिक महत्व है । द्विवेदी युग में 1902 में इलाहाबाद से 'आर्य बाल हितैषी' का प्रकाशन हुआ । जनवरी, 1917 में प्रसिद्ध बाल-पत्रिका 'बालसखा' इलाहाबाद से निकली, जिसका बाल-पत्रिकारिता और बाल साहित्य-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है । यह पत्रिका 53 वर्ष तक रोचक सामग्री, रंगीन चित्रों के कारण यह खूब प्रचलित रही । अनेक वरिष्ठ साहित्यकार इसके संपादक रहे । इसमें रोचक कहानियों, कविताओं, लेखों, यात्रा- विवरणों, बाल-समाचारों, चित्रों का सुन्दर समावेश रहता था । सन् 1926 में रामलोचन शरण के संपादन में 'बालक' का जन्म पटना में हुआ । इसमें काल्पनिक, पौराणिक ऐतिहासिक कहानियों का विशेष रूप से प्रकाशन होता था । सन् 1927 में 'खिलौना' पत्रिका निकली । 1935 में उदयपुर से 'बाल हित' (जनार्दन राम नागरू' कालूलाल श्रीमाली) का प्रकाशन हुआ । जनवरी, 1946 में रतनलाल जोशी ने जयपुर से बालोपयोगी मासिक पत्रिका 'भाई-बहिन' निकाली, जिसके अनेक विशेषांक भी प्रकाशित हुए ।

आजादी के बाद बाल-पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई 'चुन्नू-मुन्नू (जयनाथ मिश्र) पटना से निकलती थी, जिसमें लोककथा, कविता, चुटकुले विशेष रहते थे । सन् 1960 में इसका उल्लेखनीय 'जीवजन्तु' विशेषांक निकला था । 'किशोर' (रामदहिन मिश्र) तीन दशक तक निकली । सन् 1958 मे चेन्नई (मद्रास) से 'चन्दामामा' (चक्रमाणि) का प्रकाशन बाल-पत्रकारिता में एक उल्लेखनीय घटना थी । इसमें धार्मिक, पौराणिक कहानियां विशेष रूप में छपती थी । सुन्दर चित्र होते थे । अब भी यह बाल-पत्रिका विशाल प्रसार संख्या के साथ अनेक भाषाओं में निकलती है । इसी तर्ज पर मद्रास से ही 1973 में 'गुड़िया' (विजया) निकली । सन् 1964 में भारतीय बालसाहित्य परिषद द्वारा मिलिन्द (रन्तप्रकाशशील) का प्रकाशन किया गया । इसमें पूर्व 1958 में टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रकाशन ने बंबई से सत्यकाम विद्यालंकार के संपादन में 'पराग' का प्रकाशन किया गया । फिर यह पत्रिका दिल्ली आ गई और आनंद प्रकाश जैन, कन्हैयालाल नन्दन आदि इसके संपादक रहे । दिल्ली से 'नन्दन' (राजेन्द्र अवस्थी) भी जोर-शोर से निकली । इसके सचित्र विशेषांक चर्चित रहे । बाद में इसके संपादक जयप्रकाश भारती हो गए । जयपुर से 'बालहंस; (अनंत कुशवाहा) की सचित्र पाक्षिक के रूप में प्रकाशित होता है । सन् 1968 में दिल्ली से प्रकाशित मासिक 'चंपक' (अब पाक्षिक, संपादक विश्वनाथ) में पशु-पक्षियों की कहानियां अधिक होती है । सन् 1955 में प्रकाशवती ने जयपुर से 'बालक' पत्रिका निकाली ।

सन् 1964 में शेरबच्चा (शंभुप्रसाद श्रीवास्तव) पत्रिका कलकत्ता से निकली बाद में इसका नाम 'शेरसखा' कर दिया गया। सन् 1968 में राजा भैया (दयाशंकर मिश्र दद्दा) और कहानियों को लेकर 1971 में 'बाल रंगभूमि' (धर्मपाल गुप्त) दिल्ली से निकली । पाक्षिक 'इन्द्रजाल कामिक्स' में चित्रकलाएं विशेष होती हैं । इलाहाबाद से प्रकाशित 'वानर' (रामनरेश त्रिपाठी) ने भी बाल-पत्रिका के रूप में ख्याति अर्जित की । इसी नाम की. पत्रिका जयपुर से ताराचंद वर्मा.और सुभाष वर्मा ने निकाली।

भोपाल से साप्ताहिक 'बच्चों की दुनिया' और इंदौर से 'बच्चों का अखबार' का प्रकाशन हुआ जो शीघ्र ही बन्द हो गए। इलाहाबाद से 'मनमोहन' (श्री नाथसिंह) नामक किशोरोपयोगी तथा छोटे बालकों

के लिए 'शिशु' सांभर से 'बच्चों की दुनिया' (बलदेव प्रसाद, जहूरबख्श) सुरुचिपूर्ण और पठनीय बाल-पत्रिकाएं निकली । भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने लोकप्रिय 'बालभारती' का प्रकाशन किया । सावित्री देवी वर्मा, द्रोणवीर कोहली, सूर्य नारायण सक्सैना आदि ने इसका संपादन किया। जयपुर से 'मुकुल' (रामेश्वर अशान्त), वाराणसी से 'जीवन शिक्षा' (तरुण भाई), जयपुर से वैज्ञानिक बालक (सूरजप्रकाश पापा), दिल्ली से 'सुमन सौरभ' (विश्वनाथ), इलाहाबाद से 'बालमित्र' (सी. आर. यादव, डा. पृथ्वीनाथ पाण्डेय) का प्रकाशन हुआ । डॉ. भैरूलाल गर्ग के संपादन में भीलवाड़ा से एक बाल-पत्रिका निकलती है । बालिकाओं की पत्रिका 'रानी बिटिया' का संपादन शंभुप्रसाद श्रीवास्तव करते हैं । पहले इसके संपादक शिवनारायण उपाध्याय थे । अनंत कुशवाह ' बालहंस' साप्ताहिक राजस्थान पत्रिका प्रकाशन और 'बालरंग' (दैनिक भाष्कर प्रकाशन) इस दिशा में भरपूर सहयोग दे रहे हैं । कुमार, चमाचम, ज्ञानदूत, चमकते सितारे, प्रदीप, बालदूत बाल प्रभात, बाल मानस, बाल वार्षिकी, बाल स्पूतनिक (रूसी दूतावास), तितली, स्वर्णकमल आदि भी उल्लेखनीय बाल-पत्रिकाएं हैं ।

16.3.7 ब्रेल पत्रिकाएं

ब्रेल-लिपि आविष्कार दृष्टिहीनों के लिए उन्नीसवीं शती के चौथे दशक में ब्रेल नामक व्यक्ति ने किया था । यह लिपि छह उभरे हुए बिन्दुओं से बनाई गई थी । इससे पूर्व बारबियर ने बारह उभरे बिन्दुओं तथा हावे ने उभरे अक्षरों का प्रयोग किया था । सन् 1951 में यह भारत में भी अपना ली गई । अनेक कठिनाइयों के बावजूद ठाकुर विश्वनारायण सिंह ने भारत में ब्रेल पत्रकारिता की शुरुआत की । सन् 1957 में उनके संपादन में हिन्दी ब्रेल लिपि में त्रैमासिक ' आलोक' नामक पहली पत्रिका निकली । इसमें लेख, कहानी, कविता, आदि को स्थान दिया गया । बाल लोक, नारी-जगत सामान्य ज्ञान जैसे स्तंभ भी रखे गए । साहित्य, ज्ञान-विज्ञान आदि से सम्बन्धित रचनाएं प्रकाशित होने लगी । 'नयी लेखनी' स्तंभ के अन्तर्गत दृष्टिहीनों द्वारा लिखित रचनाएं प्रकाशित होने लगी । अक्टूबर, 1968 में यह मासिक हो गई तथा इसका नाम 'नयनरश्मि' कर दिया गया । इसका बाल- स्तम्भ इतना लोकप्रिय हुआ कि मार्च ' 1971 से स्वतंत्र पत्रिका 'शिशु आलोक' का प्रकाशन शुरू कर दिया गया ।

16.3.8 महिला पत्रिकाएं

सन् 1918 में काशी से नारायण देवी 'और कालीप्रसाद शास्त्री के संपादन में ' आर्य महिला' का प्रकाशन शुरू हुआ । यह सामाजिक और धार्मिक पत्रिका थी । जनवरी 1926 में अजमेर से 'द वूमेंस गजट' (औरतों का गजट) निकला । यह महिलाओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने वाली पत्रिका थी । इसकी संपादिका मिसेज ' ओर' थी । इसमें तीन कालम होते थे । जिनमें हिन्दी उर्दू अंगेजी में सामग्री छपती थी । इसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती थीं और पुरस्कार भी दिये जाते थे । यह पत्रिका कई दशक तक निकलती रही । इसके पूर्व अप्रैल 1924 में इलाहाबाद से पाक्षिक 'मनोरमा' (सुचरिता मित्र) निकली जो महिलाओं के लिए संपूर्ण पत्रिका थी । अक्टूबर,1963 को विनोबा के आश्रम की बहिनों ने मिलकर 'मैत्री ' नामक पत्रिका निकाली, जिसका समस्त कार्य वे सब मिलजुल कर करती थीं । वर्मा के आश्रम से 'महिला आश्रम पत्रिका' निकलती थी।

इनके अलावा प्रमुख महिला-पत्रिकाएं हैं - माया (इलाहाबाद), वनिता, मेरी सहेली (हेमामालिनी) वामा (मृणाल पांडे) मीरा (जगदीश प्रसाद दीपक), गृहशोभा, गृहलक्ष्मी, मुक्ता, उषा, मानुषी पारिवारिका (1963 जयपुर, कमला जैन), नारी मंगल (1965, जयपुर, सुमित्रा मंडित), महिला टुडे (अलवर, मंजुलता खींची) आदि ।

16.3.9 मीडिया पत्रिकाएं

हमारे यहां मीडिया (जनसंचार माध्यम) पत्रिकाओं की कमी है । भारत सरकार द्वारा दिल्ली से ' आकाशवाणी' पत्रिका निकाली जाती है । ' अंतरर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार' पाक्षिक का प्रकाशन- संपादन अरुण कुमार अग्रवाल इलाहाबाद से करते हैं । सुलोचना जैन ने 1987 में जयपुर से पाक्षिक ' पत्रकार लोक' का प्रकाशन किया, जिसका संपादन डॉ. विष्णु पंकज और डा. रमेश जैन ने किया । बरेली से पत्रकारिता पर आधारित पत्रिका ' संवाद' (अब 'विविध संवाद', सुरेन्द्र बीनू सिन्हा) निकलती हैं । भोपाल से विजयदत्त श्रीधर 'आंचलिक पत्रकार' निकालते हैं । ' पत्रकार सुमन' का प्रकाशन प्रतापगढ़ (उ.प्र.) से होता है जिसका संपादन डॉ. शैलेन्द्री सिंह करते हैं । जयपुर से संजीव भावनावत 'क्यूनीकेशन टूड़े, (द्विभाषी) पत्रिका निकालते हैं । इस प्रकार की पत्रिकाओं की काफी आवश्यकता है ।

16.3.10 राजनीतिक पत्रिकाएं

अनेक विचारकों, राजनेताओं और राजनैतिक दलों द्वारा विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया है । इनमें कुछ प्रमुख नाम है- जन (डा. राममनोहर लोहिया), जनसेवक और सागर मंथन (लखीमपुर खीरी), नया भारत (लखनऊ), भारतवासी (बंबई), जनशक्ति (पटना), दैनिक जनयुग (दिल्ली) दैनिक युगधर्म (जबलपुर), दैनिक तरुण भारत (लखनऊ), दैनिक स्वदेश (इंदौर), प्रतिपक्ष (दिल्ली), जनक्रांति (लखनऊ), पांचजन्य (लखनऊ), कांग्रेस पत्रिका (दिल्ली), कांग्रेस पत्रिका (जयपुर), कांग्रेस सेवादल पत्रिका (बंबई), हरियाणा कांग्रेस पत्रिका (चंडीगढ़), रायबरेली कांग्रेस, कांग्रेसवाणी (इटावा), सोशलिस्ट भारत (दिल्ली), सोशलिस्ट पार्टी पत्रिका (दिल्ली), लोहिया पक्ष (दिल्ली), उत्तरार्द्ध वाम (मार्क्सवादी कम्यूनिष्ट पार्टी) पहल (सी. पी. आई.) (म.प्र. कांग्रेस पत्रिका, धौलपुर पत्रिका (धौलपुर), पाथेय (जयपुर) मरूचक्र (जयपुर), दल समाचार (दिल्ली), कम्यूनिष्ट संदेश (पटना), स्वाधीनता (कलकत्ता), चरैवेति (भोपाल), संघ सन्देश (पटना), जनसंघ गति विधि (दिल्ली), अकाली पत्रिका, हमारा निशाना (इटारसी) आदि ।

16.3.11 विज्ञान पत्रिकाएं

सन् 1905 में इलाहाबाद में विज्ञान परिषद की स्थापना हुई थी, जिसने ' विज्ञान' नामक मासिक पत्रिका शुरू की थी। शंकर मेहरा ने आगरा से आर. डी. विद्यार्थी के संपादन में 'विज्ञान लोक' निकाला । 1952 में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, दिल्ली द्वारा रामचन्द्र तिवारी के संपादन में मासिक 'विज्ञान प्रगति' का प्रकाशन किया गया । बाद में इसके संपादक श्यामसुन्दर शर्मा रहे । यह काफी लोकप्रिय हुआ । इसके अनेक उल्लेखनीय विशेषांक भी निकले । सन् 1960 में उदयपुर से डॉ. कुन्दन लाल कोठारी के संपादन में ' लोकविज्ञान' का प्रकाशन हुआ कुछ समय तक डॉ. बी. एन.

शर्मा और विजय कुलश्रेष्ठ इसके सम्पादक रहे सन् 1970 में यह बंद हो गयी । फिर आर. डी. विद्यार्थी के ही संपादन में 1962 में साइंस डाइजेस्ट ' विज्ञान जगत' निकला । इसके संपादक - मण्डल में श्रीनारायण चतुर्वेदी, रवीन्द्र प्रताप राव, सुरेश सिंह, डॉ. नवलबिहारी मिश्र थे ' । यह पत्रिका भी कुछ वर्ष तक ही चली । सन् 1969 में परमाणु वैज्ञानिकों से संबद्ध पत्रिका 'वैज्ञानिक ' बम्बई से निकली । अक्टूबर, 1975 में नैनीताल से साइंस डाइजेस्ट ' विज्ञान डाइजेस्ट' के नाम से प्रकाशित हुई । जयपुर से ' वैज्ञानिक बालक' (सूरज प्रकाश पापा) का प्रकाशन हुआ । दिल्ली से एक छोटी सुन्दर पत्रिका बदीउद्दीन खां व देवेन्द्र भटनागर के संपादन में ' आविष्कार' शीर्षक से निकली, जिसमें आविष्कारों के विषय में विशेष सामग्री रहती थी ।

16.3.12 सर्वोदय पत्रिकाएं

अनेक सर्वोदय पत्रिकाएं भी समय-समय पर निकलीं, इनमें गांधीवाद अंतर्निहित था । अगस्त, 1938 में सेवाग्राम आश्रम से मासिक ' सेवाग्राम' का प्रकाशन हुआ, जिसका संपादन काका कालेलकर आदि करते थे । यह पत्रिका 1942 तक निकली। कई वर्ष तक इसका प्रकाशन स्थगित रहा । 1949 - 55 के बीच इसका पुन: प्रकाशन हुआ । इसका संपादन विनोबा और दादा धर्माधिकारी करते थे । राममूर्ति के संपादन में साप्ताहिक ' भूदानयज्ञ' का प्रकाशन वाराणसी से हुआ । फिर इसका प्रकाशन दिल्ली से होने लगा । सस्ता साहित्य मंडल ने सन् 1940 में दिल्ली से हरिभाऊ उपाध्याय और यशपाल जैन के संपादन में मासिक 'जीवन साहित्य' का प्रकाशन शुरू किया । अपनी विचारपूर्ण सामग्री के कारण यह उच्चस्तरीय पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठित है । ' मंगलप्रभात' का प्रकाशन काका कालोलकर के संपादन में बर्मा से हुआ, जो फिर दिल्ली से निकलने लगा । बर्मा से निकलने वाली 'महिला आश्रम पत्रिका' आरंभ से स्त्री-शिक्षा में सम्बद्ध थी, जो बाद में संपूर्ण सर्वोदय पत्रिका बन गई । कस्तुरबा ट्रस्ट की ओर से ' कस्तुरबा दर्शन' का प्रकाशन किया गया । अक्टूबर, 1963 में

विनोबा के आश्रम की बहिनों ने 'मैत्री' नामक पत्रिका निकाली, जिसका समस्त कार्य वे मिलजुलकर करती थी । साप्ताहिक 'भूमि क्रान्ति' का प्रकाशन इन्दौर से हुआ । जिसका संपादन कार्य रामनाथ त्रिवेदी ने किया । 'ग्रामराज' (सिद्धराज ढड्डा, रामेश्वर विद्यार्थी) का प्रकाशन जयपुर से राजस्थान सर्व सेवा संघ ने किया । मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि ने 'शताब्दी सन्देश' निकाला और गांधी शांति प्रतिष्ठान ने बम्बई से हिन्दी अंग्रेजी में त्रैमासिक 'गाधीमार्ग' का प्रकाशन किया । 'गांधीमार्ग' का प्रकाशन बाद में दिल्ली से होने लगा । 'सेवाग्राम' पत्रिका ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन के संपादन में भी निकली।

16.3.13 साहित्यिक पत्रिकाएं

हमारे यहां साहित्यिक पत्रिकाएं बड़ी संख्याओं में निकली हैं । अधिकांश पत्रिकाएं धनाभाव, एवं आर्थिक कारणों से दीर्घजीवी नहीं रहीं । ज्ञानोदय, धर्मयुग, सुप्रभात, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, वामा, सारिका, दिनमान जैसी पत्रिकाएं भी बन्द कर दी गई, जिसमें साहित्य-जगत की बड़ी क्षति हुई है । इसके पीछे 'सेठिभाई सोच' है या 'व्यावसायिक कारण', पता नहीं ।

विधा-विशेष को लेकर बहुत्सी पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ और अब भी हो रहा है । कहानी विद्या से सम्बद्ध पत्रिकाएं-कथा, कथा कहानी, कथायान, कहानी, कथालोक, कहानी कार, आवेश (रमेश बक्षी), गल्पभारती, नीहारिका, नूतन कहानियां, नई कहानियां, मनोहर कहानियां, माया, सत्य कथाएं, सारिका आदि । कविता - नई कविता, कविता, कविताएं, अन्तराल, अनास्था, निष्कर्ष, हम, काव्य-दृष्टि आदि । शोध-समीक्षा- आलोचना (दिल्ली), समीक्षा (पटना, अब दिल्ली), प्रकर (दिल्ली, अब बंद), दृष्टिकोण (पटना), भाषा (दिल्ली), संबोधि (मगध वि.वि.), प्रज्ञा (काशी), विधा (दिल्ली), कालानिधि (काशी), जनभारती, (चंडीगढ़), चंडीगढ़ (चंडीगढ़), समीक्षा लोक (आगरा), हिन्दी अनुशीलन (इलाहबाद), वीणा इन्दौर, साहित्यसन्देश (आगरा), साहित्यालोचन (दिल्ली), अनुसंधान (बांदा), परंपरा (जोधपुर), गवेषणा (आगरा), अभिनव भारती (अलीगढ़), परिशोध (चंडीगड़), परिषद पत्रिका (पटना), भारतीय साहित्य (आगरा), मरूभारती (पिलानी), राजस्थान भारती (बीकानेर), लोकसाहित्य (जोधपुर), विश्वभारती पत्रिका (शांति निकेतन), शोध पत्रिका (उदयपुर), शोध भारती (ज्वालापुर), संभावना (कुरुक्षेत्र), सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग) आदि ।

कतिपय लघु एव भव्य पत्रिकाएं - अंकन (मद्रास), अर्थात्, आदमी, उत्कंठा, कंक, कखग, क्यों, क्षत्रज्ञ, (क्षेत्रज्ञ), कल्पना (हैदराबाद), नये पत्ते, नया पथ, नया साहित्य, निकेत, तेवर, मधुमाधवी (जयपुर), मधुमती (उदयपुर), प्रतीक, भंगिमा, पुरुष, पश्यंति, नया प्रतीक, बिन्दु, लोकसम्पर्क, शेफालिका (जयपुर), विचार, लहर (अजमेर, प्रकाश जैन मनमोहिनी), विहान, संधान (दिल्ली, डॉ. जीवन प्रकाश जोशी), संकेत, विश्वविलोक, सन्दर्श नवलगढ़, वातायन, सर्वनाम, संबोधन, सामयिक, संचेतना, हंस आदि ।

16.3.14 स्वास्थ्य पत्रिकाएं

कम सख्या में ही सही, हमारे यहां स्वास्थ्य संबंधी पत्रिकाएं भी निकलती हैं । सन् 1913 में गौरीलाल चानना के संपादन में 'आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन हुआ । विट्ठलदास मोदी का मासिक 'आरोग्य' (गोरखपुर) काफी लोकप्रिय है । यह कई दशक से निकल रहा है । डॉ. कौशलपति त्रिपाठी द्वारा संपादित 'आपका स्वास्थ्य' भी वाराणसी से कई दशक से प्रकाशित हो रहा है । विजयगढ़ का 'धन्वतरि' काफी प्रसिद्ध है । 'स्वास्थ्य और सौन्दर्य (योगेन्द्रनाथ मिश्र), प्राकृतिक और मनोचिकित्सा से सम्बद्ध पत्रिका है । वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन (पटना) का 'सचित्र आयुर्वेद' (श्रीकान्त शास्त्री) अत्यन्त लोकप्रिय पत्रिका है । प्राकृतिक जीवन (लखनऊ) भी प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बद्ध है । 'स्वस्थ जीवन' (देवेन्द्र कुमार गुप्त, बलरामसिंह), भी उल्लेखनीय पत्रिका है । शंभुनाथ मुकुल द्वारा संपादित 'आयुर्वेद विकास' भी पठनीय सामग्री प्रकाशित करती है । भारत सरकार के स्वास्थ्य एव परिवार कल्याण मंत्रालय से 'स्वास्थ्य' मासिक अच्छी पत्रिका है । विश्व स्वास्थ्य संगठन की पत्रिका 'वर्ल्ड हैल्थ' का हिन्दी संस्करण दिल्ली से कुछ समय तक निकला था । यूनेस्कोकी 'कुरियर' का हिन्दी-संस्करण नेशनल बुक ट्रस्ट (दिल्ली) ने निकाला था ।

16.3.15 हास्य-व्यंग्य पत्रिकाएं

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रिका 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' में हास्य-व्यंग्य साहित्य को पूरा स्थान दिया जाता था। इस पत्रिका का नाम बाद में 'हरिश्चन्द चंद्रिका' हो गया। वे हास्यरस पर एक स्वतंत्र पत्रिका निकालना चाहते थे। हिन्दी प्रदीप, ब्राहमण, भारतेन्दु, भारत-मित्र, हिन्दी बंगवासी, हिन्दू पंच, आर्यमित्र, प्रेमा, आज आदि सभी पत्रों में हास्यरस को काफी स्थान दिया जाता था। बंगला में हास्यरस की पत्रिका 'अवतार' निकलती थी। बाद के पत्रों ने भी हास्यरस को प्रमुख स्थान दिया। हिन्दी में भी हास्यरस की स्वतंत्र पत्रिकाओं की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी।

लखनऊ से हास्यरस का मासिक 'रसिक पंच' का प्रकाशन हुआ। अगस्त, 1923 में कलकत्ता से 'मतवाला' पत्रिका निकली। इसके संपादक सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, नवजादिकलाल श्रीवास्तव, शिवपूजन सहाय थे। यह हास्य-व्यंग की सम्पूर्ण पत्रिका थी। इसके चाबुक, मतवाला की बहक, चलती चक्की आदि उल्लेखनीय स्तम्भ थे। कलकत्ता से ही 'मौजी' और हरिद्वार से 'सरपंच' का प्रकाशन हुआ। जनवरी, 1937 में आगरा से केदारनाथ भट्ट के संपादन में हास्य- व्यंग्य की लोकप्रिय पत्रिका 'नोंकझोंक' निकली। यह तीन दशक तक निकलती रही। सन् 1948 में कानपुर से मासिक 'किसमिस' (वागीश शास्त्री) तथा 1949 में इन्दौर में साप्ताहिक 'हजामत' निकली। 'हजामत' शंकरर्स वीकली' की तरह की पत्रिका थी। सन् 1955 में शिवनन्दन सांस्कृत्यायन और सुरेन्द्र कौडिल्य के संपादन में मासिक 'चाणक्य' पुस्तिका रूप में निकली। इसके स्तंभ 'कौमुदी' महोत्सव' में व्यंग्यात्मक कविताएं, 'राक्षस मान-मर्दन' में सामयिक प्रसंगों पर कटु आलोचना, 'शकटार दर्प दलन' में साहित्यिक व्यंग्य तथा 'आकाशवाणी' स्तंभ में रेडियो सम्बन्धी व्यंग्य का प्रकाशन होता था। जनवरी, 1956 में दिल्ली से पाक्षिक 'हिन्दी पंच' का प्रकाशन हुआ। जिसके मुखपृष्ठ पर खद्दर की टोपी लगाए गणेशजी का व्यंग्य चित्र था। इसके स्तंभ पंचायत (समाचार), उल्टी-सीधी बातें (कविताएं), कसौटी (आलोचना), प्रपंचायत (चुटकुले), दिल्ली (राजनीतिक टिप्पणियां) रहते थे।

सन् 1964 में त्रैमासिक 'रंगचकल्लस', 1965 में पाक्षिक 'मसखरा' (इलाहबाद, सूरज कपूर), 1967 में मथुरा से 'जोकर' (नरेन्द्र, सत्येन्द्र चतुर्वेदी) का प्रकाशन हुआ। 'जोकर' के स्तंभ-चकल्लस, ब्रजभाषा हास्य-व्यंग्य, खट्टा-मीठा एवं चरपरा (सामयिक टिप्पणीयां), हास्य खंडहरों से (प्राचीन हास्य कृतियां), मथुरा तीन लोक से न्यारी, यह आकाशवाणी का हास्य केन्द्र है, पुस्तक-एक्सरे (समीक्षा) होते थे। सन् 1969 में इन्दौर से पाक्षिक 'व्यंग्य और व्यंग्य' निकला जो अल्पजीवी रहा। सन् 1970 में हिन्दी शंकर्स वीकली (रमेश बक्षी) कुछ दिनों ही निकल सका। यह मुख्यत: कार्टून पत्रिका थी। इसी प्रकार की एक कार्टून-पत्रिका बाद में 'कार्टून वाच, शीर्षक से त्र्यंबक शर्मा के संपादन में रायपुर से निकली। अगस्त 1970 में लक्ष्मीकांत जैन तरंगित के संपादन में मासिक पत्रिका 'चुलबुला' निकली, जिसमें चुटकुलों, कविताओं आदि का समावेश था। सन् 1975 में जबलपुर में मासिक 'पोपट' का प्रकाशन हुआ। पटना से ही त्रैमासिक 'व्यंग्य' निकली। सन् 1973 में त्रैमासिक 'अमीक' (डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी) सामने आई। दिल्ली से हास्य वार्षिकी 'हास्य और हास्य' (अर्जुन उपाध्याय) निकलती है। इसी प्रकार

एक उल्लेखनीय हास्य-वार्षियकी 'हास्य' (बम्बई से प्रकाशित) देखने में आई, जिसका संपादन खल उपाध्याय ने किया है । अंग्रेजी में 'शंकर्स वीकली' निकलता है ।

हास्य व्यंग्य की अन्य प्रमुख पत्रिकाएं हैं- साप्ताहिक ठिठोली (दिल्ली, श्यामसुन्दर गर्ग), साप्ताहिक लोटपोट (दिल्ली), मधुमुस्कान, दीवाना, मनोरंजक (दिल्ली,चिरंजीत) बनारस से पात्रिक तरंग, अजगर, पाक्षिक करेला, भूत, बैढब (बैढब बनारसी, गोविन्दप्रसाद केजरीवाल), मासिक 'खुदा की राह पर' का प्रकाशन हुआ । 'खुदा की राह पर' पत्रिका के मुखपृष्ठ पर व्यंग्यचित्र होता था । इसके स्तम्भ थे- खैराती खां की झोली से (टिप्पणियां), बनारसी बैठक (कविताएं), बिखरे हुए फूल (उर्दू कविताएं) उन सबमें हास्य रस की सामग्री रहती थी ।

'चकल्लस' लखनऊ से निकलन वाली प्रमुख हास्य साप्ताहिक पत्रिका थी । इसका संपादन अमृतलाल नागर और नरोराम नागर करते थे । इसके उल्लेखनीय स्तम्भ 'नवाबी मसनद'. 'गुस्ताखीनामा' और 'कुकडुकुं' थे । यह पत्रिका काफी चर्चित रही । एम. पी. श्रीवास्तव के संपादन में इलाहाबाद से 'मदारी' का प्रकाशन कई वर्ष तक होता रहा । इसके स्थायी स्तंभ 'मदारी का सोआ', 'वानर का नाच', 'घण्टाघर के कंगूरे से' और 'डमरू की डिमीडम' होते थे ।

16.3.16 अन्य विविध पत्रिकाएं

शिक्षा-क्षेत्र में जुड़ी अनेक पत्रिकाएं निकली । बेसिक शिक्षा, जीवन-शिक्षा, जयपुर से नई शिक्षा, बीकानेर से 'शिविरा', अजमेर से 'नया शिक्षक' और 'टीचर टुड़े' तथा अन्य स्थानों से भी शिक्षा सम्बन्धी पत्रिकाएं निकलती हैं । 'नयी तालीम' मार्च, 1943 में सेवाग्राम में आशादेवी आर्यनामकम् के संपादन में निकली थी । दिल्ली से 'प्रौढ़ शिक्षा ' विमला दत्ता के संपादन में निकली है । ग्रामीणों से सम्बद्ध पत्रिकाएं 'ग्रामीण दुनिया' (एमएम. गुप्ता, रति अग्रवाल), दिल्ली से तथा पाक्षिक 'ग्रामीण जनता' (नरेन्द्र गोयल) रुड़की से निकलती है । 'स्वराज्य सन्देश' भी राजनीतिक से ग्रामीण पत्र बन गया है । सन् 1935 में ग्राम उद्योग पत्रिका' (जे. सी. कुमारप्पा) मासिक रूप में शुरू हुई । यह बर्मा से निकलती थी और दिसम्बर 94 में बन्द हो गयी । 'खादी जगत' पहले प्रकाशित की जाने लगी । फिर वह खादी कमीशन द्वारा दिल्ली में प्रकाशित की जाने लगी । 'हमारा वतन' पाक्षिक भी सामान्य से खादी विषयक पत्र बन गया है । इसे राजेन्द्र कुमार अजेय निकालते हैं । 'खादी ग्रामोद्योग' पत्रिका भी पहले सेवाग्राम से निकलती थी, फिर खादी कमीशन की ओर से दिल्ली से निकलने लगी, मद्य निषेध (दिल्ली), कुष्ठ पत्रिका (बर्मा), कला प्रयोजन (पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र) मासिक 'वन्यजाति' (आदिम जाति संघ), आदर्श परिवार, समाज सेवा, भारतीय रेल, सैनिक समाचार, डाकतार, भागीरथी, विधि पत्रिका, समाज क्ल्याण, नटरंग, कंप्यूटर-पत्रिका, मा. संगीत (हाथरस लक्ष्मीनारायण शर्मा), ज्योतिष्मती (1956, सोलन, हरदेव शर्मा, अ भा. ज्योतिष परिषद), मिस्टिक इण्डिया (कलकत्ता, अंग्रेजी मासिक), रंगयोग (संगीत कल्प अकादमी जोधपुर) नरनारी (पटना, सैक्स पत्रिका), प्रतियोगिता-दर्पण, प्रतियोगिता-विकास आदि अपने-अपने क्षेत्रों की पत्रिकाएं निकलती हैं । अनेक व्यापारिक संस्थान अपनी पत्रिकाएं निकालते हैं । दिल्ली स्थित अनेक दूतावास भी पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं । अनेक प्रदेश भी अपनी पत्रिकाएं

निकालते हैं- उत्तर प्रदेश, बिहार समाचार, म. प्र. सन्देश, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा समाचार, हरियाणा संवाद, दिल्ली, दिल्ली पुलिस समाचार आदि ।

बोध प्रश्न -

1. विशेष विषय पत्रिका से आप क्या समझते हैं?
2. किन्हीं तीन विशेष पत्रिकाओं पर टिप्पणी लिखिए?
3. विशेष विषय पत्रिकाओं में से आप किस विषय की पत्रिकाएं पसंद करते हैं?
4. विशेष विषयक पत्रिका के स्वरूप और अवधारणा पर एक निबंध लिखिए ।
5. बाल-पत्रिका और महिला-पत्रिका की स्थितियों में क्या अन्तर होता है?
6. कृषि पत्रिकाओं पर एक आलोचनात्मक लेख लिखिए ।
7. 'साहित्यिक पत्रिकाओं का भविष्य क्या उज्जवत है' - समीक्षा कीजिए

16.4 पत्रिका की तैयारी और प्रस्तुतीकरण

विशेष विषय पत्रिका निकालने के लिए विधिवत् तैयारी करके उसका भली-भांति प्रस्तुतीकरण करना अपेक्षित होता है।

16.4.1 सामग्री-संकलन

जिस विषय की पत्रिका हो उस विषय की सामग्री संकलित करना पहला काम होता है । विभिन्न अखबारों, दूरदर्शन, आकाशवाणी से उस विषय से सम्बन्धित समाचार घटनाओं आदि का ब्यौरा इकट्ठा किया जाता है । अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से भी सामग्री संकलित की जाती है । विषय में रुचि रखने वाले और विशेषज्ञों से विशिष्ट सामग्री लिखाई जाती है । सामग्री को एकत्र करके उसका संपादन किया जाता है ।

16.4.2 मुद्रण

सामग्री संकलित हो जाने पर उसका मुद्रण कराया जाता है । आजकल प्रायः आफसैट -छपाई ही होती है । इसके लिए पहले कम्प्यूटर पर टाइप सैटिंग, डी.टी.पी. करानी होती है । फिर प्रेस में प्रिण्टिंग (मुद्रण) होती है यदि लैटर प्रेस में मुद्रण कार्य करना पड़े तो उस हिसाब से कार्य कराया जाता है ।

16.4.3 प्रकाशन और वितरण

पत्रिका का मुद्रण हो जाने पर प्रकाशन कार्य पूरा हो जाता है । इसके पश्चात् पत्रिका के वितरण का कार्य शुरू कर दिया जाता है । ग्राहकों को पत्रिका भेजी जाती है । निः शुल्क प्रतियों का भी प्रेषण किया जाता है ।

16.4.4 ध्यान रखने योग्य बातें

विशेष विषय पत्रिका तैयार करते समय और उसके मुद्रण, प्रकाशन, वितरण आदि के सम्बन्ध में कई बातों का ध्यान रखना चाहिए । यदि खेल सम्बन्धी पत्रिका है तो यह ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है कि हर अंक में खेलों से सम्बद्ध लेख, मैचों की समीक्षा, खिलाड़ियों के परिचय, साक्षात्कार, खेल संगठनों की गतिविधियों आदि कर समावेश होना चाहिए। विभिन्न स्तंभो के अन्तर्गत सामग्री

का समायोजन किया जाय । प्रूफ की त्रुटियां बिलकुल न रहें । चित्र साफ छपें । पेज की डमी बनाकर सामग्री सही और अच्छे ढंग से प्रस्तुति की जाय ।

16.5 सारांश

वैसे तो विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं दूरदर्शन और आकाशवाणी पर साहित्य (कहानी, कविता, नाटक, पुस्तक- समीक्षा साक्षात्कार आदि), खेलकूद धार्मिक आध्यात्मिक आर्थिक राजनीति हास्य-व्यंग्य कृषि बाल स्तंभ महिला स्तंभ विज्ञान स्वास्थ्य आदि में सम्बन्धित सामग्री प्रस्तुत की जाती है परन्तु वह पर्याप्त या संपूर्ण नहीं होने के कारण अलग-अलग विषयों पर स्वतंत्र पत्रिकाओं को निकालने की आवश्यकता पड़ती है फलत: विभिन्न विषयों को लेकर स्वतंत्र पत्रिकाएं निकाली जाती हैं । दूरदर्शन पर तो खेलकुद अध्यात्म विज्ञान फिल्म आदि को लेकर स्वतंत्र चैनल ही कार्य कर रहे हैं । इन पत्र-पत्रिकाओं को आर्थिक समस्याओं ग्राहकों और विज्ञापन की कमी स्टाफ की कमी आदि से जूझना पड़ता है । फिर भी विशेष विषयों की पत्रिकाओं का अपना विशिष्ट महत्व है 1

16.6 शब्दावली

विशेष विषयक पत्रिका - किसी एक विशेष विषय जैसे खेलकूद, धर्म । आध्यात्म, विज्ञान, फिल्म, कृषि या अन्य विषयों को लेकर निकाली गई पत्रिका ।

सामग्री संकलन-विभिन्न स्रोतों से विषय विशेष की सामग्री को जुटाना ।

पत्रिका वितरण-पत्रिका को क्रेताओं को बेचना, ग्राहकों को भेजना और लेखकों तथा विशिष्ट व्यक्तियों के पास नि: शुल्क भेजना ।

डमी बनाना- पत्रिका का पृष्ठ किस स्वरूप मे प्रस्तुत होगा, उसका प्रस्तावित प्रारूप बनाना ।

प्रूफ रीडिंग - प्रेस कंप्यूटर दारा कंपोज किए हु ए पृष्ठ की मात्राओं, चिहनों, मूलत: शब्दों आदि को ठीक करना ।

16.7 कुछ उपयागी पुस्तकें

- विषय विशेष से सम्बद्ध चयनित पुस्तकें
- विषय विशेष से सम्बद्ध अन्य पत्र / पत्रिकाओं के अंक
- अन्य विषयों की पत्रिकाओं आदि के अंक ।
- प्रेस रजिस्ट्रर की रिपोर्ट

16.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विशेष विषय पत्रिका से आप क्या समझते हैं?
2. दस ऐसे विषयों के नाम सुनाइए जिन पर स्वतंत्र पत्रिकाएं निकाली जा सकती है । इन विषयों की प्रचलित कुछ पत्रिकाओं कीं जानकारी भी दीजिए ।
3. कुछ विषयों की तो पर्याप्त पत्रिकाएं निकलती है, जबकि कुछ विषयों की बहु त कम पत्रिकाएं प्रचलन में है - इस कथन की तर्कपूर्ण व्याख्या कीजिए ।
4. विशेष विषय पत्रिका के लिए क्या तैयारी करनी होती है?
5. विशेष विषय पत्रिका के प्रस्तुतीकरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ।
6. किन्हीं तीन प्रमुख विशेष विषय पत्रिकाओं की विशद जानकारी दीजिए ।

7. पत्रिकाएं अल्पजीवी क्यों होती हैं? तर्कसहित बताइए ।
8. दूरदर्शन के खेलकूद-चैनल और वैज्ञानिक (डिस्कवरी या अन्य) चैनल पर टिप्पणी लिखिए ।

NOTES

NOTES

NOTES

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैधानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष